मध्याह्न का क्षितिज

जानकीप्रसाद बगरहट्टा

(स्वाधीनता सैनिक
[illegible] जे बगरहट्टा)

सम्पादन

गिरधारीलाल व्यास

मध्याह्न का क्षितिज जानकीप्रसाद बगरहट्टा
(स्वाधीनता सैनिक जे बगरहट्टा)

सम्पादक गिरधारीलाल व्यास

प्रकाशक हरप्रसाद बगरहट्टा
बगरहट्टा निवास'
6 औद्योगिक क्षेत्र रानी बाजार
बीकानेर 334001
फोन न 0151-2542390

सस्करण 2006 ई
आवरण मानवेन्द्र बगरहट्टा
मूल्य पैंतीस रुपये मात्र
मुद्रक साखला प्रिंटर्स विनायक शिखर
शिवबाड़ी रोड बीकानेर 334003

Rs 35/-

क्यो ?

मनोविज्ञानसम्मत सहज सवाल, करण-कारण की जिज्ञासा। किया जाता शुरू कुछ कहना कि यह तो बन गया सवालो का सवाल और कई उछल कर उभर गए ऐसे—कहाँ से कैसे उठी प्रेरणा? लेखन की भड़ास कि सम्बन्ध का निर्वाह लोभलाभ का वणिकत्व वाद खड़ा करने की आदत, तात्कालिक अनिवारता, प्रकाशकीय दबाव, क्षेत्रीयता का आग्रह नकारने-स्वीकारने की उलझन अथवा व्यस्तता द्वारा रिक्त-पूर्ति?

एक सवाल स्रोत का। सामग्री क्या है कहाँ है? सस्मरण हैं नही किसी के। मुद्रित इतिहास के तत्कालीन या समकालीन अध्याय मे कहीं कोई सन्दर्भ नहीं। अभिलेखागार का तो खुद का ही माजरा और है। पुरानी पत्र-पत्रिकाएँ तो रद्दी मे बिक जाती हैं। परिवार वालो ने रेकार्ड या फाइले पत्र या और कोई वस्तु बचाकर रखी नहीं। कहीं कुछ होगा तो जा-जा कर तलाश करने की क्षमता वाला स्वस्थ व्यक्ति उपलब्ध नही और बार-बार माँगने पर भी खुद आ कर देने वाला मिला नही। इस हालत म बयासी की उम्र की कलम कैसे सरपट हो कागज पर?

अब जो मिला वह था जे बगरहट्टा के बडे सुपुत्र श्री हरप्रसाद बगरहट्टा (पूर्व अध्यापक और वर्तमान मे मन्त्री, नागरी भण्डार बीकानेर) के द्वारा पेन्सिल से लिखा डेढ पेज का विवरण सुचर्चित कवि व साहित्य सृजक श्री भवानीशकर व्यास 'विनोद' का सेनानी' मे (1 अप्रैल, 1970) प्रकाशित पूरे 'कॉलम का 'बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति मे सस्था के स्वरूप—जे बगरहट्टा' शीर्षक लेख और स्वनामधन्य पर्यावरण चिन्तक सगठक और लेखक श्री उपध्यानचन्द कोचर का एक दैनिक पत्र मे प्रकाशित—'बहुमुखी प्रतिभा के धनी जानकीप्रसाद बगरहट्टा' शीर्षक निबन्ध।

इनके अलावा सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता-सग्राम सेनानी और वरिष्ठ कम्युनिस्ट नेता जी अधिकारी द्वारा सम्पादित व समीक्षित और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा प्रकाशित— Documents of the History of the Communist Party of India — Volumes one and two प्राप्त हुए। दस्तावेज का खण्ड-2 ही एकमात्र उपलब्ध स्रोत है जिसमे जे बगरहट्टा के

विषय मे उल्लेख प्राप्त होते है। इसी मे एम एन राय–बगरहट्टा का पत्राचार अकित है। किन्तु दस्तावेज का रुख सकारात्मक की बजाय नकारात्मक अधिक है जो स्वय ही अनेक प्रकार के सवाल खडे कर देता है।

बगरहट्टा द्वारा सम्पादित पत्र The New Leader' के जनवरी 1955 से प्रकाशित प्रथम अक से छठे अक तक को देखने का अवसर प्राप्त हुआ। गणराज्य' का हवाला तो मिला, पत्रिका की कोई प्रति नही। इसी तरह उनकी पुस्तक की कोई प्रति उपलब्ध नही हो सकी।

उपर्युक्त तथाकथित भडास' सम्बन्ध निर्वाह वणिकत्व' वाद तात्कालिक अनिवारता' प्रकाशकीय दबाव, क्षेत्रीयता का आग्रह नकारने–स्वीकारने की उलझन अथवा रिक्ततापूर्ति' की शकाओ आशकाओ सभाव्य आरोप–प्रत्यारोपो को दृढतापूर्वक खारिज किया जाता है। जवाब अपेक्षित है प्रेरणा का।

न किसी ने कुछ कहा, न किसी ओर से कोई चमक दिखाई दी न कोई पूर्व–निर्धारित योजना थी। बडे–से रजिस्टर मे लिखना किसी अन्य विषय पर शुरू किया था। सिर्फ चार पेज ही लिखे थे कि अकस्मात् एक स्वत –स्फूर्त प्रेरणा उत्पन्न हुई कि क्यो न किसी हाशिये की शख्सियत पर कुछ लिखा जाय। केवल इसी वजह से यह चुनाव सम्भव हुआ।

इस विषय मे सामग्री तलाश करने मे कई सन्दर्भ पुस्तके टटोली परिवार वालो और रिश्तेदारो से सम्पर्क किया लेकिन नहीं के बराबर सफलता मिली। निराशा मे एक बार तो यह विचार ही छोड देना पडा। कुछ समय आलस और निराशा मे फिर बीता किन्तु इच्छा मरी नहीं, बार–बार कुरेदने लगी। फिर ढूँढते–ढूँढते दस्तावेज के दो वोल्यूम हाथ लगे जिनमे दो पत्रो की प्रतिलिपियाँ प्रकाशित मिली साथ ही कुछ नकारात्मक पहलू भी। उनको बार–बार पढा और तब उनकी असलियत तक पहुँचा जा सका। इसके बाद जो लिखा जा सका जैसा भी लिखा जा सका वह इस रूप मे सबके सामने है।

लेकिन बगरहट्टा के विषय मे बहुत कम छानबीन हुई है। इसके लिए कोई कहीं से पूरी सामग्री खोज निकालेगा जिसे लोग दबाए बैठे हैं तो उनके रहस्यपूर्ण व्यक्तित्व का विस्तारपूर्वक खुलासा किया जा सकेगा। उस स्थिति मे ये पक्तियाँ भी उन स्रोत–सामग्रियो मे मददगार बन जायेंगी। अभी तक यहाँ जो कुछ कहा गया है वह एक भूली हुई याद को एक बार

फिर ताजा करना है---एक राष्ट्रीय स्तर के नेता को स्मृतिपटल पर पुन रेखाकित कर सफाई के साथ पेश करना है। जिस कालाश मे जे बगरहट्टा उत्तुग शिखर पर पहुँचे हैं वह भारतीय इतिहास का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण क्षण है एक युगान्तरकारी अनुच्छेद है स्वाधीनता सघर्ष के नए आयाम का प्रस्थान बिन्दु है, सघर्ष (कानपुर बोल्शेविक षड्यन्त्र केस) से प्रस्फुटित इस्क्रा (चिनगारी) है। इसकी उपेक्षा करना राष्ट्रीय अपराध होगा।

जब यह समझ गहरी होती गई तो बगरहट्टा का परिचय देना लाजिमी हो गया। कम हो अधूरा हो अपेक्षा से अपूर्ण हो अभिव्यक्ति की उतनी प्रभावोत्पादकता न हो---फिर भी यह कैसे सही हो सकता कि विषय के प्रतिपादन मे अपनी सीमित क्षमता को न अपनाया जाय। शुरुआत मे जो कमी-बेसी होगी उसको सुधारने की प्ररणा लेकर लोग आगे आएँगे ही। और कुछ नही होगा तो कम-से-कम इसकी आलाचना करन या और नहीं तो लेखक को गालियाँ निकालने वाले तो सामने आएँगे ही। यही काफी होगा।

जे बगरहट्टा का सारा राजनीतिक जीवन बाहरी और भीतरी द्वन्द्वो मे से होकर गुजरता है। यह द्वन्द्व उन्हीं का नही, सारी भारतीय राजनीति का, बल्कि प्रत्यक राष्ट्र की---समूचे विश्व की राजनीति का रहा है। इसे चाहे तो त्रिकोणात्मक कह सकते हैं अथवा मोटे तौर पर द्विध्रुवात्मक। एक ओर सत्ता के साथ समझौतावादी सौदेबाजी मौकापरस्ती और वर्गीय हितवाद की राजनीति है तो दूसरी ओर गैर-समझौतावादी गैर-मौकापरस्ती और शोषण-समाप्तिवाद की राजनीति जिसे दक्षिणपन्थी, अवसरवादी बनाम उग्रवादी और वामपन्थी ध्रुवीकरण की द्वन्द्वात्मक राजनीति के रूप मे भी कहा जा सकता है। भारत के स्वतन्त्रता सग्राम मे राजनीति की तीन धाराएँ प्रचलित रही---भूमिगत क्रान्तिकारी धारा गाँधीवादी और साम्यवादी। काग्रेस तीनो धाराओ की कशमकश का लेकर कुछ दूर चली फिर सबसे पहले क्रान्तिकारियो के दल, बावजूद अपने अमर और नि स्वार्थ बलिदानो के, टूट-बिखर गए और उनके बचे-खुचे नेता और सदस्य वाम और दक्षिण खेमो मे जा मिले। वाम और दक्षिण खेमो के अन्दर भी उदारवादी और उग्रवादी धडे थे। काग्रेस मे लाल-बाल-पाल का त्रिक और गोखले-गाँधी का समर्थक दल---उग्र और उदार के रूप मे पहचाने जाने लगे। क्रान्तिकारी और साम्यवादी काग्रेस के उग्र पन्थ के घटक थे। जे बगरहट्टा लाला लाजपतराय और अर्जुनलाल सेठी के साथ होने के कारण उग्रवादिया मे शामिल किए गए थे।

गाँधीवाद की समझौतावादी नीति अधिकाधिक सस्ती लोकप्रियता की

शिकार हो गई किन्तु इसी सस्ती लोकप्रियता का हथियार इस्तेमाल कर उसने समझौताविहीन उग्रवादी नेताओ के बलिदानो तक को पीछे धकेल कर उन्हे हाशिये मे धकेल दिया। अर्जुनलाल सेठी और विजयसिह पथिक जैसो को गाँधीवादियो ने षड्यन्त्र करके पराजित कर दिया। बेलगाँव काग्रस अधिवेशन मे सेठी और बगरहट्टा ने एक साथ अवसरवादी राष्ट्रवादियो को ललकार दी थी अत तभी से बगरहट्टा का दर-किनारा किया जाना तय था। बगरहट्टा ने सस्ती व अवसरवादी लोकप्रियता और फिर गाँधीवादी नेताओ की चापलूसी का रास्ता नही अपनाया अत लोकप्रियता ने उन्हे ठुकरा दिया। मान लो मतभेदो के कारण नेहरू गाँधी का साथ छोड देते तो वे वहाँ तक पहुँच सकते या नहीं कौन कह सकता है?

कौन पहचानता है नीव के पत्थरो को? उनके ऊपर खड़ी इमारत को सभी देखते है। कौन सुनता है अन्दर की टीस? छाती पीट-पीट कर फर्जी रोने-चिल्लाने को सभी सुनते हैं। कौन चीन्हता है सवेदनमयी अन्तश्चेतना को? लफ्फाजी पर तो सभी तालियाँ पीटते हैं, मेजे थपथपाते हैं। कुम्भाराम को पहचानने चाहने वाले जे बगरहट्टा को कैसे पहचानने-मानने लगे? बगरहट्टा जैसे प्रखर बौद्धिक नेता की दूर-दृष्टि को कौन समझेगा? बगरहट्टा कैसे पाटते सस्तेपन को? कैसे बहलाते अग्रेजी पराधीनता से दबी औपनिवेशिक दलाल राजाशाही द्वारा दलित-पीडित और जागीरदारो जमींदारो द्वारा सदियो से प्रताडित पशुवत् जीवन जीने वाली आम जनता को?

सन् 1925 मे जब भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई तो उसके तत्कालीन सस्थापक मण्डल मे जे बगरहट्टा भी थे। इतना ही नही सर्वसम्मति से उन्हे एस बी घाटे के साथ जनरल सैक्रेटरी भी चुना गया था। अगले साल फिर उन्हे उसी रूप मे जनरल सैक्रेटरी चुना गया। उस समय के विधान मे दो या तीन जनरल सैक्रेटरीज का प्रावधान था। दूसरी बार भी उनके साथ एस बी घाटे थे।

दो साल बाद पार्टी मे व्यक्तिगत रूप से आपसी वैमनस्य पैदा हो गया। कॉ मुजफ्फर अहमद ने बगरहट्टा पर गैर-सैद्धान्तिक आक्षेप किए जिनके विषय मे आगे के पृष्ठो मे चर्चा की गई है। इससे उन्हे मानसिक आघात लगा। साथ ही तृतीय इण्टरनेशनल मे अन्तर्विरोध इतने तीव्र हो चुके थे कि एम एन राय के निष्कासन की सम्भावना प्रबल से प्रबलतर हो गई। जे बगरहट्टा को जैसे ही ज्ञात हुआ—उन्हे यह समझने मे देर नहीं लगी कि राय के साथ उन्हे भी नए मोड़ पर पाँव रखना होगा। ऐसी

परिस्थिति से विवश होकर उन्होने सन् 1927 मे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से त्यागपत्र दे दिया और पुन काग्रेस मे लौट आए। आगे चलकर जब सन् 1930 मे एम एन राय को 'कानपुर षड्यन्त्र केस' के अभियुक्त के रूप मे गिरफ्तार किया गया तो उन्होने अपने समर्थको को काग्रेस मे शामिल होने की सलाह दे दी। राय ने छ साल तक जेल की सजा काटी।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जे बगरहट्टा समाजवादी पार्टी मे गए और सन् 1948 मे वे राजस्थान के प्रदेश मन्त्री बने, तो समाजवादी पार्टी मे भी सैद्धान्तिक मतभेद उभर कर सामने आने लगा। कई इस मत के थे कि हमे मार्क्सवाद को साफतौर पर खारिज कर देना चाहिए और दूसरो का मत था कि हमे मार्क्सवाद का खण्डन नहीं करना चाहिए। अरुणा आसफअली और जयप्रकाशनारायण आमने-सामने हो गए। अरुणा ने कहा— And as I continued to observe the developments within the party it began to clear to me that Confusions and Vacillations in the Socialist Party were essentialy due to its rejection of Marxism (From 'The Socialist Party its rejection of Marxism by Aruna Asafali P 9) *इसके बाद अरुणा आसफअली ने समाजवादी पार्टी छोड़ दी।* फिर समाजवादी पार्टी ने खुलकर मार्क्सवाद को खारिज कर दिया तो बगरहट्टा इससे सहमत नहीं हुए। सयोगवश इसी अरसे मे राय ने अपनी रैडिकल ह्यूमेनिस्ट पार्टी को भग कर दिया और उन्होने दलहीन राजनीति चालू कर दी तो जे बगरहट्टा ने भी पार्टी की राजनीति से किनारा कर लिया और पत्रकारिता के क्षेत्र मे चले गए।

दलहीनता की राजनीति ने जे बगरहट्टा को जनसगठनो और जन-आन्दोलनो से अलग-थलग कर दिया जिससे वे एक ऐसे पुरोधा की स्थिति मे पहुँच गए जिससे मौके-ब-मौके सलाह-मशविरा किया जा सके या मचीय शोभा के लिए जिसका उपयोग किया जा सके अथवा जिससे वैचारिक क्लब चर्चा जारी रखी जा सके। अपने जीवन के आखिरी दशक मे *वे बौद्धिक क्षितिज की भूमिका मे रहे।*

यहाँ इस बात को साफतौर पर समझ लेना होगा कि बगरहट्टा ने किसी प्रकार की मानसिक अस्थिरता आवेग या किसी प्रकार के मनगढत आक्षेप आरोप या आशका की खास वजह से किसी दल-विशेष को न तो छोडा और न ही दलबदल किया। उनके हर परिवर्तन के पीछे कोई बौद्धिक कारण रहा है जिसमे खासतौर पर राजनीतिक परिस्थितियो मे बदलाव गुटबाजी व आन्तरिक वैमनस्य से परहेज अवसरवाद या समझौतावाद का विरोध मुख्य

हैं। उनके लिए कहीं एम एन राय निमित्त बन गए हैं, तो कहीं अर्जुनलाल सेठी और कहीं अरुणा आसफअली। प्रमुख कारण फिर भी उनका तर्कपूर्ण विवेक ही है। वे यथास्थितिवाद को तोड़ने के हामी थे। पदलोलुपता सस्ती लोकप्रियता व सम्मान-प्रशस्तियो के आदतन विरोधी थे।

बगरहट्टा का बौद्धिक स्तर बहुत ऊँचा था। इस क्षेत्र मे वे असाधारण थे। सभी उनका लोहा मानते थे। हिन्दी और अग्रेजी पर पूरा अधिकार था। बोलने और लिखने मे अत्यन्त प्रभावशाली थे। राजनीति दर्शन इतिहास समाज विज्ञान साहित्य और सस्कृति के प्रत्येक क्षेत्र का जितना गहन अध्ययन जे बगरहट्टा ने किया था उतना विरले बुद्धिजीवियो ने किया होगा। इसीलिए कई नामी-गरामी नेता उनके सामने बौने दिखाई देते थे। भावना और चेतना का एक अद्भुत सन्तुलन था उनमे। उनकी स्मृति तत्काल उनके अवचेतन के गह्वर से निसृत होकर उनके चेतन मच पर अवतरित हो मुखरित हो उठती थी। उनकी दूरदृष्टि सुदूर भवितव्य का भेदन किया करती थी। खेत-खलिहान गाँव-ढाणी, शहर, प्रदेश राष्ट्र और विश्व की छोटी-बड़ी हर प्रकार की समस्याओ की गहरी पकड़ थी उनके दिलो-दिमाग मे। उनसे बात करने पर हर किसी को एक गम्भीर एहसास होता था। उनसे सीखा तो जा सकता था सिखाया नहीं।

जे बगरहट्टा स्वतन्त्रता सेनानी धर्मनिरपेक्ष राजनीतिज्ञ और समाज सापेक्ष होने के साथ ही निरभिमानी किन्तु स्वाभिमानी दृढ़ किन्तु सरल असाधारण होते हुए साधारण एकाकी होते हुए भी सहयात्री वैश्विक होते हुए भी बीकानेरी या रेवाड़ियाई बीकानेरी या रेवाड़ियाई होते हुए भी अबीकानेरी अथवा गैर-रेवाडियाई और राजनीतिज्ञ होते हुए भी कार्यनीतिज्ञ थे।

सन्दर्भगत सामग्री की अपूर्णता के कारण बगरहट्टा के व्यक्तित्व और कृतित्व का अधिकाश रहस्य के पर्दों मे अनुद्घाटित पड़ा हुआ है। दिक्कत यह भी है कि उन्होने न तो आत्मकथा के रूप मे लिखा और न ही सस्मरण दिए। यदि किसी के पास कुछ हो और वह किसी शोधकर्ता को दे या शोधकर्ता परिश्रम करके सामग्री का सचय करे तथा उसके आधार पर शोध करे तो जे बगरहट्टा का एक स्पष्ट चित्र सामने आ सकेगा और उनके विषय मे और अधिक व्यापक मूल्याकन किया जा सकेगा। यह आलेख एक आरम्भिक स्रोत की भूमिका अदा कर सके तो इसकी सार्थकता साबित हो सकती है।

उदय

अन्तरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त ईसाई कैलेण्डर की कालगणना के अनुसार बीसवीं सदी का आकलन करते समय मैंने प्रथमदृष्ट्या उसे दूसरी सहस्राब्दि का चरमोत्कर्ष माना है जिसने विश्व के भूगोल, इतिहास अर्थ, विज्ञान, राजनीति, समाज, सस्था सगठन साहित्य कला, सगीत सस्कृति, सभ्यता और यहाँ तक कि व्यक्ति के सोच एव उसकी सवेदनाओ तक को अभूतपूर्व सुर्खियो मे अभिरजित कर दिया है। रचना और विध्वस दोनो की सीमाओ को उसने असाधारण व्यापकता प्रदान की। प्रवृत्तियो और निवृत्तियो के द्वन्द्व ने अवरोधो को तोड़ते हुए नई राहो को तलाशने मे बेहतरीन कामयाबियाँ हासिल की।

समग्रता के साथ देखा जाय तो बीसवीं सदी मे पूँजीवाद अपने उच्चतर शिखर भूमण्डलीय वित्तीय या वैश्विक बाजारू साम्राज्यवाद तक पहुँच चुका। इसका आधार विकासमान और अविकसित देशो के ससाधनो का और उनकी जनता के श्रम का शोषण ही रहा है और जिसका विश्व की राजनीतिक घटनाओ और धाराओ पर भी अनुकूल-प्रतिकूल प्रभाव पडा है। पूँजीवादी विकास के उपकरण बने अन्तरराष्ट्रीय मुद्राकोष, विश्वबैंक विश्व व्यापार सगठन, तकनीकी विकास सूचनातन्त्र और स्वसचलन आदि। दूसरी ओर गैर-पूँजीवादी देशो के अवाम मे विरोधी चेतना व सक्रियता का अपूर्व फैलाव दिखाई दिया।

इस सदी मे वैसे तो अनेक घटनाएँ घटित हुईं, किन्तु उनमे से प्रमुखतम वे घटनाएँ हैं जिनके प्रभाव से न कोई देश, न कोई क्षेत्र और न कोई व्यक्ति अछूता रह सका—

सर्वत्र किसानो और मजदूरो के आन्दोलन

राष्ट्रीय मुक्ति सघर्षो का आरम्भ और विकास

• क्रान्तिकारी राष्ट्रवादी, समाजवादी और साम्यवादी धाराओ का दौर

रूस मे अक्टूबर क्रान्ति

दो विश्वयुद्ध (करोड़ो इनसानो की मौत और ससाधनो की अपार क्षति)

दो परमाणु बमो के गिराए जाने से हिरोशिमा और नागासाकी का विध्वस
विद्युत विज्ञान का विकास अन्तरिक्ष यात्रा और अन्तरिक्ष अनुसधान का विकास
चाँद पर पहुँचने की रोमाचक घटना
ऑटोमेशन, रोबोटाइजेशन और कम्प्यूटराइजेशन का विकास
सूचनातन्त्र और औद्योगिक प्राविधिक विकास
सोवियत सघ का विघटन
अफगानिस्तान और इराक पर अमरीकी–ब्रितानी हमले

ऐसी इन्द्रधनुषी बीसवी सदी के उषाकाल मे जहाँ विश्व मे कई प्रतिभाओ ने पहली बार अपनी आँखे खोली, वहाँ भारत की बीकानेर रियासत मे राष्ट्रीय स्तर की राजनीति के दो देदीप्यमान प्रतिभापुज करीब एक साल के अन्तराल से उदित हुए। इनमे एक थे जानकीप्रसाद बगरहट्टा और दूसरे थे शौकत उस्मानी। श्री जानकीप्रसाद का जन्म 5 सितम्बर, सन् 1900 ई को (सर्वपल्लीजी राधाकृष्ण के जन्मदिन शिक्षक दिवस का) तत्कालीन बीकानेर रियासत के श्रीडूँगरगढ कस्बे मे हुआ था जबकि शौकत उस्मानी 21 दिसम्बर सन् 1901 को बीकानेर मे पैदा हुए। आगे चलकर इन दोनो पर उपर्युक्त ऐतिहासिक घटनाओ मे से कइयो का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से न केवल प्रभाव ही पडा बल्कि वे उनकी प्रेरणा स्रोत भी बनी।

जानकीप्रसाद बगरहट्टा (जो बाद मे जे बगरहट्टा के रूप मे लोकप्रिय हुए) और शौकत उस्मानी (जो बचपन मे मौलाबक्श नामधारी थे) मे अनेक समानताएँ थी तो कई अन्तर भी थे जिनका उल्लेख आगे किया जायेगा। इसमे कोई शक नही कि दोनो के कृतित्व और व्यक्तित्व गरिमापूर्ण और रेखाकित करने योग्य रहे हैं।

उन्नीसवी सदी के प्रारम्भिक दशको मे श्री जानकीप्रसाद बगरहट्टा के दादा श्री शिवसहाय बगरहट्टा बीकानेर के महाराजा डूँगरसिहजी के राजवैद्य बनकर अपने छ –सात पीढी से रह रहे रेवाड़ी के वासस्थान से आए और बीकानेर के श्रीडूँगरगढ कस्बे मे रहने लगे। यहीं श्रीडूँगरगढ मे श्री शिवसहाय के सुपुत्र श्री जगदीशसहाय बगरहट्टा की धर्मपत्नी श्रीमती नानकीदेवी के गर्भ से हमारे चरित्रनायक श्री जानकीप्रसाद बगरहट्टा का जन्म दिनाक 5 सितम्बर सन् 1900 ई को हुआ।

यह परिवार गौड़ ब्राह्मण वश–परम्परा की शृखला है। वश–परम्परा

का निवासस्थान बगरहट्ट (बगाल) का इलाका बगरहट्ट' होने के कारण इसके बाशिन्दो मे कई अपने नाम के आगे बगरहट्टा, अर्थात् बगरहट्ट का रहने वाला लगाकर अपनी पहचान करने लगे। कालान्तर में 'बगरहट्टा' एक परम्परा मे ढल कर परिचयपरक अथवा 'शर्मा' का प्रतिस्थानक बन गया किन्तु इस वश-परम्परा के सदस्यो ने अपना यह अधिकार सुरक्षित रखा है कि वे अपने नाम के बाद शर्मा लगाएँ या बगरहट्टा । उदाहरण के लिए श्री जानकीप्रसाद अपने नाम के बाद 'बगरहट्टा लगाते थे और सुप्रसिद्ध होने के कारण मात्र बगरहट्टा या बगरहट्टाजी कहने पर भी जनसाधारण उन्ही का बोध करते थे जबकि उन्ही के सगे भाई श्री रामचन्द्रजी अपने नाम के साथ शर्मा लगाया करते थे और उनके सम्पर्क वाले शर्माजी' कहने पर उन्हीं का बोध करते थे।

जानकीप्रसाद बगरहट्टा के पिताजी का निधन सन् 1948 मे हुआ और इसी सन् मे इनकी माताजी श्रीमती नानकीदेवी का भी निधन हो गया। श्री जगदीशसहाय अपने समय के सुप्रसिद्ध अधिवक्ता थे।

जानकीप्रसादजी सहित चार भाइयो मे सबसे बडे श्री दीनदयालजी दूसरे श्री जानकीप्रसादजी तीसरे श्री रामचन्द्रजी और चौथे श्री हरिशकरजी थे। इन भाइयो को बहन का अभाव हमेशा खलता रहा।

जानकीप्रसादजी बचपन से ही तेज-तर्रार्ट नटखट और लाडले थे। अपनी चचलता के कारण परिवार वालो के लिए मुसीबते पैदा कर दिया करते थे। किन्तु अपने दोनो छोटे भाइयो को उनकी उपस्थिति मे कोई भी नही डाँट सकता था। बडे भाई साहब के आते ही सब चुप हो जाते थे। सारे भाइयो मे जानकीप्रसादजी का हठ सबको मानना पडता था।

श्री बगरहट्टा की प्रारम्भिक शिक्षा बीकानेर के दरबार स्कूल मे हुई किन्तु प्रथम विश्वयुद्ध के बाद मे उन्होने डी ए वी हाई स्कूल देहली तथा लाहौर की स्कूल मे अपनी आगे की पढाई की। कुल मिलाकर वे सीनियर कैम्ब्रिज के पार नही जा सके जिसकी एक खास वजह थी। सन् 1914 से सन् 1918 के प्रथम विश्वयुद्ध की घटनाओ और इसी अन्तराल मे सन् 1917 मे रूस की अक्टूबर क्रान्ति ने भारतीय युवा वर्ग को झकझोर कर रख दिया था। दूसरी ओर सन् 1915 से महात्मा गाँधी के सत्याग्रह आन्दोलन अपनी गति पकड रहे थे। इसी सिलसिले की कडी मे एक ऐसा दौर आया कि सन् 1921 मे भारत के नौजवान छात्रो को अंग्रेजियत की शिक्षा प्रणाली का बहिष्कार करने और स्वतन्त्रता सग्राम मे हिस्सा लेने का

आह्वान किया गया। जानकीप्रसाद जैसा सवेदनशील नवयुवा इस आह्वान की अनसुनी या अनदेखी कैसे कर सकता था। उन्होने बहिष्कार आन्दोलन के तहत पढाई छोड दी और स्वतन्त्रता सघर्ष मे कूद पडे। उन्होने रेवाडी को अपनी गतिविधियो का केन्द्र बनाया, लेकिन वे अजमेर व अन्य विभिन्न स्थानो मे अपने कार्यों और सम्पर्को का विस्तार करने मे सलग्न हो गए। वैसे वे 16 साल की उम्र मे ही रेवाड़ी चले गए थे।

यहाँ फिर यह सवाल पैदा होता है कि जानकीप्रसाद बगरहट्टा ने बीकानेर से बाहर जाकर रेवाडी मे अपना सामाजिक-राजनीतिक कार्य क्यो शुरू किया? ठीक वैसे ही जैसे शौकत उस्मानी यहाँ रहकर काम नही कर सके और खिलाफत आन्दोलन के बहाने 19 साल की उम्र मे ही बीकानेर छोडकर चले गये। दोनो के द्वारा बीकानेर से बाहर जाकर आन्दोलनात्मक गतिविधियो मे जी-जान से लग जाने का कारण क्या था?

यह एक ऐतिहासिक हकीकत है कि तत्कालीन सामन्ती रियासतो (रजवाडो) मे तिहरी गुलामी का दौर चल रहा था—ब्रिटिश औपनिवेशिक साम्राज्यवाद के विदेशी शासन की गुलामी रियासती राजा की गुलामी और सामन्तो-जागीरदारो की गुलामी। आम-जनता की मेहनत का शोषण और उसका निर्मम उत्पीडन तीनो प्रशासक तन्त्रो आर्थिक कर-प्रणालियो और दमन-कुचलने के विधि-विधानो द्वारा किया जाता था। लाटा-बाँटा लाग-बाग और बेगार के सामन्ती जुल्मो के विरुद्ध यदि कोई आवाज उठती तो जेल-यातना लाठी गोली और हर प्रकार के दमन और शारीरिक-मानसिक उत्पीडन से उसको दबोच लिया जाता था। आन्दोलन के पैदा होने की गन्ध आते ही सामन्तशाही उसकी भ्रूणहत्या कर देती थी। दमनकाण्ड मे 600 रजवाड़ो मे बीकानेर की राजशाही का स्थान सर्वोच्च था उसका कहीं कोई मुकाबला नही था।

इस समय बीकानेर मे महाराजा गगासिह का राज था। गगासिह अग्रेजी हुकूमत के सबसे बड़े चरणसेवी राजभक्त भारत के स्वतन्त्रता सग्राम के नम्बर एक शत्रु और बीकानेर मे देश की आजादी के नामलेवाओ को रातोरात दमन-चक्की मे पीस कर आतक बनाए रखने वाले सवेदनशून्य व्यक्ति थे। वे युद्ध मे अग्रेजी प्रशासन के आदेशानुसार उनकी मदद के लिए खुद अपनी फौज को लेकर जाते थे और वफादारी की एवज मे उपाधियाँ और तमगे हासिल करने का अपना मकसद पूरा करते थे। अपने फौजियो को मरवाकर उन्होने अग्रेजी वर्णमाला के अधिकाश वर्णों के

पदक बटोर लिए थे। अग्रेजी गवर्नर वायसराय सम्राट्–साम्राज्ञी और औपनिवेशिक यन्त्र का प्रत्येक पुर्जा सबसे अधिक खुश था तो इस बात से कि गगासिह छ सौ रियासतो के राज्यो मे आजादी की आवाज के गले को दबाकर मार डालने वाले शासको मे सिरमौर 'नरेन्द्र शिरोमणि या महाराजाधिराज' है। पुरातत्त्व का रेकार्ड और स्वतन्त्रता सग्राम मे रियासती राजाओ की भूमिका के दस्तावेज इसके जीते–जागते प्रमाण है।

गगासिह के दो मुखौटे थे—एक वह जो दूसरो के सामने उन्हे प्रतिभाशाली राष्ट्रभक्त दूरदर्शी विकासोन्मुख और प्रजापालक राजा के रूप मे दिखाता है, जबकि दूसरा मुखडा उन्हे यहाँ के जनसाधारण के सामने स्वतन्त्रता सेनानियो एव प्रबुद्ध लोगो के लिए मौत के देवता यमराज के रूप मे ही प्रस्तुत करता है। वास्तव मे गगासिह ने किसानो और देशभक्त स्वाधीनता सेनानियो को मारने–पीटने और जेलो मे उन्हे अमानवीय प्रताडनाएँ देने मे इतिहास के सारे रेकार्ड तोड दिए थे। यहाँ रघुवरदयाल गोयल मघाराम वैद्य, रामनारायण शर्मा चौधरी हनुमानसिह केदार शर्मा जैसे अनेक उदाहरण पेश किए जा सकते है। सन् 1931 के रियासत व प्रिसली इण्डिया मे प्रकाशित लेखो मे बीकानेर राज्य मे फैले आतक और अत्याचारो का विवरण दिया गया है और यहाँ तक कि महाराजा गगासिह को बीकानेर का नीरो' कहा गया। जब चारो ओर से बीकानेर के दमन के बारे मे लेख लिखे गए और पत्र छापे गए तो जवाहरलाल नेहरू और महात्मा गाँधी ने भी इन दानवी कारनामो की कटु आलोचना की।

तो क्या जानकीप्रसाद बगरहट्टा और ऐसे ही शौकत उस्मानी ने गगासिह की दमन–नीति से आतकित होकर बीकानेर को अपनी गतिविधियो का केन्द्र नहीं बनाया अथवा सपाट शब्दो मे यह आशका प्रकट करे कि कही वे कायर तो नही थे?

मोटे तौर पर तो यह कहा जा सकता है कि कोई भी व्यक्ति जो क्रान्तिकारी गतिविधियो या क्रान्तिकारियो या कम्युनिस्टो के सम्पर्क मे हो वह कायर तो हो ही नही सकता। अत प्रथमदृष्टया इस आशका को खारिज करते हुए कहा जा सकता है कि श्री जानकीप्रसाद बगरहट्टा निर्भीक साहसी और क्रान्तिकारी तेवर के व्यक्ति थे और वैसे ही शौकत उस्मानी भी। यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि श्री बगरहट्टा अर्जुनलाल सेठी जैसे भूमिगत क्रान्तिकारी एम एन राय और श्रीपाद अमृत डाँगे जैसे ओजस्वी

व्यक्तियो के सम्पर्क मे थे। अत ऐसी बेबुनियाद शकाओ के भ्रमजाल को तत्काल तोड देना ही हमारा प्रथम कर्तव्य है।

आइये, एक नजर इन तथ्यो पर दौडाएँ कि जानकीप्रसाद बगरहट्टा ने अपनी किशोरावस्था का कैसे निर्माण किया और कैसे जवानी की दहलीज पर पाँव रखा

1 जब बगरहट्टा चौदह साल के थे तो नियमित रूप से अखबार पढने लगे थे। उन्होने उस चौदह साल मे उन घटनाओ को पढना शुरु किया जो सन् 1914 मे शुरू हुए प्रथम विश्वयुद्ध की घटनाएँ थी और जिनका सिलसिला सन् 1918 ई तक चला। साथ ही उन्होने पढा कि सन् 1915 मे महात्मा गाँधी के भारत मे लौटने और उनके द्वारा भारत की आजादी की मुहिम को मोड देने से आम लोगो मे नई जागृति का सचार होने लगा है। सवेदनशील किशोर बगरहट्टा को अर्जुनलाल सेठी के बमकाण्डो की सन् 1912 से जारी क्रान्तिकारी भूमिगत कार्रवाइयो की गन्ध भी आती जा रही थी।

   ये परस्पर भिन्न प्रवृत्तियो की घटनाएँ उस किशोर बगरहट्टा के मानस--पटल पर प्रतिबिम्बित हो रही थीं बगरहट्टा का निर्माण कर रही थी।

2 इस प्रथम विश्वयुद्ध के बीच मे ही सन् 1917 मे रूस की वह अक्टूबर क्रान्ति की घटना घटी जिससे दस दिन मे जब दुनिया हिल उठी तो क्या बगरहट्टा (और उस्मानी) उससे उद्वेलित हुए बिना रह सकते थे? फिर क्या विश्वयुद्ध की समाप्ति पर हुई प्रतिक्रियाओ का प्रभाव उन पर नही पड़ा?

3 ध्यान देने योग्य बात है कि किशोर बगरहट्टा 16 साल की उम्र मे सन् 1916 मे रेवाडी चले गए थे तब तक महाराजा गगासिह ने वह खतरा न तो महसूस ही किया था और न दमनकारी कानून ही पास किया था। महाराजा गगासिह को लाल खतरा सन् 1917 की रूसी क्रान्ति से ही दिखाई दिया और इसका एक प्रभाव यह दिखाई देने लगा कि महाराजा गगासिह बीकानेर की सख्याबहुल पुष्करणा जाति को चेतनारहित बनाए रखने के लिए म्हारी लाल फौज' कहने लगे थे। सन् 1920 मे बीकानेर मे सद्‌विद्या प्रचारिणी सभा द्वारा रियासत मे घूसखोरी और अन्याय के विरुद्ध सत्य विजय और धर्म विजय नामक दो नाटको का प्रदर्शन किया गया था। इससे क्षुब्ध होकर

राजनीतिक गतिविधियो पर रोक लगा दी गई। साथ ही बाहरी राजनीतिक कार्यकर्ताओ के राज्य मे आने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। बाद मे सन् 1932 मे महाराजा ने जनजागृति का दमन करने के लिए सार्वजनिक सुरक्षा कानून' (काला कानून) पास किया। सन् 1916 तक ऐसी कोई परिस्थिति नहीं थी।

4 सन् 1919 के जलियाँवाला बाग के निर्मम हत्याकाण्ड ने सारे देश को झकझोर कर रख दिया था। श्री बगरहट्टा का उदीयमान यौवन कैसे अप्रभावित रहता ?

5 सन् 1920 जे बगरहट्टा के लिए विशेष महत्त्व का था। अब वे आयु के दो दशक पूरे करने को थे, 20 वर्ष के होकर युवावर्ग की श्रेणी मे प्रवेश कर चुके थे। सन् 1920 मे एम एन राय और साथियो ने ताशकन्द मे हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट पार्टी' की स्थापना की थी। स्मरणीय है कि श्री बगरहट्टा एम एन राय के सम्पर्क मे थे। सन् 1920 मे भारत मे श्रीपाद अमृत डाँगे और साथियो ने अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन काग्रेस (AITUC) की स्थापना की। श्री बगरहट्टा श्रीपाद अमृत डॉगे के सम्पर्क मे थे और ट्रेड यूनियन आन्दोलन से जुडे रहे। एटक से लाला लाजपतराय भी सम्बन्धित थे। उन्होने ही एटक के पहले सम्मेलन की अध्यक्षता की थी और बगरहट्टा का उनसे भी सम्पर्क था।

6 सन् 1921 मे महात्मा गॉधी के सत्याग्रह के कार्यक्रम के अन्तर्गत देशव्यापी बहिष्कार के आह्वान पर बगरहट्टा ने पढाई छोड दी और पूरी तरह राजनीतिक आन्दोलन मे खुलकर आ गए। किन्तु प्रतिबन्धित लोगो के साथ भी उनका पत्र–व्यवहार चलता रहा।

7 श्री बगरहट्टा के बीकानेर से बाहर जाकर अनेक स्थानो पर राजनीतिक कार्यभार सँभालने का मकसद था राष्ट्रीय स्तर पर अपने उन राजनीतिक दायित्वो का निर्वाह करना जो एम एन राय श्रीपाद अमृत डाँगे लाला लाजपतराय और अर्जुनलाल सेठी आदि नेताओ ने उनको उनके सम्पर्कों के दौरान सौंपे थे अथवा उनसे इनके निर्वाह की अपेक्षा की गई थी। ध्यान रहे कि अपने समय मे राय, डाँगे लालाजी और सेठीजी काग्रेस के गरमदलियो के घटक थे और बगरहट्टा भी उन्हीं गरमदलियो की नवयुवा पीढी मे शामिल हो चुके थे। नरमदलियो से हमेशा से ही इनकी टकराहट रही है।

8 जब बगरहट्टा ने सन् 1921 के आह्वान पर स्कूल-कॉलेज की पढाई का बहिष्कार किया और राजनीति का ऊबड-खाबड रास्ता अपनाया तभी उनके परिवार वालो का वह सपना चूर-चूर हो गया था कि वह कोई ऊँचे ओहदे की सरकारी सेवा मे प्रवेश पाएगा।

9 सोलह साल की आयु तक श्री बगरहट्टा को बीकानेर मे राजनीतिक शून्यता का ही एहसास होता रहा। न कही हलचल न कोई प्रेरणा जबकि अखबार मे उन्हे बीकानेर से बाहर सर्वत्र स्वतन्त्रता सग्राम की सरगर्मियो की भरमार पढने को मिलती थी इस विरोधाभासी वातावरण से उनमे एक ओर बाहर की राजनीतिक उथल-पुथल का साक्षात्कार करने की जिज्ञासा जोर मार रही थी तो दूसरी ओर इससे भी ज्यादा एक आतुरता का दबाव भी बढता जा रहा था कि क्यो न इसमे भागीदार बनकर अपने अस्तित्व को सार्थक और सोद्देश्य बनाया जाय। इस आतुरता के बार-बार के दबाव की उपेक्षा करना आसान नही था।

10 जब 17 अक्टूबर, सन् 1920 मे ताशकन्द मे एम एन राय, अवनी मुखर्जी रोसा ईटिगाफ एवलिन राय मुहम्मद अली मुहम्मद शफीक तथा एम पी बी टी आचार्य ने हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की तो उसने इतने जोरो से प्रचार कार्य किया कि सारे भारत मे एक नई धारा प्रवाहित होने लगी। श्री बगरहट्टा इस प्रचारतन्त्र के हिस्सेदार बन चुके थे और इस नाते उनके लिए आवश्यक हो गया था कि औद्योगिक क्षेत्रो को अपना कार्यक्षेत्र बनाएँ। बीकानेर उन दिनो औद्योगिक दृष्टि से शून्य था अत बगरहट्टा जैसे ट्रेड यूनियन चेतना-युक्त कार्यकर्ता के लिए इसे कार्यक्षेत्र बनाना सम्भव नहीं था।

11 तब तक न तो काग्रेस की ओर से रियासतो मे स्टेट पीपुल्स कान्फ्रेस जैसी सस्थाओ का निर्माण करने और राजनीतिक गतिविधियाँ चालू करने का कोई निर्णय लिया गया था और न ही प्रचार कार्य द्वारा ही किसी प्रकार का वातावरण को बनाने की भूमिका तैयार की गई थी अत किशोरावस्था के लिए उत्प्रेरक उपकरणो का नितान्त अभाव था बीकानेर की स्थिति तो जनजागृति की दृष्टि से और भी अधिक बदतर थी। ऐसे मे बीकानेर मे राजनीतिक सूचना केन्द्र की स्थापना नहीं की जा सकती थी। फिर जनता को विरासत मे सामन्ती सस्कार ही मिले थे। चारो ओर वीरानगी का राज था।

श्री जानकीप्रसाद बगरहट्टा किशोरावस्था से ही काफी सवेदनशील थे। इसका एक उदाहरण है प्रथम विश्वयुद्ध (1914-18) की एक घटना। जब उन्होने पढा कि इस युद्ध मे एक करोड नौजवान मारे गए और दो करोड़ से ज्यादा घायल हो गए उपभोक्ता वस्तुओ के उत्पादन मे भयकर कमी हो गई महँगाई बेतहाशा बढ गई और भुखमरी फैल गई बीमारियो का लगातार आक्रमण होने लगा सेठो दूकानदारो, बैंकपतियो और सट्टेबाजो ने युद्ध से कल्पनातीत दौलत इकट्ठी कर ली तो बगरहट्टा का किशोर हृदय द्रवित हुए बिना नहीं रहा। उन्होने यहाँ लौट कर तत्कालीन सरकार से जब पूछा कि वे युद्ध मे घायल भारतीय सैनिको की क्या सहायता कर सकते हैं तो बीकानेर राज्य के राजस्वमन्त्री जी डी रडकिन ने उन्हे तुरन्त बुलाया और War Loan Lotteries स्कीम की मार्फत घायल सैनिक सहायता कोष' मे फण्ड इकट्ठा करने का काम सौंपा। बगरहट्टा ने रात-दिन एक कर अच्छा-खासा फण्ड जमा कराया। जब सरकार ने इसके लिए पारिश्रमिक की बात कही तो उन्होने अधिकारी को डाँटते हुए कहा कि— आइन्दा इस तरह का 'ऑफर किसी को न देना।' और तल्खी का तेवर दिखा दफ्तर से बाहर निकल गए।

युद्ध की समाप्ति के बाद की इस उपर्युक्त घटना के उपरान्त बगरहट्टा की पढाई का दूसरा दौर शुरू हुआ। वे रेवाडी होते हुए दिल्ली चले गए और दिल्ली की डी ए वी शिक्षण सस्था मे दाखिला ले लिया।

इस समय दिल्ली हिन्दुस्तान-भर की राजनीतिक सरगर्मियो की सूचनाओ का केन्द्र बना हुआ था। छात्रो मे से कइयो के अभिभावक राजनीति की विभिन्न प्रवृत्तियो के सक्रिय सदस्य थे जिनमे कुछ तो अपने क्षेत्रो के लोकप्रिय नेता भी थे तो कुछेक राष्ट्रीय स्तर के जाने-माने नेता। छात्रो मे आपस मे राजनीतिक चर्चाएँ चलती रहती थी। कुछ दिनो के बाद बगरहट्टा ने भी बहस मे शिरकत करना चालू कर दिया और जल्दी ही उन्होने अपनी विशेष पहचान बना ली। वहाँ उन्होने पुस्तकालय का भी काफी उपयोग किया और सम्पर्को का सिलसिला आगे बढाया। फिर भी अपने गतिशील स्वभाव के कारण उनका एक जगह टिके रहना सम्भव नहीं हुआ। वहाँ से वे लाहौर चले गए और डी ए वी शिक्षण सस्था मे प्रवेश ले लिया।

यह वह समय था जब पजाब ज्वलन्त घटनाओ का केन्द्र बन रहा था। क्योकि प्रथम विश्वयुद्ध मे पजाब से सबसे ज्यादा सैनिक लिए गए थे, अनाज वसूल किया था और पजाब के शिल्प और लघु उद्योगो को बर्बाद किया जा

चुका था। इन मजबूरियो ने पजाबियो मे आक्रोश भड़का दिया था, दूसरी ओर पजाब पहले से ही क्रान्तिकारियो की गतिविधियो का प्रमुख क्षेत्र रहा है।

बगरहट्टा अपनी दिल्ली की शिक्षण अवधि मे पजाब की घटनाओ का अध्ययन कर चुके थे कि किस प्रकार वहाँ के अनेक स्थानो पर ब्रिटिश विरोधी सभाएँ और प्रदर्शन किए जाते रहे हैं। जब 10 अप्रैल 1919 को अमृतसर मे डॉ सैफुद्दीन किचलू और डॉ सत्यपाल को गिरफ्तार किया गया, तो विरोध प्रदर्शनो का सैलाब उमड़ पड़ा। लाहौर और गुजराँवाला मे सभाएँ और हड़ताले हुई ब्रिटिश शासन के विरुद्ध कई स्थानो पर सशस्त्र झडपे भी हुईं। इनमे विशेष तौर पर रेलवे मजदूरो ने भाग लिया।

पजाब के गवर्नर ओ डायर' और जनरल डायर के निर्देशन मे फौजी टुकडी को तैनात किया गया और जन-आन्दोलन को कुचलने का फैसला किया गया? आन्दोलनकारियो ने किचलू और सत्यपाल की गिरफ्तारी के विरोध मे जलियाँवाला बाग मे एक आमसभा का आयोजन किया। जैसे ही सभा का कार्यक्रम शुरू हुआ दनादन गोलियाँ चलने लगीं और देखते ही देखते लगभग एक हजार निहत्थे स्त्री-पुरुष बेरहमी से मारे गए और दो हजार घायल हो गए। जनरल डायर ने पजाब मे कर्फ्यू लगा दिया बडे पैमाने पर गिरफ्तारियाँ की गई और लोगो को सरेराह बाँधकर कोडे लगाए गए।

लेकिन इस निर्मम दमन से भी अग्रेजी प्रशासन अपना वाछित लक्ष्य पूरा नही कर सका। इस दमन प्रक्रिया का सामना करने के लिए लाहौर और अमृतसर मे जनता ने आत्मरक्षा-दल कायम कर लिए। इन दलो को डण्डो से लैस किया गया था अत इन्हे डण्डा फौज कहा गया। सारे पजाब प्रान्त मे राजनीतिक जन-आन्दोलन का क्रम जारी रहा। पुलिस चौकियो पर हमले किए जाते थे और साथी कैदियो को जबरन छुडा लिया जाता था। रेल के मजदूरो ने फौजी रेलगाडियो को पटरी से उतार दिया।

जलियाँवाला बाग की नृशस हत्याओ के समाचारो को सेसरशिप से भी नहीं छिपाया जा सका। वे सारे देश मे ज्यो-ज्यो फैलते गए वैसे ही समस्त जनसमुदायो मे क्रोधाग्नि भडकती गई। मुम्बई कलकत्ता (कोलकाता) चैन्नई और कानपुर जैसे बडे औद्योगिक केन्द्रो मे बड़े-बडे जुझारू प्रदर्शन और सभाएँ होने लगे। अहमदाबाद मे सूती मिल मजदूरो ने विशाल पैमाने पर राजनीतिक गतिविधियाँ शुरू कर दीं।

जलियाँवाला बाग के हत्याकाण्ड के समय पजाब के सर्वमान्य नेता लाला लाजपतराय अमरीका मे थे और ब्रिटिश सरकार ने प्रथम विश्वयुद्ध से

ही लालाजी के स्वदेश लौटने पर प्रतिबन्ध लगा रखा था। जब उन्हे जलियाँवाला बाग की घटना का समाचार मिला तो उनका दिल दहल उठा। उन्होने न्यूयार्क से भेजे 'ओपन लैटर टू यग पजाब' मे लिखा—

नौकरशाही के कृत्यो से मेरे मे कडुवाहट भर गई है आत्मा दुखी है और मैं रोष मे हूँ काश! मेरे पख होते और मै उड कर अपने देश मे पहुँच जाता जो मुझे सबसे प्यारा है।' ('लाला लाजपतराय' के जीवनवृत्त से साभार)

सयोगवश सन् 1920 मे लालाजी के स्वदेश प्रवेश पर लगा प्रतिबन्ध हटा और वे वापिस लौटे ही थे कि श्री बगरहट्टा ने डी ए वी लाहौर मे दाखिला लिया। यही इनका सम्पर्क लाला लाजपतराय से हुआ, जो आगे के वर्षो तक कायम रहा। स्मरणीय है कि लालाजी डी ए वी शिक्षा सस्थान के स्थापनाकाल से ही उसकी प्रबन्ध समिति के सवादी सचिव रहे थे। सन् 1920 मे भारत लौटने के बाद इसके अगले साल लाहौर मे लालाजी ने नेशनल कॉलेज की स्थापना की जिसमे राजनीति और अर्थशास्त्र का अध्यापन कराया जाता था। इसके अलावा लालाजी द्वारा ही स्थापित तिलक स्कूल ऑफ पॉलिटिक्स द्वारा राजनीति का व्यावहारिक ज्ञान भी दिया जाता था। श्री बगरहट्टा को इसका पूरा लाभ मिला।

लालाजी की सर्वेन्ट्स ऑफ पीपुल सोसाइटी' नामक सस्था मे भी राजनीति सामाजिक कल्याण हरिजन उत्थान ग्रामीण पुनर्निर्माण शिक्षा आदि क्षेत्रो मे प्रशिक्षण दिया जाता था। इस सोसाइटी के प्रायोगिक शिक्षण के फलस्वरूप देश को लालबहादुर शास्त्री पुरुषोत्तमदास टण्डन, श्री बलवन्तराय मेहता जैसे नेता प्राप्त हुए। अन्य अनेक राष्ट्रीय स्तर की विशिष्ट प्रतिभाओ मे नौजवान जे बगरहट्टा भी थे।

इसी दौरान जब सन् 1920 मे लाला लाजपतराय ने AITUC के स्थापना-सम्मेलन की अध्यक्षता की जिसमे श्रीपाद अमृत डाँगे भी थे, तो श्री बगरहट्टा का इन दोनो के साथ साक्षात्कार हुआ। दोनो के साथ हुआ यह प्रारम्भिक सम्पर्क आगामी वर्षो मे अधिक घनिष्ठ होता गया। लगभग इसी अरसे से प्रवासी एम एन राय ने परोक्ष स्रोत से सम्पर्क सूत्र कायम किया जो दो दशको तक कायम रहा।

एक ओर काग्रेस मे वामोन्मुख नेतृत्व का प्रभाव बढता दिखाई देने लगा था पजाब का उबाल देश के सभी हिस्सो को उद्वेलित कर रहा था और मजदूरो की हडताले राजनीतिक शक्ल अख्तियार करती जा रही थी। ऐसी स्थिति

मे गाँधीजी को यह आशका होने लगी थी कि यदि स्वाधीनता आन्दोलन ने हिसक स्वरूप धारण कर लिया तो उसे अपरिपक्व अवस्था मे ही कुचल दिया जायेगा और फिर श्मशान की शान्ति मे जन-चेतना अर्द्धसुषुप्ति मे चली जायेगी। इस आशका के मद्देनजर गाँधीजी ने स्वत स्फूर्त निष्कर्ष निकाला कि सत्याग्रह आन्दोलन चलाने के लिए एक विस्तृत क्रमबद्ध कार्यक्रम तैयार किया जाये। इस कार्यक्रम का आधार औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी असहयोग ही हो सकता है। इस असहयोग आन्दोलन को द्विस्तरीय रखने का सोचा गया। पहला स्तर होगा औपनिवेशिक प्रशासन का बहिष्कार और दूसरा होगा सरकारी कर अदा न करना। बहिष्कार आन्दोलन के रूप होगे—सम्मान पदो और उपाधियो का परित्याग, सरकारी समारोहो का बहिष्कार सरकारी स्कूलो कॉलेजो और अदालतो का बहिष्कार विधानसभाओ के चुनावो का बहिष्कार और विदेशी वस्तुओ का बहिष्कार। इस आन्दोलन को 1 अगस्त, 1920 से शुरू करने का प्रस्ताव था।

काग्रेस ने गाँधी के बहिष्कार आन्दोलन को औपचारिक स्वीकृति दे दी। खिलाफत आन्दोलन को भी इसके साथ जोड दिया गया। इससे इसका आधार और व्यापक हो गया—अब खिलाफत का मकसद खलीफा को बचाने के साथ साम्राज्यवाद की खिलाफत करना हो गया।

1 अगस्त 1920 को आन्दोलन शुरू हुआ। जगह-जगह सभाओ जुलूसो और हड़तालो के रूप मे यह सविनय अवज्ञा आन्दोलन चारो ओर फैलने लगा। मजदूरो के आर्थिक सघर्ष अब राजनीतिक सघर्ष से जुड गए। मुम्बई जमशेदपुर और दूसरे औद्योगिक नगरो की हडताले इसी को प्रमाणित करती थी। अब ट्रेड यूनियन आन्दोलन साम्राज्यवाद विरोधी राजनीतिक आन्दोलन का भागीदार बन गया था। यही हाल गाँवो के किसान आन्दोलनो का हो गया। राजनीतिक जन-आन्दोलन की इस व्यापकता को देखते हुए सन् 1921 ई मे आह्वान किया गया— बहिष्कार करो सरकारी समारोहो का बहिष्कार करो अदालतो और बहिष्कार करो सरकारी स्कूलो कॉलेजो का और औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली का।'

इस आह्वान का व्यापक असर हुआ। वकीलो ने अदालतो का और छात्रो ने स्कूल-कॉलेजो का बड़े पैमाने पर बहिष्कार किया। इसी क्रम मे जानकीप्रसाद बगरहट्टा बहिष्कार आन्दोलन मे कूद पड़े—पढाई बीच मे छोड दी और मैदान मे उतर आए। यह उनके राजनीतिक सफर का निर्णायक मोड़ था।

बहिष्कार आन्दोलन के प्रवाह मे शिक्षण सस्था छोड वे अजमेर चले आए और काग्रेस मे शामिल हो गए क्योकि ब्रिटिश भारत का प्रान्त होने के कारण अजमेर राजस्थान के राजनीतिक आन्दोलनो का केन्द्र बन चुका था। यहाँ गरमदलियो और नरमदलियो की अपनी-अपनी गतिविधियाँ चल रही थी। कभी आपस मे एकता कायम करने की कोशिश की भी जाती तो कुछ समय बाद आपस मे फिर टकराहट का माहौल पैदा हो जाता था। नेताओ के पारस्परिक वैमनस्य उनकी स्वार्थपरता और उनका अहकार कार्यप्रणाली के विकास को अवरुद्ध कर रहा था। श्री बगरहट्टा के प्रेरक व सहयोगी प्रसिद्ध क्रान्तिकारी अर्जुनलाल सेठी भी यहाँ के स्थानीय नेताओ के मतभेदो और गुटबाजियो के कारनामो से परेशान थे। वे भी उनकी उपेक्षाओ के बीच स्वय को हाशिये की टिप्पणी जैसा महसूस कर रहे थे। गाँधीजी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन कइयो की छिपी हुई गतिविधियो और आपसी ईर्ष्या-द्वेष ने केन्द्रीय नेताओ की सलाहो को भी दर-किनार कर दिया था।

दूसरी ओर श्रीपाद अमृत डाँगे की पुस्तक गाँधी बनाम लेनिन' पढने को मिली जो सन् 1921 मे प्रकाशित हो चुकी थी और जिससे प्रभावित होकर कई व्यक्ति कम्युनिस्ट विचारधारा की ओर रुख करने लगे थे और काग्रेस के भीतर एक कम्युनिस्ट ग्रुप भी तैयार हो गया था। श्री बगरहट्टा पर भी इसका प्रभाव पडा। वैसे सन् 1920 मे ही एटक सम्मेलन से उनका उनसे सम्पर्क हो चुका था।

इसी अवधि मे हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट पार्टी के नाम पर एम एन राय और अवनी मुखर्जी के हस्ताक्षर के अन्तर्गत 1921 मे अहमदाबाद मे आयोजित भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के 36वे अधिवेशन पर एक घोषणापत्र प्रस्तुत किया गया। इस घोषणापत्र मे साम्राज्यवाद विरोधी जनवादी क्रान्ति का समग्र कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया था जिसमे मजदूरो तथा किसानो की माँगो पर विशेष जोर दिया गया ताकि उन्हे स्वतन्त्रता सग्राम मे पूर्ण रूप से लाया जा सके। इसी घोषणापत्र के आधार पर मौलाना हसरत मोहानी ने

अहमदाबाद अधिवेशन मे पूर्ण स्वतन्त्रता के लिए प्रस्ताव पेश किया। इस प्रस्ताव का गॉधी ने प्रबल विरोध किया जिससे वह पारित नहीं हो सका। इससे वामपन्थियो को एक चेतावनी मिल गई। बगरहट्टा के सामने दोनो स्थितियाँ साफ थी—अजमेर काग्रेस की और डाँगे-राय की।

जानकीप्रसाद बगरहट्टा इस बात से भली-भॉति परिचित थे कि स्वतन्त्रता सग्राम मे मजदूरो की हडतालो का जबरदस्त प्रभाव एव दबाव है। पिछले साल सन् 1920 मे जहॉ मजदूरो की हड़तालो की सख्या 200 थी वही वह 1921 मे बढकर 400 तक पहुँच गई। इन स्वत स्फूर्त हडतालो को सेना और पुलिस ने बेरहमी से कुचल दिया और हजारो लोगो को गिरफ्तार कर लिया गया।

बगरहट्टा ने काग्रेस मे शामिल होकर जिस अजमेर को अपना कार्यक्षेत्र बनाया था, वहॉ एक अजीब परिस्थिति थी। काग्रेस का केन्द्रीय नेतृत्व राज्यो की जन-चेतना को न तो पूरी तरह समझ पा रहा था न ही खुल कर शिरकत कर रहा था। वह लगभग उदासीन तटस्थता का रवैया अपना रहा था अलबत्ता कोई नेता औपचारिक सहानुभूति दिखाकर किसी नेता की पीठ थपथपा दिया करता था। दूसरी ओर अजमेर के स्थानीय नेताओ की आपसी उठा-पटक जन-चेतना के विकसित होने मे अवरोधक का काम कर रही थी।

किन्तु बगरहट्टा की नजर राष्ट्रीय घटनाओ पर टिकी थी। राजस्थान मे उनके प्रेरणास्रोत थे अर्जुनलाल सेठी और विजयसिह पथिक किन्तु दोनो को निहित स्वार्थी नेताओ की गुटबाजी और चुनावी तिकडमबाजी ने घेर रखा था। षड्यन्त्रो की कामयाबी सच्चे नेताओ की कुण्ठाओ का कारण बनती जा रही थी। इस परिस्थिति मे बगरहट्टा जैसे राष्ट्रीय चेतनासम्पन्न व्यक्ति के लिए घुटनभरे सीमित दायरे मे पडे रहना सम्भव नहीं था।

फिर भी उन्होने अपनी ओर से काग्रेस की सदस्यता को आगे बढाया बहिष्कार आन्दोलन को सफल बनाने के लिए जगह-जगह सभाएँ आयोजित की और प्रशिक्षण कार्य किया इससे युवा वर्ग मे से कई लोग आगे आए। किन्तु स्थानीय नेताओ ने उनमे भी बन्दर-बाँट करके बिखराव पैदा करने की प्रक्रिया शुरू कर दी।

जब 'राजपूताना मध्यभारत सभा अजमेर के मन्त्री श्री चाँदकरण शर्मा ने प्रथम राजपूताना राजनीतिक सम्मेलन 1921 का आय-व्यय विवरण पेश किया तो उन्होने आम-लोगो से अपील करते हुए कहा कि वे यथाशक्ति सभा को सहायता दे नहीं तो सभा का कार्य धनाभाव के कारण

रुक जायेगा। बगरहट्टा के सामने यह भी विकट समस्या थी क्योकि कोई भी कार्यक्रम साधनाभाव मे छोटा करके ही समेटना पडता था।

दूसरी ओर उत्तरप्रदेश मे किसानो के आन्दोलन जोर पकड रहे थे। अगस्त, 1921 मोपलाओ (मालाबारी मुसलमानो) का विद्रोह शुरू हो चुका था जिसमे मोपला किसान और कुछ मुस्लिम धार्मिक नेता शामिल थे। पहले इसका स्वरूप धार्मिक था किन्तु फिर सामन्तवाद विरोधी हो गया। उधर मजदूरो की हडताले दिन–प्रतिदिन जोर पकडती जा रही थी, जैसा कि कहा जा चुका है कि जहाँ सन् 1920 मे 200 हडताले हुई वहाँ सन् 1921 मे उससे दुगुनी यानी कि 400 का आँकडा पार कर गईं।

यह विषम परिस्थिति बगरहट्टा जैसे व्यग्र व्यक्तित्व के लिए असहनीय हो गई। उन्होने अजमेर के दलदलभरे राजनीतिक क्षेत्र को छोडने का निर्णय ले लिया और वहाँ से रेवाडी चले आए।

उस समय रेवाडी पजाब मे था, अत बगरहट्टा का मुख्य स्थान रेवाडी होने के नाते वे पजाब प्रान्त की काग्रेस कमेटी के सदस्य बन गए। अपनी कार्यकुशलता नेतृत्वकारी क्षमता और वाक्पटुता की वजह से शीघ्र ही अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी (AICC) के सदस्य मनोनीत कर लिए गए।

पजाब का यह रेवाडी अचल आस–पास के अन्य प्रान्तो और अचलो की राजनीतिक–सागठनिक गतिविधियो का सम्पर्क–सूत्र बन चुका था। राजस्थान दिल्ली और उत्तरप्रदेश आदि राज्यो का विशाल क्षेत्र प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानियो के कार्यकलापो का मच बन चुका था। गगानगर अलवर और अजमेर जैसे राजस्थान के नेता और कार्यकर्ता, दिल्ली और उत्तरप्रदेश के सीमान्त जिलो के नेता और कार्यकर्ता अपने कामो और विचारो की कडियाँ जोडते रहते थे। इसका मुख्य कारण था— जलियाँवाला बाग और उसके बाद की ज्वलन्त घटनाओ से सारे पजाब प्रान्त का ज्वालामुखी बन जाना और पजाब की क्रान्तिकारिता की भावना *की लहर का समग्र भारत को प्रभावित करना। भारत को ही क्यो पजाब ने* तो रूस के क्रान्तिकारी नेता व्लादीमीर इलिच लेनिन तक को यह कहने को उद्वेलित कर दिया था—

औपनिवेशिक देशो के मुक्ति आन्दोलनकारी देशो मे सबसे पहला स्थान ब्रिटिश भारत का है और वहाँ क्रान्ति उतनी ही तेजी के साथ बढ रही है जितने उल्लेखनीय रूप मे एक तरफ औद्योगिक तथा रेलवे सर्वहारा बढ रहा है और दूसरी तरफ अग्रेजो का पाशविक अत्याचार बढ रहा है जो

अधिकाधिक मौको पर कत्लेआम (अमृतसर), सरे-बाजार कोडे लगवाने आदि का सहारा ले रहे हैं।'

(लेनिन कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की तीसरी काग्रेस 1921 ई मे भाषण का अश)

ऐसे ज्वलनशील पजाब के तेज-तर्रार प्रकृतिवाले राजनीतिक रणक्षेत्र रेवाडी मे जूझने के लिए कदम बढाया नौजवान जानकीप्रसाद बगरहट्टा ने जिन्होने यहाँ आकर अपनी राजनीतिक पहचान बनाई जे बगरहट्टा के रूप मे।

जे *बगरहट्टा ने गाँधीजी के सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आन्दोलन* के कार्यक्रम को जीवन्त बनाने के लिए जनता के साथ घनिष्ठ सम्पर्क कायम किया। इस रात-दिन की सम्पर्क व्यस्तता ने उनको इस बात के लिए प्रेरित किया कि *समाज को सगठनबद्ध किए बिना पार्टी के काम को* आगे नही बढाया जा सकता। उन्हे यह भी महसूस होने लगा कि समाज के सबसे उपेक्षित समुदाय हरिजन को सगठित किए बिना सत्याग्रह की सविनय अवज्ञा कार्यनीति को सही रूप मे अजाम नही दिया जा सकता। *अत उन्होने परिश्रम करके रेवाडी मे Sweepers and Scavangers Union* (रेवाडी सफाईदार और हरिजन सघ) की स्थापना की। उनकी माँगो का ज्ञापन तैयार किया और सरकारी अधिकारियो के सामने दृढता के साथ प्रस्तुत किया। किन्तु अधिकारी वर्ग ने ज्ञापन को रद्दी की टोकरी मे डाल दिया। बार-बार प्रतिनिधिमण्डल मिला लेकिन बजाय इसके कि उनकी बात को सुना जाय उलटे उन्हे अपमानित कर लौटा दिया गया।

फिर क्या था सफाईकर्मियो और हरिजनो ने पहले धरना देकर चेतावनी दी क्रमिक भूख हडताले की क्रमिक अनशन आन्दोलन चलाया गया और गिरफ्तारियो का सिलसिला चालू किया। लेकिन जब बडे जुलूस निकलने लगे तो *उच्च वर्ग के लोगो ने प्रतिरोधी मोर्चा तैयार कर लिया और* सरकार को हथियार बनाकर तरह-तरह से दमनात्मक कार्यवाहियाँ की जाने लगी। अब जे बगरहट्टा ने खुलकर नेतृत्व सँभाल लिया। उन्होने *ज्ञापन का सशोधित रूप सामने रखा—*

1 सगठन के सभी गिरफ्तार नेताओ को बिना शर्त रिहा किया जाये।
2 सफाई कर्मचारियो की न्यूनतम मजदूरी तय करने के लिए त्रिपक्षीय आयोग बनाया जाये।
3 मैला ढोने की प्रथा तत्काल बन्द की जाये।

4 ड्रेनेज सिस्टम का निर्माण किया जाये।

5 हर तरह का सामाजिक भेदभाव समाप्त किया जाये।

6 सफाईकर्मियो और हरिजनो के लिए पक्के मकान बनवाए जाये और

7 सफाई कर्मचारी और हरिजन' सघ को ट्रेड यूनियन माना जाये।

इस आन्दोलन की खबरे ज्यो-ज्यो अन्य हिस्सो मे पहुँचने लगीं महेन्द्रगढ़ गुड़गाँव व अन्य स्थानो से नेता और कार्यकर्ता आने लगे। पजाब की राजनीतिक घटनाओ की उग्रता से प्रशासन पहले से ही परेशान और बदनाम था। इस आन्दोलन ने उत्तेजना को और बढा दिया। अखबार वालो ने बढ-चढ कर खबरे छापनी चालू कर दी।

अब पजाब की प्रान्तीय कमेटी ने भी रेवाड़ी के इस आन्दोलन को खुला समर्थन देकर इसे प्रादेशिक राजनीति से जोड़ दिया। क्योकि जे बगरहट्टा इस आन्दोलन के न केवल जन्मदाता थे अपितु कार्यनीति निर्देशक और भौतिक और बौद्धिक नेता भी थे।

आखिर जब आन्दोलनकारियो की गतिविधियाँ तोड़-फोड की ओर मुडने लगी तो बगरहट्टा ने हडताल करने का अल्टीमेटम दे दिया।

ज्यो ही अल्टीमेटम की घोषणा हुई धडाधड गिरफ्तारियो का दौर चल पडा। जे बगरहट्टा को भूमिगत होना पडा और गुप्तचर उनको पकड़ने के लिए जगह-जगह तलाशियाँ लेने लगे।

आखिर अल्टीमेटम का समय खत्म हुआ और निर्धारित तिथि की आधी रात से सफाईकर्मियो और हरिजनो ने हडताल शुरू कर दी।

हड़ताल के होते ही शहर मे गन्दगी फैलने लगी और प्रशासन के अधिकारियो ने वैकल्पिक व्यवस्था करने की अफवाहे फैलानी शुरू कर दी किन्तु इससे हड़तालियो पर कोई असर नही पडा।

शुरू मे हडताल 50 प्रतिशत हुई जिसे किसी अखबार ने 20 प्र श बताया तो किसी ने 10 प्र श और रेडियो ने बेअसर कहा। किसी ने हडतालियो मे फूट पडकर उसे एकदम नितान्त असफल करार दे दिया। किन्तु दूसरे-तीसरे दिन हडताल जोर पकड गई और उसके 80 से 90 प्रतिशत तक सफल होने का दावा किया गया जबकि मीडिया ने उसे 40 प्रतिशत तक सफल मान लिया। हडताल विरोधी हडताल खतम करवाने की हरकते करते जा रहे थे जबकि हड़ताली दलालो और गुप्तचरो की

मार-पीट भी करने लगे थे। एक स्थान पर तो झगड़ा इतना बढा कि दोनो ओर के घायलो को अस्पताल भिजवाना पड़ा। इधर गिरफ्तार नेताओ मे से एक ने जेल-अधिकारियो की ज्यादती के खिलाफ अनशन कर दिया। अगले दिन एक अखबार वाले ने इस खबर को बढा-चढाकर सचित्र छाप दिया। इससे माहौल और गरमा गया।

सातवे दिन अनशनकारी की हालत बिगड़ने लगी। दुबले-पतले शरीर वाले इस अनशनकर्ता का वजन घटने लगा। फोर्स फीडिग की सारी कोशिशे फेल हो गईं। अखबार वाले ने उसकी चिन्ताजनक स्थिति को और भी गहरा रग दे दिया।

हडतालियो ने रोषभरे तेवर मे जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शन अत्यन्त जोशो-खरोश से भरपूर था जोशीले नारो से वातावरण गूँजने लगा था। पूरी परिक्रमा के बाद ज्योही जुलूस सभा मे परिवर्तित होने लगा। पता नहीं एकाएक पत्थरो की बौछार होने लगी तो दूसरी ओर से फिर पत्थर आने लगे। अब पुलिस को लाठीचार्ज का बहाना मिल गया। लाठीचार्ज होते ही भीड मे कुछ नौजवान लाठियाँ छीनकर पुलिस वालो से उलझ पडे। इस मारपीट और भागदौड से घबराकर बाजार तो पहले ही बन्द हो चुका था।

प्रशासन को यह परेशानी हो रही थी कि आखिर हडताल को सचालित करने वाला कौन है और कहाँ छिपा हुआ इस आन्दोलन को निर्देशित कर रहा है?

उधर एक ओर जहाँ हड़ताल जोर पकडती जा रही थी तो जेल मे अनशनकारी की स्थिति दिन-प्रतिदिन बिगड़ती जा रही थी। आखिर उसे अस्पताल भेज दिया गया। वहाँ बावजूद डॉक्टरो की कोशिश के उसने अनशन नही तोडा। तीसरे दिन उसे वापिस जेल भेज दिया गया और आखिर पाँचवी रात को उसने दम तोड दिया।

जेल मे हडताली की मौत की खबर आग की तरह फैल गई। उसके शव को पहले तो परिवार वालो को नहीं लौटाया गया किन्तु जब सारे नागरिको ने जेल पर पडाव डाल कर रास्ता जाम कर दिया और रेवाडी से बाहर भी आन्दोलन फैलने की खबरे आने लगी तो पोस्टमार्टम करवा कर शव को परिवार को सौंप दिया गया।

हडताली नेताओ ने मृतक के परिवार से शव को लेकर उसे शहीद का

डालेगे। अभी तो हम उन्हे यहाँ की जनता की ओर से आश्वस्त कर रहे है। लेकिन यहाँ के प्रशासनिक अधिकारियो को सद्बुद्धि नहीं आई तो ईट से ईट बजा दी जायेगी और इस सबकी जिम्मेवारी प्रशासन और सरकार की होगी। शहीद के बलिदान के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि यही होगी कि हम हमारा सघर्ष जारी रखे। जब तक हमारी माँगे न मान ली जाये और साथियो को बिना शर्त रिहा न कर दिया जाये तब तक हड़ताल जारी रहेगी। आप निश्चिन्त होकर लड़े आपके परिवार मे से किसी को भूख और बीमारी का शिकार नही होने दिया जायेगा। मैं हर हालत मे आपके साथ जीऊँगा आपके साथ जूझता रहूँगा। साथियो सावधान इनकलाब जिन्दाबाद।''

दूसरे दिन लोगो ने अखबारो मे पढ़ा— जे बगरहट्टा गिरफ्तार कर लिए गए।' इस सुर्खी के नीचे के समाचार मे लिखा था कि यूनियन का वह कार्यकर्ता जिसे जे बगरहट्टा ने विश्वासपात्र बना रखा था चन्द पैसो के लालच मे आकर उसने उनके छिपने के स्थान का पता बता दिया और रात के तीन बजे पुलिस ने वहाँ जाकर उन्हे गिरफ्तार कर लिया। इतना ही नही उन्हे किसी दूर के स्थान मे ले जाकर बन्द कर दिया।

जल्दी ही स्थानीय रेडियो प्रसारण ने इसको अपनी पहली खबर बनाया। जे बगरहट्टा पर आरोप था कि हरिजनो की माँगो का बहाना बनाकर उनको तोड-फोड करने को उन्होने ही उकसाया है। वे सामान्य प्रशासन को तहस-नहस कर अराजकता पैदा करना चाहते है। उनका छिपा हुआ मकसद है ब्रिटिश सरकार के खिलाफ बगावत पैदा करना।

खबर आग की तरह फैल गई। प्रदर्शन घेराव और जगह-जगह आगजनी की घटनाएँ जोर पकडने लगी। इधर शहर गन्दगी का ढेर बन गया और तरह-तरह की बीमारियो के होने की सच्ची-झूठी बाते फैलने लगी। आखिर अस्पताल मे बीमारो की सख्या दिनोदिन बढने लगी। अफवाहे सच्चाई मे बदलने लगी।

इधर केन्द्रीय नेताओ ने केन्द्रीय हस्तक्षेप के लिए दबाव डाला और जनता के आक्रोश ने अपना असर पैदा किया। समझौता वार्ता के लिए एक सयुक्त समिति का गठन किया गया। किन्तु यूनियन के नेताओ का जोर इस बात पर था कि जब तक जे बगरहट्टा को समिति मे शामिल न किया जायेगा तब तक कोई बात नहीं होगी। काफी जद्दोजहद के बात समिति का गठन पूरा हुआ जिसके प्रवक्ता श्री जे बगरहट्टा थे।

द्विपक्षीय वार्ताओ का दौर शुरू हुआ। पहले दौर की बात मे केवल यही तय हुआ कि प्रशासन और यूनियन अपने-अपने तथ्यो को तर्क के साथ लिखित रूप मे पेश करे। इसके लिए पन्द्रह दिन की अवधि तय की गई।

एक पखवाडे के बाद जब मीटिग हुई तो प्रशासन अपनी आर्थिक ऑकडेबाजी का रोना रोता रहा और आखिर बात अनिश्चित काल के लिए टाल दी गई। इस पर बगरहट्टा ने तेवर बदल लिए और हडताल को जन-आन्दोलन का रूप दे दिया अर्थात् टैक्स अदा न करने का आह्वान कर दिया।

अब क्या था समाचार एक से एक बढकर सुर्खियॉ देने लगे। सप्ताह-भर मे जनता का उभार टैक्स विरोधी सत्याग्रह मे अधिक जोरो से प्रभाव दर्शाने लगा। सारे देश मे यह मुद्दा प्रमुख तवज्जो का मुद्दा बन गया।

भारी दबाव के कारण चौथे दौर की बात मे कुछ मॉगो पर द्विपक्षीय समझौता हुआ। जो मॉगे मानी गईं वे थी—(1) सफाई कर्मचारी और हरिजन सघ' को ट्रेड यूनियन मान लिया गया। (2) सभी गिरफ्तार हडतालियो को बिना शर्त रिहा कर दिया गया। (3) सार्वजनिक स्थानो पर जातिगत भेदभाव समाप्त करने और मैला ढोने की प्रथा समाप्त करने के लिए विधायी प्रारूप समिति का गठन किया गया। (4) वेतन निर्धारण और पक्का मकान बनाने के लिए वित्त और राजस्व विभाग व कर्मचारी प्रतिनिधियो की द्विपक्षीय वार्ताओ का दौर चालू करने का साझा निर्णय लिया गया। इसके लिए एक समिति गठन करने हेतु दस दिन की अवधि तय की गई।

इस फैसले को यूनियन ने अपनी पहली जीत माना और गिरफ्तार साथियो की रिहाई होने पर एक विजय जुलूस निकाला गया जिसका नेतृत्व जे बगरहट्टा कर रहे थे जिनको इस आन्दोलन को सगठित करने सचालित करने और अजाम तक पहुँचाने मे छ माह तक जेल-यातना भोगनी पड़ी थी। इस प्रकार का यह पहला प्रदर्शन था और प्रत्येक प्रदर्शनकारी के अग-प्रत्यग मे उल्लास छलक रहा था और चेहरे पर आत्मगौरव की लालिमा। एक तरफ कर्मचारी नाचते-गाते व बीच मे इनकलाबी नारे लगाते चल रहे थे तो दूसरी ओर कट्टर वर्गों के सीनो पर साँप फुफकार रहे थे। अधिकारी वर्ग हतप्रभ था मानो उन्हीं का घर लुट रहा हो।

आन्दोलन की इस सीमित कामयाबी को भी अखबारनवीसो ने बढ़ा-चढा कर इस रूप मे पेश किया कि अन्य अनेक स्थानो पर जागृति की लहर हिलोरे लेने लगी। जगह-जगह से यूनियनो के गठन के समाचार आने लगे और उनकी मॉगो के ज्ञापन पेश करने की खबरे पढ़ने को मिलने लगी।

जे बगरहट्टा दिन-प्रतिदिन जननेता के रूप मे लोकप्रिय होने लगे और रेवाड़ी हरिजन आन्दोलन का जुझारू केन्द्र। जे बगरहट्टा के पास कई राष्ट्रीय नताओ के प्रशस्ति सन्देश आए। इनमे लाला लाजपतराय छोटूराम और फिरोज खाँ नून आदि प्रमुख थे। पजाब प्रान्तीय कमेटी ने बधाईपत्र भेजा। सभी को एक विस्मयकारी गर्व की अनुभूति हो रही थी कि एक इक्कीस-बाईस साल की उम्र वाले नौजवान ने ऐसा कमाल कर दिखाया जैसा पचास साल की उम्र वालो के लिए भी कर दिखाना बड़ा मुश्किल होता। सारे पजाब मे जे बगरहट्टा चर्चित व्यक्तियो मे मशहूर हो गए। रेवाड़ी म तो बच्च-बच्चे की जबान पर जे बगरहट्टा के जिन्दाबाद।' का नारा सुनाई देने लगा था।

जे बगरहट्टा नारेबाजी और प्रशस्तिपत्र से जितने ज्यादा चिढते या छिपते पिण्ड छुडाने की कोशिश करते और सार्वजनिक तौर पर मना करते उतनी ही व्यापकता से यह रोग फैलता जा रहा था। जे पी इससे बेहद परेशान थे लेकिन चारा क्या था?

रेवाड़ी मे नगरपालिका के चुनाव हुए और इसमे जे बगरहट्टा को निर्विरोध पालिकाध्यक्ष निर्वाचित कर लिया गया। इससे पुराने दिग्गज नेताओ के मन मे जलन पैदा हुई। वे सोचने लगे कि इस नई उम्र के नए नेता को असफल कैसे किया जाय? साम दाम और दण्ड-भेद वाली पुरानी नीतियो पर चलकर ही यह सम्भव दिखाई दिया।

बगरहट्टा ने अपने सचिव के साथ कुछ अनुभवी और विश्वसनीय व्यक्तियो की टीम बनाई। इस टीम मे वे यूनियन के अगुआ थे जिन्होने पिछली हड़ताल मे जोखिमभरी भूमिका अदा की थी। उनका सबस बड़ा आधार सफाई कर्मचारियो के सघर्ष के दौर से निकला हुआ बड़ा तबका था।

बगरहट्टा की टीम ने पालिका का सीमान्त तक भौगोलिक सर्वे किया नगर की समस्याओ का गहराई से अध्ययन किया। पालिका की श्रमशक्ति और ससाधनो का वस्तुगत आकलन किया और सप्ताह-भर मे एक वार्षिक कार्ययोजना का प्रारूप तैयार कर लिया।

जब इस कार्ययोजना को सशोधन-परिवर्द्धन के साथ टीम की और साथ ही गणमान्य नागरिको की स्वीकृति मिल गई तो उपसमितियो की रचना कर उनमे काम का बॅटवारा कर दिया गया। योजना के प्रथम दौर मे सफाई और स्वच्छता समिति प्राथमिक शिक्षा और साक्षरता समिति, जल प्रबन्धन समिति और सार्वजनिक विद्युत वितरण समिति का गठन किया गया। प्रत्येक समिति के सयोजक को अपनी समिति के कार्यक्षेत्र की कार्यसूची और कार्यप्रणाली का ब्योरा सौप दिया गया और उन्हे परिस्थितिजन्य सामान्य फेर-बदल की छूट दे दी गई।

सारी समितियो को हिदायत दे दी गई कि पालिकाध्यक्ष जे बगरहट्टा अपने सचिव के साथ क्रियान्विति की मॉनीटरिग करेगे और महीने के अन्त मे समीक्षा मीटिग की जायेगी। मॉनीटरिग के अलावा अध्यक्ष ने ससाधन जुटाने का काम अपने जिम्मे लिया।

2 अक्टूबर—गॉधीजी के जन्मदिन पर एक सादे समारोह के साथ काम का अभियान शुरू किया गया। प्रत्येक मौहल्ले मे झाडू चलता दिखाई दिया और उसी रात को कच्ची बस्ती मे साक्षरता की शुरुआत की गई। न कोई फोटो खीचा गया और न कोई प्रेस विज्ञप्ति दी गई। सारा काम सहजभाव से किया गया। दूसरे दिन शुरुआती काम ने खुद ही अपनी जानकारी दी।

समितियो के पहले पखवाडे की हरकतो ने यह जता दिया कि कुछ हो रहा है कुछ बदलता-सा लग रहा है। काम मे अडचनो के पैदा होने से या पैदा कर दिए जाने से नई चुनौतियो का सामना करना पड रहा था, किन्तु सूझ-बूझ और मजबूत इरादे आपात् सहयोग और समाधान भी प्राप्त करते दिखाई दे रहे थे।

10 नवम्बर को सभी समितियो के सदस्यो की समीक्षा सभा रखी गई जिसमे हर सयोजक ने अपनी लिखित रिपोर्ट पेश की, जिस पर आलोचना और समाधान दोनो एक साथ पेश किए गए। सारी रिपोर्टो, आलोचनाओ और सुझावो के बाद पालिकाध्यक्ष ने सोदाहरण हरेक काम के बारे मे अपनी ठोस टिप्पणी पेश की जिसमे सराहना के साथ सर्वेक्षण भी था। कुल-मिलाकर स्थिति सन्तोषप्रद थी।

इसी प्रकार ज्यो-ज्यो काम-दर-काम और सुधार-क्रम-सुधार चलता रहा, रेवाड़ी की शक्ल बदलती रही और साथ ही पालिकाध्यक्ष के

रूप मे जे बगरहट्टा की लोक–प्रतिष्ठा का ग्राफ भी ऊँचा उठता गया। इस विषय मे श्री उपध्यानचन्द कोचर के निबन्ध— बहुमुखी प्रतिभा के धनी जानकीप्रसाद बगरहट्टा' की निम्नाकित टिप्पणी नितान्त सही आकलन प्रस्तुत करती है—

रिवाडी मे बगरहट्टा ट्रेड यूनियन और हरिजन उत्थान मे लग गए। उन्होने सफाई कर्मचारियो को सगठित किया और उनके सघर्ष उनके आन्दोलन का नेतृत्व किया। अल्प अवधि मे ही वह अत्यन्त लोकप्रिय हो गए। वह रेवाड़ी नगरपालिका के अध्यक्ष निर्वाचित हुए और दो वर्ष तक इस पद पर रहे। उनके कार्यकाल मे रेवाडी ने अपूर्व प्रगति की और बगरहट्टा को नगरीय शासन पर सोचने का अवसर दिया। इस विषय पर उनके विचार विकेन्द्रीकरण के आधारभूत सिद्धान्तो और प्रक्रिया के गहन अध्ययन के परिणाम थे।' (उपर्युक्त निबन्ध से साभार)

बगरहट्टा सन् 1923–24 मे काग्रेस के कार्यकलापो मे अत्यन्त व्यस्त रहे। वे काग्रेस के गरमदल के प्रसिद्ध नेताओ के सम्पर्क और निरन्तर सहयोग मे रहने के कारण उग्रवादियो की श्रेणी मे माने जाते थे। अपनी प्रखर प्रतिभा और तीव्र गतिशीलता के कारण पहले पजाब काग्रेस कार्यसमिति के और फिर अखिल भारतीय काग्रेस कार्यसमिति के सदस्य बना दिए गए। उन्होने सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी और साथ ही गरमदली काग्रेसी नेता श्री अर्जुनलाल सेठी क साथ काफी अरसे तक काम किया।

अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन काग्रेस (AITUC), पजाब काग्रेस समिति और सबसे बढकर AICC (अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी) के सदस्य होने और अपनी मौलिक चिन्तनशक्ति व स्पष्टवादिता के कारण उनका सम्पर्क–सूत्र व्यापक और दृढतर हो गया था। लाला लाजपतराय छोटूराम फिरोजखाँ नून सुभाषचन्द्र बोस सी आर दास एम एन राय श्रीपाद अमृत डॉगे, जयप्रकाशनारायण राममनोहर लोहिया अशोक महता, एस एन द्विवेदी अरुणा आसफअली आदि। वैसे अर्जुनलाल सेठी और जयनारायण व्यास के तो काफी समय तक हमराही रहे ही। एक प्रारम्भिक सूचना के अनुसार बीकानेर मे जन्मे स्वतन्त्रता सेनानी शौकत उस्मानी और श्री जानकीप्रसाद बगरहट्टा बीकानेर की स्कूल मे सहपाठी थे। (स्रोत—Documents of the History of C P I by G Adhikari Ref Muzaffar Ahmad Page 367)

चढाव

जे बगरहट्टा की प्रतिभा की प्रखरता और अध्ययनशीलता का इससे बडा प्रमाण क्या होगा कि बिना किसी डिग्री को हासिल किए बीस साल की उम्र तक पहुँचते-पहुँचते मार्क्स-एंगेल्स के कम्युनिस्ट पार्टी के घोषणापत्र , कार्लमार्क्स की पूँजी पेरिस कम्यून मई दिवस या मजदूर दिवस का इतिहास' और रूस की अक्टूबर क्रान्ति' आदि रचनाओ के अग्रेजी सस्करणो को न केवल पढा ही अपितु जज्ब भी किया। इसके अलावा देश-विदेश की राजनीतिक गतिविधियो की गहराई से जॉच-पडताल की। इस चिन्तन-वैविध्य को अपनाते हुए उन्होने मैदानी राजनीतिक उथल-पुथल मे भी सक्रिय हिस्सा लेना आरम्भ कर दिया था। वे रूस मे क्रान्तिकारी प्रवासी भारतीयो की गतिविधियो से भलीभॉति सम्पर्क बनाए हुए थे।

जे बगरहट्टा के जिन बडे-बड़े राजनीतिज्ञो के साथ गहरे सम्बन्ध थे उनमे से तीन का विशेषतौर पर उल्लेख करना आवश्यक है ये है—श्री मानवेन्द्रनाथ राय (एम एन राय) श्री अर्जुनलाल सेठी और श्री श्रीपाद अमृत डॉगे (डॉगे')। जे बगरहट्टा की राजनीतिक चढ़ाइयो मे इन तीनो का विशेष महत्त्व है। उन्होने श्री अर्जुनलाल सेठी के साथ तो डेढ दशक (15 वर्षो) तक वैचारिक और राजनीतिक सघर्षो मे एक साथ काम किया ही था अत इनका अलग से अध्ययन किया जा सकता हे क्योकि इनमे अनेक उतार-चढाव रहे है। यहॉ इस स्तर पर एम एन राय और डॉगे के साथ उनके सम्पर्को का उल्लेख करना समीचीन होगा।

सन् 1924 के दिसम्बर मे जब अखिल भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस का बेलगॉव अधिवेशन चल रहा था तो जे बगरहट्टा जोगलेकर और अर्जुनलाल सेठी ने एम एन राय द्वारा प्रारूपित Appeal to the Nationalists को उसके अन्तिम अनुच्छेद को हटाकर बेलगाँव अधिवेशन के सभी प्रतिनिधियो मे वितरित कर दिया। यह अपील एम एन राय के नाम से जारी की गई, जिसे के एन जोगलेकर ने लेबर प्रेस मुम्बई' मे पुनर्मुद्रित कराया और इसे जे बगरहट्टा और अर्जुनलाल सेठी द्वारा प्रकाशित किया गया।

(स्रोत—Documents of History of C P I 1923 25 P 368 मूलपाठ सलग्नक मे)

इस अपील ने बेलगाँव के काग्रेस अधिवेशन मे भारी हलचल पैदा कर दी। काग्रेसियो मे यह एक तरह का क्रान्तिकारी विस्फोट था।

बगरहट्टा के द्वारा किया हुआ यह वह धमाका था जिसे उस सभा के भागीदार काग्रेसी कम्युनिस्ट प्रतिनिधियो को भी विस्मित और उत्साहित कर दिया। यह बगरहट्टा और के एन जोगलेकर की उस भूमिका का वह सकेत था कि दोनो की वाममुखी जड़े कितनी गहरी और पूर्वनिर्धारित थीं। हो सकता है कि श्री बगरहट्टा की पूर्व–पृष्ठभूमि से कई वामपन्थी भी अपरिचित हो जिनमे कॉमरेड मुजफ्फर अहमद जैसे कानपुर षड्यन्त्र के अभियुक्त भी हो, किन्तु उसी कानपुर बोल्शेविक षड्यन्त्र केस' के सह अभियुक्त श्रीपाद अमृत डाँगे और शौकत उस्मानी तो उनसे भलीभाँति परिचित थे और एम एन राय का तो पहले से ही सम्पर्क था। अच्छा होता कॉ मुजफ्फर अहमद कॉ डॉगे और उस्मानी से उनका परिचय प्राप्त कर लेते।

वैसे बारडोली प्रस्ताव के बाद से ही एक ऐसी स्थिति पैदा हो गई थी कि काग्रेस मे असहयोग आन्दोलन के क्रान्तिकारी और वामपन्थी भागीदारो का गॉधीजी की असमजसभरी नेतृत्व की कार्यप्रणाली से विश्वास उठ गया था।

फिर सन् 1921 मे प्रकाशित श्रीपाद अमृत डाँगे की पुस्तक गाँधी वर्सेज लेनिन' सन् 1922 मे डाँगे द्वारा शुरू किए गए अग्रेजी साप्ताहिक 'सोशलिस्ट और इससे पहले 1917 की अक्टूबर क्रान्ति 1920 मे ताशकन्द मे हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना भारत मे एटक का गठन पेशावर षड्यन्त्र केस और प्रवासी एम एन राय व अन्य कॉमरेड्स की तत्कालीन गतिविधियो ने तथा क्रान्तिकारियो की भूमिगत कार्रवाइयो ने एक अच्छी–खासी वामपन्थी पूर्वपीठिका का वातावरण तैयार कर दिया था। बगरहट्टा इन सबके न केवल साक्षी ही थे बल्कि इनसे प्रभावित भी थे, वे 1921 से बहिष्कार आन्दोलन के हिस्सेदार भी थे। बगरहट्टा लालाजी द्वारा प्रशिक्षित और अर्जुनलाल सेठी जैसे क्रान्तिकारी के सहयोगी थे।

इसी कालावधि मे अन्य बड़े औद्योगिक केन्द्रो मे भी मार्क्सवादी दल पैदा हो गये थे। 1922 मे शौकत उस्मानी ने मास्को से लौटने के बाद बनारस मे एक कम्युनिस्ट दल स्थापित किया। इसी समय लाहौर मे भी गुलाम हुसैन के नेतृत्व मे एक कम्युनिस्ट सैल ने काम शुरू किया जिनका मुहम्मद अली (सेपासी) और बगरहट्टा के साथ घना सम्पर्क था वे ताशकन्द से काबुल आए थे। लाहौर दल का मुखपत्र इनकलाब (उर्दू)

गुलाम हुसैन द्वारा प्रकाशित था। इन्ही दिनो मुजफ्फर अहमद के नेतृत्व मे कलकत्ता मे कम्युनिस्ट दल का गठन किया गया था। 1923 मे मुजफ्फर अहमद ने गणवाणी' बगला पत्र प्रकाशित किया। मद्रास मे सिगारावेलु चेट्टियार ने मार्क्सवादी दल कायम किया। महाराष्ट्र मे डाँगे का सोशलिस्ट ग्रुप सक्रिय था ही।

इन उपर्युक्त कम्युनिस्ट ग्रुपो और नेताओ का प्रवासी भारतीय कम्युनिस्ट दलो और नेताओ के साथ लगातार पत्र-व्यवहार चलता रहता था। दोनो ओर के पत्रो को सेसर किया जाता था और कम्युनिस्टो के खिलाफ चलाए जाने वाले तथाकथित बोल्शेविक षड्यन्त्र केसो' मे उनको तोड-मरोडकर और उनके मनमाने अर्थ निकालकर उनका उपयोग किया जाता था।

8 सितम्बर, 1924 को जे बगरहट्टा ने अजमेर से एम एन राय के नाम एक खुला पत्र (An Open Letter to M N Roy) भेजा। इस पत्र को श्रीपाद अमृत डाँगे द्वारा सपादित Socialist Vol 2 No 38 के अक मे दिनाक 24 सितम्बर 1924 को उनके सह-सम्पादक के एन जोगलेकर ने प्रकाशित कर दिया। इसमे बगरहट्टा ने अपना पता लिखा है— जानकीप्रसाद बगरहट्टा द्वारा काग्रेस ब्यावर राजपूताना और एम एन राय को लिखे इस पत्र मे हस्ताक्षर इस रूप मे किए गए हैं—

I am
Your devoted comrade
J P Bagerhatta
Member All India Congress Committee

जे बगरहट्टा के इस पत्र सोशलिस्ट' के सम्पादक का विमर्श और एम एन राय के बगरहट्टा और डाँगे को लिखे पत्रो का मूल पाठ भी इसलिए सलग्न किया जा रहा है ताकि इनमे अकित मौलिकताओ को तदनुरूप ही ग्रहण किया जा सके। ये मूलपाठ Documents of History of Communist Party of India by G Adhikari से साभार उद्धृत किए गए हैं।

बगरहट्टा के इस खुले पत्र मे अन्य बातो के अलावा चार बिन्दु प्रस्तुत किए गए—

1 प्रत्येक प्रान्तीय केन्द्र पर कम्युनिस्ट कार्यालयो की स्थापना की जाय ताकि वहाँ से सब तरह के मजदूर-किसान सम्बन्धी कामो को सगठित व सचालित किया जा सके।

2 कम्युनिस्ट विचारधारा को फैलाने के लिए तत्सम्बन्धी साहित्य को नमाज के समय वितरित किया जाय।

3 काग्रेस के भीतर एक मजबूत कम्युनिस्ट पार्टी बनाई जाय ताकि उस सगठन के हर तन्त्र पर काबू कर लिया जाय और

4 लोगो पर पड़ने वाले धार्मिक प्रभाव को समाप्त करने के लिए सर्वतोमुखी प्रयास किए जाने चाहिए।

इन सुझावो के क्रियान्वयन के लिए हिन्दी–उर्दू मे पत्र–पत्रिकाओ मे रचनाएँ प्रकाशित करना और मजदूरो और बच्चो के शिक्षण के लिए रात्रि–स्कूले चलाना भी उपयोगी होगा।

बगरहट्टा के इसी पत्र को एम एन राय ने अपनी पत्रिका Vanguard' वोल्यूम 5, के अक सख्या 5 मे दिनाक 15 नवम्बर, सन् 1924 को पुन प्रकाशित किया।

अब बगरहट्टा का यह खुला पत्र' कम्युनिस्ट जगत् के लिए बहस का केन्द्रीय विषय बन गया। कॉ श्रीपाद अमृत डाँगे के पत्र सोशलिस्ट' ने इस पर अपनी विवेचना प्रकाशित की तो एम एन राय ने अपना विमर्श प्रस्तुत किया। इनके अलावा अन्य अनेक कम्युनिस्टो ने इसके पक्ष–विपक्ष मे तर्क पेश किए। इसका एक परिणाम यह हुआ कि बगरहट्टा का कम्युनिस्ट व्यक्तित्व सबके जेहन मे गहराई से पैठ गया। यहाँ सोशलिस्ट' और एम एन राय की टिप्पणियो का मूलपाठ भी इसीलिए दिया जा रहा है कि उसे उन्ही की मौलिकता मे समझा जा सक। (मूलपाठ सलग्नक' मे सलग्न)

उपर्युक्त पत्र–व्यवहार और विचार–विमर्श ने यह प्रमाणित तो कर ही दिया कि जे बगरहट्टा बिना किसी पूर्व–भूमिका के अकस्मात् कम्युनिस्ट मच पर देवदूत की तरह पर्दे के पीछे से आगे आकर नही दिखाई दिए थे या कि अकस्मात् आसमान से अवतरित नही हो गए थे। इन्ही दिनो बगरहट्टा ट्रेड यूनियन के नेता के रूप मे भी अपनी अहमियत साबित कर चुके थे। वैसे वे पजाब प्रान्त के गुड़गाँव जिला काग्रेस कमेटी के रेवाड़ी क्षेत्र के सचिव और अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के सदस्य के रूप मे सुपरिचित हो चुके थे और लाला लाजपतराय और अर्जुनलाल सेठी की तेजस्वी राजनीतिक राह के सहगामी होने के नाते भी अपनी पहचान बना चुके थे। किन्तु उपर्युक्त खुले पत्र ने उन्हे एक चिन्तक के रूप मे प्रकट कर दिया।

निश्चय ही जे बगरहट्टा को सतही तौर पर नही समझा जा सकता। जब तक आप तत्कालीन राजपूताना की तिहरी पराधीनता (राजाशाही जागीरदारशाही और ब्रिटिश उपनिवेशशाही) के विरुद्ध सघर्ष का पजाब की उबलती राजनीति का काग्रेस के सविनय अवज्ञा आन्दोलन का, क्रान्तिकारी भूमिगत कार्रवाइयो का वामपन्थी चिन्तन और प्रतिबद्धता का, ट्रेड यूनियन आन्दोलन का और एक ओर एम एन राय श्रीपाद अमृत डॉगे जोगलेकर के साथ व्यवहार के सम्बन्ध का तथा इससे पूर्व और पश्चात् लाला लाजपतराय सर छोटूराम फिरोजखॉ नून, सुभाषचन्द्र बोस और सी आर दास के साथ उनके सम्पर्क का और फिर राजस्थानी क्रान्तिकारियो के अग्रणी अर्जुनलाल सेठी और जयनारायण व्यास के सहयोग का और उधर जयप्रकाशनारायण लोहिया आदि के साथ उनके साथीपन का सविस्तार और गहराई से अध्ययन न करे और उनकी भीतरी और बाहरी गतिविधियो का आकलन न करे तब तक उन्हे सही परिप्रेक्ष्य मे नही समझ सकेगे। जो उनसे घनिष्ठ सम्पर्क से वचित रहे और एकाध बार ही मिल पाए उनके लिए वे रहस्य ही बन कर रह गए और कही–कही तो उपेक्षा और सस्पेस ही बने रहे।

बगरहट्टा और एम एन राय के पत्राचार के मूलपाठ जी अधिकारी द्वारा सम्पादित भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के दस्तावेजो के अग्रेजी सस्करण से साभार उद्धृत कर सलग्नक मे सलग्न किए जा रहे है।

जे बगरहट्टा और एम एन और 'सोशलिस्ट पत्र के प्रतिस्थापित सम्पादक के एन जोगलेकर (क्योकि उस समय कॉ एस ए डॉगे कानपुर बोल्शेनिक षड्यन्त्र केस' मे गिरफ्तार थे।) द्वारा प्रस्तुत विचार–विमर्श मे सहमतियॉ अधिक उभर कर सामने आईं, यद्यपि कुछ बातो मे असहमतियाँ भी दिखाई दी। पहला यक्षप्रश्न तो यह उजागर हुआ कि कानपुर षड्यन्त्र केस' द्वारा कम्युनिस्ट नेताओ पर बरपाए गए दमन के माहौल मे खुले रूप' मे कम्युनिस्ट पार्टी' को स्थापित करना सही होगा या उसे एक भूमिगत उग्रवादी गतिविधियो का छद्म समूह बनकर ही काम करते रहना चाहिए। बगरहट्टा का सीधा सवाल था— क्या कम्युनिस्ट पार्टी को एक छद्म समूह (Secret Society) होना चाहिए?'

बगरहट्टा की मान्यता थी कि बावजूद दमन के माहौल के, कम्युनिस्टो को खुले रूप मे कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना करनी चाहिए। एम एन राय डॉगे के एन जोगलेकर व कई अन्य जाने–माने साथियो ने बगरहट्टा की

राय का समर्थन किया। एम एन राय ने तो पूरा एक लेख ही यह शीर्षक देकर लिख डाला— Should the Communists be a Secret Society? इसम राय ने तीन बिन्दुओ पर जोर दिया—1 कम्युनिस्ट पार्टी उग्रवादी छद्म आन्दोलन नही है, 2 कम्युनिस्ट पार्टी पर प्रतिबन्ध लगने पर उसे गैर-कानूनी तौर पर काम करना होगा और पार्टी पर से प्रतिबन्ध हटाने के लिए हर प्रकार के दमन का सामना करते हुए सघर्ष करना होगा और 3 कम्युनिस्ट पार्टी किसी भी हालत मे अपनी अस्मिता और सिद्धान्तो के साथ किसी भी प्रशासनिक व्यवस्था से सौदेबाजी नही करेगी।

राय ने *बगरहट्टा की पार्टी की कानूनी मान्यता पर जोर देने की प्रवृत्ति* की आलोचना भी की।

यहाँ मार्क्स-एगेल्स द्वारा रचित कम्युनिस्ट पार्टी के घोषणापत्र' की इस धारणा की याद दिलाना अप्रासगिक नही होगा कि कम्युनिस्ट इस बात को छिपाना नही चाहते कि हमारा उद्देश्य पूँजीवाद की शोषणी सत्ता को जड से उखाड़ फेकना है। इससे शोषक सत्ताएँ काँपती हैं तो काँपे।

इस तरह हम देखते है कि बावजूद कानपुर बोल्शेविक षड्यन्त्र केस के कम्युनिस्ट नेताओ—श्रीपाद् अमृत डॉगे शौकत उस्मानी नलिनी गुप्ता और मुजफ्फर अहमद—को जेल-यातनाएँ देने के दौर मे सम्भावित उत्पीडनो की परवाह न करते हुए सन् 1923-24 की विषमताओ के मध्य भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी' की स्थापना के सम्मेलन के आयोजन की पृष्ठभूमि तैयार की गई।

एक ओर मुकद्दमे चल रहे है दमन की तलवार सिर पर लटक रही है और उसी समय दूसरी ओर खुले रूप से कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना करने के लिए अखबारी लेख लिखे जा रहे हैं और ब्रिटिश सरकार की नौकरशाही इसे षड्यन्त्र' की सज्ञा देने मे मशगूल है।

लालिमा

जे बगरहट्टा के खुले पत्र' का मन्तव्य उसके एक साल बाद अर्थात् सन् 1925 ई के अन्त मे साकार रूप ले सका। यह साल उनकी उम्र का 25वॉं साल था जिसे 'रजत जयन्ती वर्ष भी कहा जाता है। लोकभाषा मे युवा की इस आयु को मर्द पचीसा' कहते हैं। इसमे जवान फुल फॉर्म' मे होता है। बगरहट्टा के लिए भी और इस देश के लिए भी यह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वर्ष सिद्ध हुआ इसलिए कि इसी वर्ष भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी' की स्थापना हुई और कॉ जे बगहरहट्टा कॉ एस बी घाटे के साथ पार्टी के जनरल सैक्रेटरी चुने गए। इतनी छोटी उम्र मे केन्द्रीय शिखर पर पहुँच जाना कितने गर्व की बात है! बगरहट्टा को पार्टी के सस्थापक मण्डल का एक सदस्य और साथ ही प्रथम दो महासचिवो मे से एक महासचिव होने का गौरव प्राप्त हुआ। यह उनकी प्रतिभा वाग्विदग्धता और परिपक्व वामोन्मुखी राजनीतिक समझ को भली प्रकार प्रमाणित करता है।

इस कालावधि की पृष्ठभूमि की ओर झॉके तो हमे चार प्रकार की क्रान्तिकारी प्रवृत्तियॉं देखने को मिलेगी—(1) विदेशो मे जाकर क्रान्तिकारी गतिविधियॉं चला रहे थे। इनमे वी चट्टोपाध्याय एम बरकतुल्ला एम पी बी टी आचार्य एम एन राय तथा अवनी मुखर्जी आदि प्रमुख थे जिन्होने ताशकन्द मे 1920 मे हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की थी। (2) अक्टूबर क्रान्ति से प्रभावित होकर हिजरत आन्दोलन से आए राष्ट्रीय क्रान्तिकारी रूस गए जिनमे मुहम्मद अली सेप्यासी रहमत अली खॉं फिराजुद्दीन मन्सूर अब्दुल मजीद और शौकत उस्मानी आदि उल्लेखनीय है। (3) गदर पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय क्रान्तिकारी जो बाद मे मार्क्सवाद के आधार को लेकर आगे आए, रतनसिह और सतोखसिह इसी श्रेणी के थे। (4) भारत मे राष्ट्रीय काग्रेस के वामपन्थी क्रान्तिकारी विचारक जैसे मुम्बई मे डॉगे मद्रास मे सिगारावेलु चेट्टियार कोलकाता मे मुजफ्फर अहमद और पजाब का एच आर ए (भगतसिह आदि का भूमिगत दल) और लाहौर का इनकलाबी ग्रुप जिससे बगरहट्टा जुडे थे।

इन्ही दूसरे-तीसरे दशको मे डॉगे की पुस्तक गॉंधी वर्सेज लेनिन प्रकाशित हुई डॉगे ने सोशलिस्ट साप्ताहिक निकाला जिससे थोडे समय

मे ही एक मार्क्सवादी दल तैयार हो गया और जिसमे डॉगे के साथ एस बी घाटे के एन जोगलेकर और आर एस निम्बकर जुड़ गए।

जब शौकत उस्मानी का बनारस का कम्युनिस्ट दल लाहौर का गुलाम हुसैन का कम्युनिस्ट सैल, कोलकाता के कॉ मुजफ्फर अहमद का गणवाणी ग्रुप, डॉगे और चेट्टियार का मुम्बई का मार्क्सवादी ग्रुप और एम एन राय द्वारा सम्पादित वैनगार्ड ऑफ इण्डियन इण्डिपेण्डेस' के समर्थको का समूह आपस मे सहमत हुए और इन्होने पार्टी बनाने का निश्चय किया तो ब्रिटिश सरकार चौकन्ना हो गई और उसने पेशावर से लेकर कानपुर तक का बोल्शेविक कम्युनिस्ट षड्यन्त्र केस बना डाला और 'कानपुर बोल्शेविक षड्यन्त्र केस' मे श्रीपाद अमृत डॉगे शौकत उस्मानी मुजफ्फर अहमद और नलिनी दास गुप्ता को गिरफ्तार कर लिया गया और कारावास की सजा दे दी गई।

इसी बीच सन् 1924 मे कानपुर के (राजस्थान के भरतपुर के निवासी) पत्रकार सत्यभक्त ने एक कानूनी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की घोषणा कर दी। क्योकि इसके नेताओ ने अपने वक्तव्य मे अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन और प्रवासी क्रान्तिकारियो से कोई सम्बन्ध न रखने का सकल्प लिया था अत अधिकारी वर्ग ने इस पर कोई आपत्ति नही की। उधर सत्यभक्त मार्क्सवादियो के विभिन्न दलो को एक साथ लाने के लिए प्रयत्न करते रहे। वामपन्थी काग्रेसी सदस्यो द्वारा हसरत मोहानी के नेतृत्व मे आगामी एकता सम्मेलन की तैयारी के लिए एक सगठन समिति कायम की गई।

नतीजतन सन् 1925 की 26 दिसम्बर को कानपुर मे मद्रास के कम्युनिस्ट एम सिगारावेलु चेट्टियार की अध्यक्षता मे भारतीय कम्युनिस्टो का पहला सम्मेलन हुआ जिसमे एक प्रस्ताव स्वीकार करके भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के गठन का फैसला किया गया। पार्टी का केन्द्रीय कार्यालय मुम्बई मे रखने का निश्चय किया गया। इस तरह 26 दिसम्बर 1925 को पार्टी की स्थापना कर दी गई। 28 दिसम्बर 1925 को सम्मेलन मे केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति का चुनाव किया गया। कॉ जे पी बगरहट्टा और कॉ एस बी घाटे दोनो को जनरल सैक्रेटरी निर्वाचित किया गया।

केन्द्रीय कार्यसमिति मे भारत के सभी कम्युनिस्ट दलो के प्रतिनिधि शामिल किए गए थे। कुल मिलाकर कानपुर मे सम्मेलन के अध्यक्ष के शिविर

स्थान मे कार्यसमिति का स्वरूप इस रूप मे सामने आया—

कार्यसमिति मे कामरेड्स हसरत मोहानी आजाद सोमानी, एस सत्यभक्त, एस डी हसन, के एन जोगलेकर, एस बी घाटे बाबा राना चौबे राधामोहन गोकुलजी और जे पी बगरहट्टा की उपस्थिति थी। कॉ एम सिंगारावेलु अध्यक्षता कर रहे थे। जिन स्थानो के लिए प्रतिनिधि चुने गए—

कॉमरेड्स जे पी बगरहट्टा के एन जोगलेकर, एस बी घाटे और आर एस निम्बकर (मुम्बई) (श्रीपाद् अमृत डॉगे जेल मे थे)

कॉमरेड्स हसरत मोहानी आजाद सोमानी एस सत्यभक्त और बाबा राना चौबे (यू पी) (शौकत उस्मानी जेल मे थे)

ऑल कॉ मुजफ्फर अहमद (जेल मे), राधामोहन गोकुलजी (कोलकाता) ऑल कॉ कामेश्वर राव और कृष्णा स्वामी आयगर (मद्रास)

ऑल कॉ एस डी हसन, रामचन्द्र और अब्दुल मजीद (लाहौर)

अध्यक्ष—कॉ एस सिंगारावेलु

उपाध्यक्ष—कॉ आजाद सोमानी

जनरल सैक्रेटरी—कॉ जे पी बगरहट्टा और कॉ एस बी घाटे

सर्किल सैक्रेटरी—कॉ कृष्णास्वामी अय्यगर (मद्रास), कॉ एस सत्यभक्त (कानपुर) कॉ मुजफ्फर अहमद (कोलकाता) और कॉ एस डी हसन (लाहौर)। इनके ऊपर उन प्रदेशो की कमेटियो के गठन का दायित्व था।

विशेष—पदाधिकारियो का निर्वाचन एक वर्ष के लिए होगा। अगले वार्षिक सम्मेलन पर फिर चुनाव किया जायेगा।

कार्यालय—वर्ष-भर केन्द्रीय कार्यालय मुम्बई मे रहेगा। यहॉ कॉ घाटे कार्यालय मे नियमित रूप से कार्य सॅभालेगे और उन्हे प्रतिमाह 60 रु कुल वक्ती वेतन दिया जायेगा।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का लक्ष्य और उद्देश्य (घोषणा)

कानपुर सम्मेलन मे जिस भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की अन्तरिम कमेटी का गठन किया गया था उसे भग कर दिया गया है और उसको औपचारिक रूप से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के रूप मे स्थापित कर दिया गया है। पार्टी का अन्तिम लक्ष्य भारत मे मजदूरो और किसानो का

गणतन्त्र स्थापित करना होगा। और पार्टी का तात्कालिक कार्य होगा— भूमि खानो, कारखानो मकानो, तार, टेलिफोन, रेलवे आदि सार्वजनिक उपयोग के उपक्रमो मे कार्यरत किसानो और श्रमिको की आजीविका को राष्ट्रीयकरण और नगरीकरण के माध्यम से सुरक्षित और वर्धित करना। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पार्टी शहरो और गॉवो मे मजदूरो और किसानो के सगठन बनाएगी। इसके लिए पार्टी जिलो, ताल्लुको नगरपालिकाओ और विधानसभाओ मे प्रवेश करेगी। इस हेतु पार्टी ऐसे तरीके भी अपनाएगी जिनमे देश के अन्य राजनीतिक दलो से सहयोग लिया जायेगा अन्यथा पार्टी अपने तई ही अपने कार्यक्रमो को लागू करेगी।

पार्टी की केन्द्रीय समिति मे प्रादेशिक कमेटियो से 30 मेम्बर लिए जायेगे और 7 सदस्यो की एक कौंसिल सारे रोजमर्रा के आपात् कार्यो को अजाम देगी।

पार्टी के सदस्य वही कम्युनिस्ट हो सकेगे जो पार्टी के सकल्पो को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध होगे। किसी भी साम्प्रदायिक सगठन के सदस्य को पार्टी की सदस्यता नही दी जायेगी।

हर सदस्य को सालाना 8 आना सदस्यता शुल्क देना होगा जो दाखिला देने वाले सचिव के पास जमा करवाना होगा।

केन्द्रीय कार्यसमिति का कार्यालय मुम्बई मे होगा। कॉ जानकीप्रसाद बगरहट्टा और कॉ एस बी घाटे साल–भर के लिए जनरल सैक्रेटरी होगे। कानपुर के मौलाना आजाद सोमानी इसके उपाध्यक्ष चुने गए हैं और कॉ एम सिगारावेलु (पार्टी अध्यक्ष) कार्यसमिति की बैठको की अध्यक्षता करेगे। कॉ कृष्णा स्वामी अय्यगर (मद्रास) कॉ एस सत्यभक्त (कानपुर) कॉ राधामोहन गोकुलजी और कॉ मुजफ्फर अहमद (कोलकाता) और कॉ एस डी हसन (लाहौर) अपने प्रदेशो मे प्रान्तीय सचिवो के रूप मे सगठन का कार्य करेगे। केन्द्रीय कार्यसमिति की आगामी बैठक अप्रैल के आरम्भ मे होगी जो साल–भर के काम की योजना बनाएगी।

सिगारावेलु द्वारा विज्ञप्ति न 2

प्रिय कॉमरेड

आप आगे के काम के लिए जो भी प्रस्तावना करे उसके साथ मे हम इस माह के काम के प्रस्ताव को जोड़ ले।

मैं आपके विचारार्थ निवेदन करता हूँ कि

1 आप हर प्रेजीडेसी मे बड़ी तादाद मे नागरिको के हस्ताक्षर करवाकर वायसराय के नाम एक ज्ञापन भेजे जिसमे कॉ डॉगे और उस्मानी की, जो जेल-यातनाएँ झेल रहे हैं, उनको रिहा करने का वैसा ही आग्रह किया जाये जैसा कि कॉ सकलातवाला ने ससद मे इग्लैण्ड मे 12 कम्युनिस्टो की रिहाई की माँग पेश की है।

2 इस साल हर प्रदेश मे हमारी पार्टी का सम्मेलन आयोजित किया जाये।

3 पहली मई को विशाल सभाएँ की जाये।

मैं एक ज्ञापन तैयार करके उसकी प्रति प्रादेशिक सचिव को भेज रहा हूँ ताकि वे महीने-भर मे एक प्रादेशिक सम्मेलन बुलाएँ। मद्रास मे हम इस माह एक प्रादेशिक सम्मेलन बुला रहे हैं जो अन्य प्रान्तो को प्रेरित होगा।

1 मार्च, 1926

आपका ही
एम सिंगारावेलु

जिस कमेटी ने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का पहला 'विधान बनाया उसमे अध्यक्ष एम सिंगारावेलु उपाध्यक्ष कॉ आजाद सोमानी, कॉ जे पी बगरहट्टा और कॉ एस बी घाटे थे। इस विधान मे निम्नाकित 12 धाराएँ थीं एक सदस्यता फॉर्म था और एक प्रस्तावना थी—

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का विधान

धारा 1 *उद्देश्य*—भारत को ब्रिटिश साम्राज्यवादी सत्ता से मुक्त करके मजदूरो और किसानो का ऐसा गणतन्त्र स्थापित करना जिसका आधार होगा उत्पादन के साधनो और उत्पादन के वितरण का समाजीकरण।

धारा 2 *भा क पा के अधिवेशन*—(क) साधारणतया भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का अधिवेशन हर साल अक्टूबर माह मे उस स्थान पर होगा जिसे केन्द्रीय समिति तय करेगी।

(ख) अधिकाश प्रादेशिक कमेटियो द्वारा आवश्यकता जताने पर अथवा केन्द्रीय समिति द्वारा स्थिति-विशेष की गम्भीरता महसूस करने पर स्वय की प्रस्तावना पर विशेष अधिवेशन आहूत किया जायेगा।

धारा 3 *भा क पा के घटक*—भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के घटक

निम्नाकित होगे—

(क) केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति

(ख) प्रादेशिक कमेटियॉ

(ग) जिला समितियाँ

(घ) समयानुसार सम्बद्व मजदूर यूनियने

धारा 4 सदस्यता—18 से कम उम्र का व्यक्ति उपर्युक्त पार्टी घटको मे से किसी का सदस्य नही बन सकेगा और न ही वह व्यक्ति इसका सदस्य बन सकेगा जिसने भा क पा के सविधान की धारा 1 के उद्देश्य को अगीकार न किया हो।

धारा 5 प्रादेशिक सगठन—(क) प्रत्येक प्रदेश समिति जिला या अन्य समिति जिसे उपर्युक्त धारा मे सन्दर्भित किया गया है, को यह अधिकार होगा कि वह भा क पा के सविधान के अनुरूप सदस्यता के नियम निर्धारित करे और तदनुरूप काम करे।

(ख) प्रत्येक प्रदेश समिति मे जिला सगठनो द्वारा प्रतिवर्ष उनकी सदस्य सख्या के निर्धारित अनुपात मे निर्वाचित प्रतिनिधि सम्मिलित होगे।

(ग) हर साल के अन्त मे प्रत्येक प्रदेश समिति अपने काम की सालाना रिपोर्ट भेजेगी।

धारा 6 प्रतिनिधि—कोई भी प्रामाणिक श्रमिक अथवा किसान वार्षिक सम्मेलन के लिए निर्वाचित हो सकेगा।

धारा 7 शुल्क—प्रतिनिधि शुल्क न्यूनतम आठ आना होगा।

धारा 8 अध्यक्ष का चुनाव—किसी निर्धारित दिनाक व समय के अन्त तक प्रादेशिक कमेटियॉ केन्द्रीय समिति को उन व्यक्तियो के नाम भेजेगी जिन्हे वे सम्मेलन की अध्यक्षता के योग्य समझती हैं और केन्द्रीय समिति उन नामो को निर्णायक सिफारिश के लिए प्रादेशिक कमेटियो के पास भेजेगी।

धारा 9 केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति—धारा 3 के अनुसार सन्दर्भित हरेक यूनियन या कमेटी को यह अधिकार होगा कि वह प्रति 25 सदस्यो की सख्या के हिसाब से एक प्रतिनिधि भेजे। केन्द्रीय समिति का चुनाव वार्षिक सम्मेलन से कम से कम एक माह पहले कर लिया जायेगा।

केन्द्रीय समिति काम की आवश्यकतानुसार प्राय मिलती ही रहेगी अथवा उसके 10 सदस्यो द्वारा सोद्देश्य माँग किए जाने पर बुला ली जायेगी। मीटिंग का कोरम उसकी कुलसख्या का एक तिहाई होगा।

धारा 10 कार्य-प्रक्रिया—केन्द्रीय समिति वार्षिक सम्मेलन द्वारा निर्धारित साल-दर-साल के कार्यक्रम को सचालित करेगी और उन नए मुद्दो पर भी कार्यवाही करेगी जो वार्षिक सम्मेलन तक नही उभरे थे।

धारा 11 **केन्द्रीय समिति का अध्यक्ष**—सम्मेलन के अध्यक्ष ही आगामी साल-भर तक केन्द्रीय समिति के भी अध्यक्ष रहेगे।

धारा 12 **केन्द्रीय समिति के पदाधिकारी**—केन्द्रीय समिति मे तीन जनरल सैक्रेटरी होगे और दो कोषाध्यक्ष, जो केन्द्रीय समिति द्वारा प्रतिवर्ष चुने जायेगे।

घोषणा प्रपत्र

चूँकि भारत के मजदूरो और किसानो का विदेशी और देशी पूँजीपतियो और भूपति जमीदारो द्वारा शोषण किये जाने की वजह से मानव-जीवन जीना दुश्वार हो रहा है, और चूँकि देश के वर्तमान राजनीतिक दल पूँजीपतियो के हित मे भारत के मजदूरो और किसानो के हितो के विरुद्ध काम कर रहे हैं, मैं हस्ताक्षरित व्यक्ति आयु भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के इस सिद्धान्त को स्वीकार करता हूँ और इस हेतु अपने हस्ताक्षर करता हूँ कि जिसके तहत भारत मे श्रमिको और कृषको का गणतन्त्र स्थापित किया जाना है। मैंने पार्टी के प्रथम सम्मेलन के उस प्रस्ताव को सावधानी से पढ़ लिया है जो इस प्रपत्र के पीछे छपा है। मै इससे पूरी तरह सहमत हूँ जिसमे यह माना गया है कि मजदूरो-किसानो की फौरी आजीविका की सुरक्षा हेतु फौरी तौर पर जन-ससाधनो का जैसे भूमि खानो कारखानो इमारतो, तारघरो रेलवे व अन्य जनोपयोगी ससाधनो का राष्ट्रीयकरण कर दिया जायेगा। इन पर सार्वजनिक स्वामित्व होगा। मै किसी ऐसी साम्प्रदायिक सस्था से सम्बद्ध नही हूँ जिससे मुझे इस पार्टी मे शामिल होने से वचित होना पड़े।

मे इसका इस वर्ष का अपनी सदस्यता का शुल्क—आठ आना चुका रहा हूँ।

पूरा पता हस्ताक्षर

उपयुक्त घोषणा प्रपत्र के पीछे वाले पृष्ठ मे उपर्युक्त उल्लिखित पार्टी विधान का सारतत्व दिया गया है और अन्त मे हस्ताक्षरार्थ लिखा गया है---

जनरल सैक्रेटरीज
(जे पी बगरहट्टा, एस बी घाटे)
केन्द्रीय कार्यसमिति भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी
(स्रोत का आधार भा क पा दस्तावेज)

यहाँ यह सब इसलिए अकित किया गया है कि पार्टी के विधि-विधान को तैयार करने मे जे पी बगरहट्टा की कितनी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। तत्वत इस विधान और घोषणा प्रपत्र तथा जे बगरहट्टा के एम एन राय को लिखे खुले पत्र का मिला-जुला अध्ययन करने पर लेखक के मन्तव्य की साफ झलक दिखाई दे जाती है। पता नहीं क्यो इतिहासकारो की नजर से यह महत्त्वपूर्ण बिन्दु पूरी तरह ओझल हो गया। आज कितने लोग ऐसे है जो इतनी कम उम्र मे राष्ट्रीय स्तर के इस शिखर तक पहुँच पाते हैं। इसी से तत्कालीन कई बड़े धुरन्धर राजनेताओ को जे बगरहट्टा से ईर्ष्या और जलन पैदा हो गई हो तो इसमे आश्चर्य की क्या बात हो सकती है और इसकी खुन्नस निकालने का प्रयास भी किया गया हो तो क्या अचम्भा है।

जल्दी ही कम्युनिस्ट पार्टी मे कोमिण्टर्न के साथ सम्पर्क रखने या न रखने को लेकर मतभेद उत्पन्न हो गये। सत्यभक्त का आग्रह था कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को कोमिण्टर्न से कोई सम्पर्क नही रखकर अपना राष्ट्रीय स्वरूप बनाए रखना चाहिए। जबकि जे बगरहट्टा ने अपने खुले पत्र मे कोमिण्टर्न (इण्टरनेशनल कम्युनिस्ट केन्द्र) के साथ सम्बन्ध रखने की आवश्यकता पर जोर दिया था। सन् 1926 मे कोलकाता मे आयोजित कम्युनिस्ट पार्टी के दूसरे सम्मेलन मे ये मतभेद उभर कर सतह पर आ गए। अधिकतर प्रतिनिधियो ने जे बगरहट्टा के मत का समर्थन किया। सत्यभक्त को अपनी हार सहन नही हुई। उसने पार्टी से अलग होकर भारतीय राष्ट्रीय कम्युनिस्ट पार्टी' की स्थापना का ऐलान कर दिया।

सन् 1926 के कोलकाता मे सम्पन्न हुए पार्टी के दूसरे सम्मेलन मे जे बगरहट्टा और एस बी घाटे को फिर पार्टी के जनरल सैक्रेटरीज के रूप मे निर्वाचित किया गया। अब कोमिण्टर्न के साथ पार्टी का सम्बन्ध और भी

मजबूत होने लगा। सन् 1924 मे एम एन राय के नेतृत्व मे स्थापित प्रवासी भारतीय कम्युनिस्टो का जो दल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के विदेश ब्यूरो का काम कर रहा था, उसे पार्टी के सन् 1927 मे हुए मुम्बई के तीसरे सम्मेलन मे प्रस्तावना के रूप मे मजूर कर लिया गया। वैसे पार्टी के कोलकाता सम्मेलन से ही ट्रेड यूनियनो के आर्थिक सघर्षो की एक नयी लहर जोर पकड चुकी थी।

सन् 1926 मे और फिर 1927 मे रेलवे मजदूरो की बडी हडताले हुई। मुम्बई का मजदूर आन्दोलनो मे अग्रणी रहा। सन् 1926 मे भारत मे लगभग 200 ट्रेड यूनियने थी जिनकी सदस्य सख्या तीन लाख थी। इनमे 59 वे ट्रेड यूनियने थी जिनकी सदस्य सख्या 1 25,000 थी और वे अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन काग्रेस (AITUC) से सम्बद्ध थी। इनकी गतिविधियो का निर्देशन भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी करती थी। पार्टी के दोनो महासचिव एस बी घाटे और जे बगरहट्टा सलाहकार मण्डल मे थे। सन् 1923 से ही मुम्बई की मजदूर किसान पार्टी पर कॉ एस ए डॉगे का वर्चस्व रहा। वे उसके सहमहासचिव रहे।

सन् 1926 मे ब्रिटिश प्रशासन ने पूँजीपतियो के दबाव मे आकर एक विशेष कारखाना अधिनियम जारी किया जिसके तहत मजदूर सगठनो की गतिविधियो पर सरकारी नियन्त्रण रखने का प्रावधान था। एटक सुधारवादी यूनियनो और विशेषकर क्रान्तिकारियो और कम्युनिस्टो ने इसका जबरदस्त विरोध किया। इसकी प्रतिक्रियास्वरूप जगह-जगह प्रदर्शन किए गए। यहाँ तक कि कम्युनिस्टो और क्रान्तिकारियो के प्रभाव से अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन काग्रेस (AITUC) के अधिवेशनो मे राजनीतिक प्रस्ताव पारित किए जाने लगे। अब मध्य वर्ग के वामपन्थी लोग सीधे मजदूरो के विरोध प्रदर्शनो की खुलकर अगुवाई करने लगे।

अब तक के पच्चीसी-सत्ताइसी उम्र के जे बगरहट्टा के जीवनवृत्त ने जो कुछ जताया वह यही तो है—

इतिहास कहता है कि वे काग्रेस के तेज-तर्राट नेता लाला लाजपतराय की राजनीति से प्रभावित और प्रशिक्षित थे बल्कि उनके अनुयायी भी थे।

इतिहास कहता है कि उन्होने भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के ही नही बल्कि दक्षिणी अफ्रीका के और विशेषकर सारे भारत के जन-गण-मन के अधिनायक महात्मा गॉधी के सर्वाधिक तेजस्वी आन्दोलन सविनय अवज्ञा

अथवा असहयोग अथवा बहिष्कार आन्दोलन' से प्रभावित और प्रेरित होकर तत्कालीन उच्च शिक्षा का बहिष्कार किया।

इतिहास कहता है कि जे बगरहट्टा राजस्थान के क्रान्तिकारी आन्दोलन के महानायक और भारतीय काग्रेस के ओजस्वी नेता अर्जुनलाल सेठी के लम्बे अरसे तक राजनीतिक सहयात्री रहे।

इतिहास कहता है कि वे भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम के सेनानी थे और उन्होने 6 माह तक जेल-यातना भोगी।

इतिहास कहता है कि वे कुशल सगठनकर्ता और ट्रेड यूनियन नेता थे। उन्होने सफाई मजदूरो और कर्मचारियो की यूनियन का गठन किया था और उनके हडताली सघर्ष का नेतृत्व भी किया था।

इतिहास साक्षी है कि वे लाहौर के लाल खाते से अखिल भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के प्रतिनिधि सदस्य थे।

यह भी ऐतिहासिक गवाही है कि वे भारत मे कामिण्टर्न के एम एन राय के नेतृत्व वाले विदेशी कम्युनिस्ट ब्यूरो के घटक थे एम एन राय से उनके पत्राचारी सम्पर्क थे।

कौन नही जानता कि बेलगॉव काग्रेस अधिवेशन मे जे बगरहट्टा और के एन जोगलेकर ने *राय की राष्ट्रवादियो के नाम अपील* को बिना इसके अन्तिम अनुच्छेद के सशोधित कर वितरित किया था जिससे एक अद्भुत हलचल पैदा हो गई थी।

इसके साथ ही ऐतिहासिक अनुच्छेद प्रमाणित करता है कि जे बगरहट्टा ने एम एन राय को एक Open Letter to M N Roy' लिखा था जिसमे कम्युनिस्ट पार्टी की भारत मे स्थापना करने सम्बन्धी चार बिन्दु प्रस्तावित किए थे। इस पत्र को श्रीपाद अमृत डॉंगे द्वारा सम्पादित पत्र सोशलिस्ट' के तत्कालीन सम्पादक के एन जोगलेकर ने सम्पादकीय टिप्पणी के साथ प्रकाशित किया था क्योकि डॉंगे उस समय गिरफ्तार थे। एम एन राय ने उसके जवाब मे एक लम्बा पत्र भेजा और साथ ही अपने पत्र 'वैनगार्ड' मे उसे पुन मुद्रित कर दिया।

एक तथ्य यह भी है कि कानपुर मे 26 दिसम्बर 1925 को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हेतु प्रथम सम्मेलन हुआ जिसमे जे बगरहट्टा ने प्रतिनिधित्व किया था और साथ मे अर्जुनलाल सेठी थे। जब दिनाक 28 दिसम्बर 1925 को चुनाव हुए तो यह भी तवारीखी हकीकत

है कि कॉ एस बी घाटे के साथ कॉ जानकीप्रसाद बगरहट्टा (जे बगरहट्टा) को दो मे से एक जनरल सैक्रेटरी चुना गया था और इस तरह वे सस्थापक प्रतिनिधि होने के साथ भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के प्रथम महासचिव अथवा राष्ट्रीय स्तर के कम्युनिस्ट नेता बन गए थे।

यह भी इतिहास की सच्चाई है कि सन् 1926 मे कोलकाता मे आयोजित दूसरे सम्मेलन मे कॉ जे बगरहट्टा कॉ एस बी घाटे के साथ दुबारा भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के जनरल सैक्रेटरी चुने गए।

यह थी जे बगरहट्टा के ऐतिहासिक उत्कर्ष की वह लालिमा जो एक ओर सभी चेहरो को प्रतिबिम्बित करती थी, सहयोगियो को गौरवान्वित करती थी, साथ ही कुछ ईर्ष्यालुओ को जला भी रही थी।

31 जुलाई सन् 1927 के बाद जे बगरहट्टा ने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के न केवल महासचिव पद से, अपितु पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से भी त्याग पत्र दे दिया जिसे पार्टी की केन्द्रीय समिति ने मद्रास मे हुई दिनाक 29 दिसम्बर 1927 की मीटिग मे मजूरी दे दी। उन्हे वैमनस्य की स्थिति मे काम करना गवारा नही था।
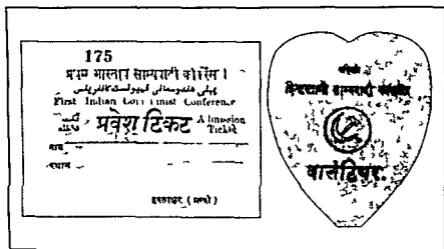
सन् 1925 मे कानपुर मे हुए भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के प्रथम सम्मेलन का प्रवेश टिकट
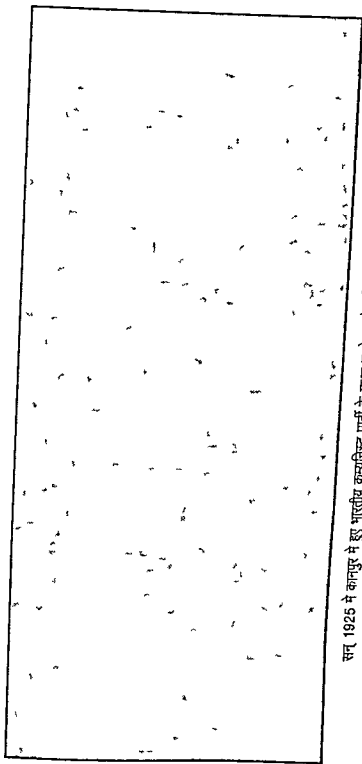
सन् 1925 मे कानपुर मे हुए भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के प्रथम सम्मेलन मे प्रतिनिधि के रूप मे कॉ जे बगरहट्टा

एम एन राय और जे बगरहट्टा

जे बगरहट्टा वैचारिक दृष्टि से अगर किसी से सबसे ज्यादा प्रभावित थे, तो वे थे मानवेन्द्रनाथ राय। एम एन राय जितने क्रान्तिकारी थे उससे भी ज्यादा चिन्तनशील। उनके चिन्तन मे वस्तुगत गतिशीलता है जिसे सघर्षात्मक अनवरत प्रक्रिया की द्वन्द्वात्मक व्याख्या भी कहा जा सकता है। आरम्भ मे उनका सोच राष्ट्रवादी क्रान्तिकारी का रहा, फिर कार्ल मार्क्स के वैज्ञानिक ऐतिहासिक भौतिकवाद के विश्लेषक का अथवा वे प्रबुद्ध कम्युनिस्ट विचारक के रूप मे सक्रिय रहे और तीसरे चरण मे उनकी चेतना रेडिकल ह्यूमैनिज्म' अथवा नवमानववाद' मे नवाचरित हो गई। तदनुसार राय वामपन्थी काग्रेसी भी रहे तो सस्थापक कम्युनिस्ट भी और वहाँ से हटकर 'रेडिकल ह्युमैनिस्ट पार्टी' के सस्थापक और कुछ समय बाद उसी के विघटनकारी और आखिर मे दलीयता को त्यागकर वे एक मुक्त विश्लेषक हो गए।

यहाँ यह जोर देकर कहा जा सकता है कि एम एन राय चाहे जिस रूप मे रहे हो—क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट, काग्रेसी और रैडिकल या दल-रहित विश्लेषक, वे हर जगह प्रतिष्ठावान ईमानदार तेज-तर्राट और प्रभावशाली रहे। उन्होने हर जगह परामर्शक की भूमिका अदा की।

ये ऐसी खूबियाँ थी कि जब जे बगरहट्टा एम एन राय को An Open Letter to M N Roy लिखते है तो अन्त मे हस्ताक्षर करने से पहले लिखते है—I am your devoted Comrade J P Bagerhatta Member All India Congress Committee यहा devoted comrade शब्दो पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, क्योकि जे बगरहट्टा ने devoted शब्द का प्रयोग केवल एम एन राय के लिए ही किया। हम सब जानते हैं कि प्रगाढता की जड़े कितनी गहरी होती है।

एम एन राय और जे बगरहट्टा के वैचारिक और राजनीतिक सम्बन्धो का सिलसिला अगस्त सन् 1920 से आरम्भ हो गया था। जब जे बगरहट्टा ने एम एन राय द्वारा लिखित और प्रकाशित An Indian Communist Manifesto को ध्यान से पढ़ा तो अपने साथियो मे इसे बहस

का मुद्दा बनाया। इस घोषणापत्र मे भारत के क्रान्तिकारियो से आह्वान किया गया था कि भारत मे उपनिवेशी-साम्राज्यवादियो द्वारा किए जाने वाले श्रमिको और गरीबो के श्रम-शोषण की व्यवस्था के उन्मूलन के लिए क्या किया जा सकता है और कैसे किया जा सकता है। इसके लिए किस प्रकार के सगठन और कार्य-प्रणाली को अपनाने की आवश्यकता है। इसके लिए ऐसे सगठन की स्थापना की आवश्यकता है जो जनता को निर्णायक सघर्ष करने के लिए तैयार कर सके।

इस घोषणापत्र को एम एन राय, अवनी मुखर्जी और शान्तिदेवी के नाम से साया किया गया था।

सन् 1924 के दिसम्बर मे राय के द्वारा प्रारूपित अपील को जे बगरहट्टा, के एन जोगलेकर और अर्जुनलाल सेठी ने उसके अन्तिम अनुच्छेद को हटाकर उसे Appeal to the Nationalists शीर्षक से एम एन राय के हवाले से पुनर्मुद्रित और प्रकाशित कर बेलगाँव मे आयोजित अखिल भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के अधिवेशन मे वितरित और विज्ञापित किया जिससे एक अपूर्व राजनीतिक द्वन्द्व खड़ा हो गया।

इससे भी दो माह पूर्व जे बगरहट्टा ने 8 सितम्बर 1924 को एम एन राय को सम्बोधित वह ऐतिहासिक पत्र भेजा जिसे उन्होने शीर्षक दिया था—An Open Letter to M N Roy'। जब इसे सोशलिस्ट' साप्ताहिक ने प्रकाशित किया तो भारत के वामपन्थियो मे इस पर राष्ट्रीय स्तर की बहस छिड़ गई। एम एन राय ने अपने वैनगार्ड पत्र मे उसी को फिर से प्रकाशित किया। इतना ही नही बगरहट्टा के इस पत्र के जवाबी विश्लेषण मे Should the Communist be a Secret Society? शीर्षक से एक लम्बा लेख लिखकर बहस को व्यापक और गहरा कर दिया। एम एन राय ने जे बगरहट्टा को पत्रोत्तर के रूप मे M N Roys Letter to Bagerhatta भेजा जिसे अन्य पत्रो ने भी छापा। सोशलिस्ट' मे तो बगरहट्टा के पत्र को लेकर सम्पादकीय टिप्पणियाँ पहले ही छप चुकी थी।

इसके बाद की घटना पिछले प्रकरण मे दी जा चुकी है जिसके अन्त मे यह कहा गया है कि 31 जुलाई सन् 1927 के बाद जे बगरहट्टा ने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव पद व पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया जिसे 21 दिसम्बर 1927 को स्वीकार कर लिया गया।

अब यहाँ आकर यह सवाल पैदा होता है कि सन् 1927 मे ही जे

बगरहट्टा ने पार्टी से त्यागपत्र क्यो दिया और जे बगरहट्टा के पार्टी छोड़ने से एम एन राय का क्या वास्ता था?

अब तक किसी ने इस पर गहराई से सोचने की चेष्टा नही की और त्यागपत्र की घटना को व्यक्तिगत रूप देकर उसे दरकिनार कर दिया गया है अथवा उसे विकृत रग दे दिया गया है। यहाँ इसी त्यागपत्र की घटना के वास्तविक कारण की तलाश की गई है जिसका सम्बन्ध एम एन राय से है। इसके अलावा यह इसलिए भी जरूरी है कि इससे जे बगरहट्टा के वैचारिक उत्कर्षो उनके जनतान्त्रिक मूल्यो श्रमिक-कृषक सरोकारो और मानवीय नवाचारो के प्रति निष्ठाओ से परिपूर्ण व्यक्तित्व को सही परिप्रेक्ष्य मे पहचाना जा सके जिसकी उपेक्षा की गई है या जिसे हाशिये की टोकरी मे डाल दिया गया है।

एम एन राय और जे बगरहट्टा दोनो चिन्तन-प्रधान व्यक्ति थे। किन्तु जे बगरहट्टा का अनुचिन्तन एम एन राय का प्राय अनुसरण करना था तो कई दफा जे बगरहट्टा की पहल से एम एन राय पूर्णतया सहमत होते थे। दोनो अभिव्यक्ति के अवरोधक तत्त्वो को असह्य मानते थे और जब उन्हे यह महसूस होता कि अवरोधक उनको अपने सत्तावादी अधिकार का प्रयोग करके धकेलने को आमादा है अथवा धकेलने की प्रक्रिया शुरू कर चुका है वे स्वय वहाँ से हट जाते थे, ताकि वे अन्यत्र अभिव्यक्त हो सके।

एम एन राय कॉमिण्टर्न से जुड़े होने की वजह से अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन मे प्रबुद्ध विचारको के रूप मे सक्रिय थे। उनकी और लेनिन की दोनो की थीसिसो पर कॉमिण्टर्न मे विचार-विमर्श किया जाता था। सन् 1924 मे लेनिन के निधन के बाद कॉमिण्टर्न का नेतृत्व स्टालिन के हाथ मे आ गया। स्टालिन ने सर्वहारा की तानाशाही' को स्टालिनवादी तानाशाही' का रूप दे दिया और विरोधमात्र का जड़मूल से विध्वस करने मे अतिवादी दमनक्रिया का प्रयोग किया जिसको मौका दिया ट्राटस्कीवादी मच की प्रतिक्रान्तिकारी समझ व सक्रियता ने। इससे कॉमिण्टर्न मे जनवादी केन्द्रीयता का सन्तुलन बिगड गया। वामपन्थी सकीर्णतावाद हावी हो गया। जनवाद को केन्द्रीयता ने दबोच लिया, यहाँ तक कि किसी ने वस्तुगत सवाल भी उठाना चाहा तो उसे प्रतिक्रियावादी कहकर न केवल उसके विचार को समझने की चेष्टा नही की गई उसको भौतिक रूप से भी दफना दिया गया। यह सफाई अभियान सन् 1926 के अन्त और सन् 1927 मे जोरो से चला। एम एन राय ने समझ लिया कि

अब किसी तरह के प्रस्ताव को तर्क पर नहीं तौला जायेगा। उन्होने कॉमिण्टर्न की नीतियो की आलोचना मे लेख लिखे जो जर्मनी के पत्रो मे प्रकाशित हुए। कॉमिण्टर्न द्वारा राय को प्रतिगामी चिन्तक करार दे दिया गया।

इधर जे बगरहट्टा पर राय के लेखो का असर पड़ा और उन्होने उसी तरह का आलोचनात्मक तेवर दिखाना शुरू कर दिया तो पार्टी के कुछ जलनशील साथियो ने उन्हे प्रतिक्रियावादी समझ के दायरे मे लेकर शका, अविश्वास और आरोपो मे घेरने के प्रयास आरम्भ कर दिए। बगरहट्टा ने इस वातावरण को अपने स्वाभिमान के विपरीत महसूस किया और सन् 1927 के उत्तरार्द्ध मे पार्टी के महासचिव पद और सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया। इस त्यागपत्र की पृष्ठभूमि को जे बगरहट्टा और एम एन राय की समान वैचारिकता और राय के प्रति जे बगरहट्टा की निष्ठा को समझे बिना नही समझा जा सकता। यदि कॉमिण्टर्न मे जनवाद और केन्द्रीयता का सन्तुलन न बिगड़ता और राय को शिकार न बनाया जाता तो बगरहट्टा यह कदम नही उठाते। दूसरे साल सन् 1929 मे एम एन राय को कॉमिण्टर्न से निकाल दिया गया।

जे बगरहट्टा के द्वारा पार्टी छोड़ने का औचित्य क्या था अथवा एम एन राय द्वारा सैद्धान्तिक पराजय को विजय मे न बदलने का अनवरत सघर्ष करने की बजाय मार्गान्तरण करने या पीछे की ओर उलटा चले जाने की उपयोगिता क्या थी? और इसी के साथ यह भी देखना होगा कि स्टालिन द्वारा विरोधियो के विरोध को सर्वहारा तानाशाही' की आड मे दमन द्वारा कुचलने से इण्टरनेशनल के विकास मे क्या हासिल हुआ अथवा इसे इस रूप मे भी कहा जा सकता है कि इण्टरनेशनल के बहुमत के निर्णय की सीमा को तोड़कर दमन की प्रक्रिया मे ट्राटस्कीवाद के जीतने की आशका से आतकित होकर हर किसी बुद्धिजीवी को ट्राटस्कीवादी मानकर व्यापक पैमाने पर भौतिक रूप से उसके निष्कासन और उत्पीड़न से 'जनवादी केन्द्रीयता' का जो सन्तुलन बिगडा— उससे क्या नतीजा प्राप्त किया जा सका?

यहाँ स्टालिन एम एन राय और जे बगरहट्टा ये तीनो व्यक्ति सैद्धान्तिक और सागठनिक भटकाव के शिकार दिखाई देते हैं। स्टालिन सर्वहारा तानाशाही' की मनमानी व्याख्या करके मार्क्सवाद से और इण्टरनेशनल के बहुमत के फैसले को दमनप्रक्रिया मे ढालकर जनवादी

केन्द्रीयता' को असन्तुलित करके 'सागठनिक सिद्धान्त' से भटक गए जिससे पार्टी के भीतर सोवियत सघ के भीतर और इण्टरनेशनल के भीतर जनवाद का अकुरित और विकसित होना तो दूर—लेनिन ने जिस जनवाद का बीज रोपा था उसी को नष्ट कर दिया। इस भटकाव के दूरगामी परिणाम निकले जिन्हे सोवियत सघ के मॉडल और इण्टरनेशनल के विखरने के छोर तक मे देखा जा सकता है।

एम एन राय और जे बगरहट्टा ने लेनिन की रचना One step forward two steps back (मई 1904 मे रचित) से सीख ली होती तो वे आन्तरिक सघर्ष मे लगातार जूझते रहकर अपने सिद्धान्तो पर अडिग रहकर तथा और अधिक कण्टकाकीर्ण पगडण्डियो पर लहूलुहान होकर चलते जाते तो निश्चय ही बहुमत को प्राप्त कर लेते अथवा स्वय को शहादत मे शामिल कर लेते। तब उन्हे हाशिये' की त्रासदी नही झेलनी पड़ती। यह सब इसलिए कहना पड़ता है कि उन्होने पथान्तरण की दिशा अख्तियार कर खुद अपनी क्रान्तिकारी प्रवृत्ति का गला घोट दिया। फिर वे चाहे किसी भी दल मे गए हो—काग्रेस या समाजवादी कही पर उन्हे वह अन्तरराष्ट्रीय या राष्ट्रीय स्थिति प्राप्त नही हुई जो क्रान्तिकारियो के बीच रहने से हुई। एम एन राय ने रैडिकल ह्यूमैनिज्म (नवमानववाद) का सिद्धान्त दिया वह बुद्धि-विलास बनकर रह गया और उसके आधार पर सन् 1940 मे जिस ह्यूमैनिस्ट पार्टी की स्थापना की उसको आठ साल बाद सन् 1948 मे उन्होने खुद ने ही विलय कर दिया। आखिर मे वे NGO (गैर सरकारी सगठन) के प्रतीक बनकर रह गए। खैर, यह बहुत बाद की बात है अत वापिस सन् 1929 के तत्काल बाद की ओर लौटना होगा।

जे बगरहट्टा साहसी प्रगतिशील विचारक और स्पष्टवादी स्वाधीनता सग्राम के सेनानी थे। उन्होने एम एन राय को सन् 1924 मे जो खुला पत्र लिखा था जिसके तीसरे बिन्दु मे कहा गया था कि काग्रेस के भीतर एक मजबूत पार्टी बनाई जाए और उसकी नस-नस मे वह ऊर्जा भर दी जाये कि जिससे सगठन पर कब्जा कायम किया जा सके।'

अपनी इसी अवधारणा के बल पर कम्युनिस्ट पार्टी से त्यागपत्र देकर सन् 1929 मे वापिस रेवाड़ी आ गए। फिर से पजाब प्रदेश काग्रेस मे शामिल हो गए। वहाँ वे अपने उसी तीखे मिजाज के साथ स्वाधीनता सघर्ष मे जूझने लगे।

उधर एम एन राय भी जे बगरहट्टा की उपर्युक्त धारणा से पूरी तरह सहमत थे और इसी के मद्देनजर सन् 1929 म इण्टरनेशनल' से निकाले जाने पर सन् 1930 मे भारतीय स्वाधीनता सग्राम मे प्रत्यक्ष रूप से भाग लेने के लिए भारत आ गए। यद्यपि राय को यह मालूम था कि सन् 1924 से उन पर 'कानपुर बोलशेविक पड्यन्त्र केस के अभियोग मे मुकदमा चल रहा है और भारत मे घुसते ही उन्हे गिरफ्तार कर लिया जायेगा और लम्बी सजा दी जायेगी फिर भी उन्होने काग्रेस के माध्यम से स्वाधीनता सेनानी का दायित्व निभाना बेहतर समझा। वही हुआ जो सोचा था, एम एन राय को गिरफ्तार कर लिया गया और 6 साल की सजा देकर जेल भेज दिया गया। भारत-प्रवेश से पूर्व वे अपने सभी साथियो जिनमे जे बगरहट्टा भी थे को काग्रेस मे शामिल होने और स्वाधीनता सग्राम को गाँधीजी की लचर नीति से परे हटाकर और अधिक जुझारु बनाने का सकेत दे चुके थे। सन् 1936 मे तो राय ने जेल से छूटने के बाद सभी को काग्रेस मे आने की खुली अपील कर दी।

सन् 1929 मे जब 'मेरठ कम्युनिस्ट पड्यन्त्र केस चला तो जे बगरहट्टा के रेवाड़ी के घर पर पुलिस ने छापा मारा और कई पुस्तके और फाइले उठाकर ले गए। बगरहट्टा की अनुपस्थिति मे यह आकस्मिक छापामारी थी।

जे बगरहट्टा ने राष्ट्रीय आन्दोलन को तेज करने के लिए प्रान्त से जिला और जिले से गाँवो तक काग्रेस कमेटियाँ बनाने का अभियान शुरू कर दिया। बगरहट्टा और राय न जहाँ आन्दोलन को उग्र रूप देने की रूपरेखा तैयार की वहाँ उसमे लोकतन्त्र के विकास को भी शामिल किया गया। उनके कार्यक्रम मे भूमि-सम्बन्धो मे आमूल परिवर्तन करने का सुझाव था जो कई काग्रेसी नेताओ को स्वीकार नही था। राय क साथियो का विचार था कि एक ऐसा सविधान बनाया जाए जो स्वतन्त्र भारत के लिए लोकतान्त्रिक विकास के मानको का प्रतिपादन करे। इसके लिए सविधान सभा का गठन किया जाए। यह सविधान सभा लोकतान्त्रिक स्वतन्त्रता के लिए भारत मे एक ऐसी क्रान्ति का सूत्रपात करेगी जिसमे न किसी प्रकार का शोषण रहेगा न किसी प्रकार का भेदभाव।

सन् 1930 और 1936 के बीच एक ओर एम एन राय जेल की सजा काटते हुए लेखन कार्य कर रहे थे और साथ ही अपने साथियो का मार्गदर्शन कर रहे थे। राय ने मार्क्सवाद के पक्ष और फिर विपक्ष मे नवमानववाद एक और घोषणापत्र राजनीति दर्शन और अन्य विविध

प्रकार की समस्याओ पर इतना अधिक लिखा जिसका काफी कुछ अभी तक अप्रकाशित ही पड़ा है। इधर जे बगरहट्टा ने लगभग इसी अवधि मे अखिल भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के निर्देशन पर राजस्थान स्टेट पीपुल्स कान्फ्रेस' के महासचिव पद का काम सँभाला जिसका मुख्य कार्यालय रेवाड़ी मे सचालित था। श्री अर्जुनलाल सेठी इसके अध्यक्ष थे। जे बगरहट्टा रेवाडी से भरतपुर मे सत्यभक्त, अजमेर मे अर्जुनलाल सेठी जोधपुर मे जयनारायण व्यास एव अन्य स्थानो पर अन्य राष्ट्रीय नेताओ से मिलने के लिए चक्कर लगाते रहते थे।

सन् 1936 मे राय ने जेल से छूटते ही काग्रेस को जड़-चड तक पहुँचाने मे योजनाबद्ध तरीके से एक सघन अभियान छेड दिया। जे बगरहट्टा अपने साथियो सहित इसमे जुट गए। इस अभियान के दौर मे उन्होने अनेक राष्ट्रीय नेताओ से सम्पर्क सुदृढ किए।

किन्तु यह सघन अभियान दो साल से ज्यादा नही चला यद्यपि इस अभियान ने जे बगरहट्टा एव एम एन राय को इतना प्रभावशाली साबित कर दिया कि नरमदलीय दिग्गजो ने उनके खिलाफ विरोध अभियान तेज कर दिया। अवसरवादियो ने उन्हे छद्म कम्युनिस्ट कहकर प्रचार का बवण्डर खड़ा कर दिया। इसी समयावधि मे यह स्पष्ट होने लगा था कि विश्व-शक्तियॉ दूसरे विश्वयुद्ध को शुरू करने की भूमिका बना चुकी है। राय बगरहट्टा का दो-साला सघन अभियान सन् 1939 मे तब उपसहार की स्थिति मे पहुँच गया जब एम एन राय और काग्रेस मे दूसरे विश्वयुद्ध के प्रति नीतिगत मतभेद तीव्र हो गए और राय ने काग्रेस की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया।

दूसरे विश्वयुद्ध को एम एन राय फासिस्ट विरोधी युद्ध मानते थे और उनके समर्थको मे अग्रणी थे जे बगरहट्टा। राय और उनके सहयोगियो का कहना था कि लोकतन्त्र की रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि हर हालत मे मित्र-राष्ट्रो का समर्थन किया जाए। राय के अनुसार—यदि यूरोप मे फासिज्म सफल हो जाता है तो क्रान्ति और भारतीय स्वतन्त्रता की सम्भावना ही मिट जायेगी। और यदि फासिज्म की हार हो जाती है तो उसके परिणामस्वरूप भारत लोकतान्त्रिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने मे कामयाब हो सकेगा। काग्रेस इसके खिलाफ थी। उसके नेताओ का मत था कि हम युद्ध मे मित्र-राष्ट्रो का समर्थन इस शर्त पर कर सकते है जब ब्रिटिश सरकार पहले भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा कर दे। राय के काग्रेस छोडने के बाद बगरहट्टा की सक्रियता भी निष्प्रभ हो गई।

उधर एम एन राय भी जे बगरहट्टा की उपर्युक्त धारणा से पूरी तरह सहमत थे और इसी के मद्देनजर सन् 1929 मे 'इण्टरनेशनल' से निकाले जाने पर सन् 1930 मे भारतीय स्वाधीनता सग्राम मे प्रत्यक्ष रूप से भाग लेने के लिए भारत आ गए। यद्यपि राय को यह मालूम था कि सन् 1924 से उन पर कानपुर बोल्शेविक षड्यन्त्र केस' के अभियोग मे मुकदमा चल रहा है और भारत मे घुसते ही उन्हे गिरफ्तार कर लिया जायेगा और लम्बी सजा दी जायेगी, फिर भी उन्होने काग्रेस के माध्यम से स्वाधीनता सेनानी का दायित्व निभाना बेहतर समझा। वही हुआ जो सोचा था एम एन राय को गिरफ्तार कर लिए गया और 6 साल की सजा देकर जेल भेज दिया गया। भारत-प्रवेश से पूर्व वे अपने सभी साथियो, जिनमे जे बगरहट्टा भी थे को काग्रेस मे शामिल और स्वाधीनता सग्राम को गॉधीजी की लचर नीति से परे हटाकर और अ जुझारू बनाने का सकेत दे चुके थे। सन् 1936 मे तो राय ने जेल से के बाद सभी को काग्रेस मे आने की खुली अपील कर दी।

सन् 1929 मे जब 'मेरठ कम्युनिस्ट षड्यन्त्र केस' चल बगरहट्टा के रेवाडी के घर पर पुलिस ने छापा मारा और कई पु फाइले उठाकर ल गए। बगरहट्टा की अनुपस्थिति मे यह छापामारी थी।

जे बगरहट्टा ने राष्ट्रीय आन्दोलन को तेज करने के f जिला और जिले से गॉवो तक काग्रेस कमेटियॉ बनाने का अ दिया। बगरहट्टा और राय ने जहॉ आन्दोलन को उग्र रूप द तैयार की वहॉ उसमे लोकतन्त्र के विकास को भी शा उनके कार्यक्रम मे भूमि-सम्बन्धो मे आमूल परिवर्तन कर जो कई काग्रेसी नेताओ को स्वीकार नही था। राय के था कि एक ऐसा सविधान बनाया जाए जो स्वत लोकतान्त्रिक विकास के मानको का प्रतिपादन करे। सभा का गठन किया जाए। यह सविधान सभा लोक लिए भारत मे एक ऐसी क्रान्ति का सूत्रपात करेगी जि शोषण रहेगा न किसी प्रकार का भेदभाव।

सन् 1930 और 1936 के बीच एक ओ सजा काटते हुए लेखन कार्य कर रहे थे और सा मार्गदर्शन कर रहे थे। राय ने मार्क्सवाद के नवमानववाद एक और घोषणापत्र राजनीति

पाया गया कि इसके मूल मे कम्युनिज्म और गॉधीवाद की कतरब्यौत करके उन्ही की सार बातो का भाषान्तरण किया गया है। इस रूपान्तरित पुनराचार की पृष्ठभूमि रायवादियो को और अधिक बढ सकने का अवसर न दे सकी। अत एक ओर एम एन राय ने सन् 1946 के दिसम्बर मास मे मुम्बई मे आयोजित रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी' के अखिल भारतीय सम्मेलन मे बाईस सूत्रो का सिद्धान्त प्रतिपादित किया और सन् 1948 मे इन्ही बाईस सूत्रो का प्रचार-प्रसार करते रहने का निर्देश देकर राय ने स्वय पार्टी को समाप्त करने की घोषणा कर दी।

सन् 1945 मे कठोर परिश्रम के कारण अस्वस्थ होने की वजह से जे बगरहट्टा को वापिस बीकानेर आना पडा। जगह-जगह घूमकर उन्होने राजस्थान की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओ का निकट से अध्ययन किया और अपनी कुछ योजनाओ के अनुसार काम करना शुरू किया। अब उनके काम करने का प्रमुख कार्यालय पजाब (रेवाडी) से हटकर बीकानेर आ गया था। बीकानेर मे बगरहट्टा रायवादियो के विचार-समूह के केन्द्रीय व्यक्ति बन गए थे। सन् 1948 मे जब एम एन राय ने रेडिकल पार्टी का विलय किया उस समय जे बगरहट्टा उन्ही की लाइन पर राजस्थान समाजवादी पार्टी' के प्रान्तीय मन्त्री का पदभार वहन कर रहे थे। वैसे जयप्रकाशनारायण अशोक मेहता, राममनोहर लोहिया एस एन द्विवेदी और अरुणा आसफअली से तो काफी अरसे से विचार-विमर्श चलता ही रहता था। ऐसे ही बीकानेर मे भी उन्होने अपना चिन्तन-चक्र पैदा कर लिया। डॉ छगन मोहता भी इसके प्रबुद्ध चिन्तको म थे।

वे जे बगरहट्टा ही थे जिन्होने एम एन राय के बाईस बिन्दुओ को लेकर राजस्थान-व्यापी एक वैचारिक मच तैयार कर दिया—इसमे जहॉ कई जाने-माने काग्रेसी शामिल हो गए थे तो कुछ समाजवादी भी। लेकिन वे अपनी पार्टियो को छोड़ने को तैयार नही थे और नाम भी छिपा रहे थे। जिन बाईस बिन्दुओ ने अनेको की सोच को प्रभावित किया था उनका सार यह है—

1 व्यक्ति मानव-समाज का मूल आधार है। सामाजिक सहयोग के आधार पर व्यक्तिगत क्षमताओ का विकास होता है लेकिन व्यक्ति का विकास ही सामाजिक प्रगति का मानक है।
2 मानव-प्रगति की आकाक्षा मे स्वतन्त्रता और सत्य की खोज सम्मिलित रहती है। स्वतन्त्रता की खोज—उच्च स्तर पर बुद्धि और भावना-

दिसम्बर सन् 1940 मे एम एन राय ने 'रेडिकल डेमोक्रैटिक पार्टी' की स्थापना की। वैनगार्ड' पत्रिका का नाम बदलकर रैडिकल ह्यूमैनिस्ट' कर दिया। अपने रैडिकल ह्यूमैनिज्म (नवमानववाद) के दर्शन के आधार पर राय ने 1943 और 1944 मे भारतीय आर्थिक विकास के लिए जन-योजना' और स्वतन्त्र भारत के सविधान का प्रारूप' तैयार किया। इस काम मे जे बगरहट्टा ने उनको भरपूर सहयोग दिया। उस समय प्रचलित आर्थिक विचारो के विपरीत राय और उनके समचिन्तक जे बगरहट्टा ने देश के कृषि विकास और लघु उद्योगो के विकास पर जोर दिया।

अब राय के साथ बगरहट्टा नवमानववाद के अभियान मे जुट गए फर्क केवल इतना था कि अब बगरहट्टा ने नवमानववाद के प्रयोग को राजस्थान मे लागू करने पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित कर लिया था। पता नही, बगरहट्टा ने रैडिकल डेमोक्रैटिक' पार्टी की सदस्यता ग्रहण की या नही किन्तु उनकी विचारधारा राय के मानववाद की विचारधारा से जुड गई थी और बगरहट्टा ने रायवादियो के सर्किल के निर्माण मे अहम भूमिका अदा की थी।

रायवादियो की जनयोजना' के अन्तर्गत उत्पादन का लक्ष्य उपभोग की पूर्ति करना था किन्तु उनका उद्देश्य लाभ अर्जित करना नही था। आर्थिक योजना का उद्देश्य मौलिक आवश्यकताओ, जैसे भोजन कपडा मकान शिक्षा और चिकित्सा आदि को मुहैय्या कराना था। स्वतन्त्र भारत के सविधान के मसौदे के अनुसार भारतीय राज्य को देश-भर मे सगठित जन-समिति के आधार पर सगठित करना था। जन-समितियो को कानून बनाने विचाराधीन अधिनियमो पर अपना मत प्रकट करने और महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय मसलो पर जनता को अपना मत देने का अधिकार मुहैय्या कराने का प्रावधान था। जन-प्रतिनिधियो को वापिस बुलाने का अधिकार भी दिया गया था।

जे बगरहट्टा ने जब जयप्रकाशनारायण व अन्य समाजवादियो के साथ विचार-विमर्श किया तो पता चला कि वे जन-समितियो को सगठित करने के लिए राय के विचारो से सहमत हैं।

दूसरे युद्ध के समाप्त होने के बाद एम एन राय और उनके समर्थक व समविचारक मार्क्सवाद कम्युनिज्म और गाँधीवाद के विपरीत चले गए और अपने विचारो को नवमानववाद' के रूप मे क्रान्तिकारी चिन्तन कहने लगे। इस नवमानववाद पर जब आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया तो

पाया गया कि इसके मूल मे कम्युनिज्म और गाँधीवाद की कतरब्यौंत करके उन्हीं की सार बातो का भाषान्तरण किया गया है। इस रूपान्तरित पुनराचार की पृष्ठभूमि रायवादियो को और अधिक बढ सकने का अवसर न दे सकी। अत एक ओर एम एन राय ने सन् 1946 के दिसम्बर मास मे मुम्बई मे आयोजित 'रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी' के अखिल भारतीय सम्मेलन मे बाईस सूत्रो का सिद्धान्त प्रतिपादित किया और सन् 1948 मे इन्हीं बाईस सूत्रो का प्रचार–प्रसार करते रहने का निर्देश देकर राय ने स्वय पार्टी को समाप्त करने की घोषणा कर दी।

सन् 1945 मे कठोर परिश्रम के कारण अस्वस्थ होने की वजह से जे बगरहट्टा को वापिस बीकानेर आना पड़ा। जगह–जगह घूमकर उन्होने राजस्थान की राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक समस्याओ का निकट से अध्ययन किया और अपनी कुछ योजनाओ के अनुसार काम करना शुरू किया। अब उनके काम करने का प्रमुख कार्यालय पजाब (रेवाड़ी) से हटकर बीकानेर आ गया था। बीकानेर मे बगरहट्टा रायवादियो के विचार–समूह के केन्द्रीय व्यक्ति बन गए थे। सन् 1948 मे जब एम एन राय ने 'रेडिकल पार्टी' का विलय किया, उस समय जे बगरहट्टा उन्ही की लाइन पर राजस्थान समाजवादी पार्टी' के प्रान्तीय मन्त्री का पदभार वहन कर रहे थे। वैसे जयप्रकाशनारायण अशोक मेहता राममनोहर लोहिया एस एन द्विवेदी और अरुणा आसफअली से तो काफी अरसे से विचार–विमर्श चलता ही रहता था। ऐसे ही बीकानेर मे भी उन्होने अपना चिन्तन–चक्र पैदा कर लिया। डॉ छगन मोहता भी इसके प्रबुद्ध चिन्तको मे थे।

वे जे बगरहट्टा ही थे जिन्होने एम एन राय के बाईस बिन्दुओ को लेकर राजस्थान–व्यापी एक वैचारिक मच तैयार कर दिया—इसमे जहाँ कई जाने–माने काग्रेसी शामिल हो गए थे तो कुछ समाजवादी भी। लेकिन वे अपनी पार्टियो को छोड़ने को तैयार नहीं थे और नाम भी छिपा रहे थे। जिन बाईस बिन्दुओ ने अनेको की सोच को प्रभावित किया था उनका सार यह है—

1 व्यक्ति मानव–समाज का मूल आधार है। सामाजिक सहयोग के आधार पर व्यक्तिगत क्षमताओ का विकास होता है लेकिन व्यक्ति का विकास ही सामाजिक प्रगति का मानक है।
2 मानव–प्रगति की आकाक्षा मे स्वतन्त्रता और सत्य की खोज सम्मिलित रहती है। स्वतन्त्रता की खोज—उच्च स्तर पर बुद्धि और भावना–

मानव मे उसके विकास और अस्तित्व के सघर्ष के क्रम मे मानव को प्राप्त होते हैं। सत्य की खोज इसी प्रवृत्ति की सहयोगी वृत्ति है।

3 विवेकपूर्ण मानव के प्रयास का उद्देश्य व्यक्तिगत और सामुदायिक कल्याण है। इससे ही स्वतन्त्रता लगातार बढ़ती जाती है। मानव की क्षमताओ का शनै -शनै लोप ही स्वतन्त्रता है।

4 विवेक द्वारा निर्धारित ऐतिहासिक प्रक्रिया मे क्रान्ति की कोई सम्भावना ही नही रहेगी। विवेक और विज्ञान के आधार पर विकसित निश्चयवाद की कल्पना को धार्मिक आधार पर अपनाये जाने वाले भाग्यवाद अथवा नियतिवाद से मिलाकर भ्रम नही उत्पन्न किया जाना चाहिए।

पॉचवे से लेकर दसवे सिद्धान्त तक द्वन्द्वात्मक ऐतिहासिक भौतिकवाद के राजनीतिक अर्थशास्त्र की आलोचना करते हुए मानव की व्यक्तिगत चेतना को क्रान्तिकारी स्वतन्त्रता का आधार माना गया है। ग्यारहवे सूत्र मे अधिनायकवाद की किसी भी प्रवृति को समाजवादी लोकतन्त्र के विकास के लिए अवरोधक माना गया है।

बारहवे तेरहवे और चौदहवे बिन्दु मे ससदीय लोकतन्त्र की कमजोरियो की ओर सकेत करते हुए कहा गया है कि जन-समितियो क माध्यम से उत्पादन और वितरण को नियोजित किया जायेगा। पन्द्रहवे सोलहवे और सत्रहवे का मूल स्वर सामाजिक नवजागरण पर जोर देता है जबकि अठारहवॉ सूत्र कहता है कि नये समाज की आधारशिला तर्क और विज्ञान पर टिकी होगी और वह व्यवस्था अनिवार्य रूप से समाज-नियोजित होगी। लेकिन उसमे व्यक्ति की स्वतन्त्रता का उद्देश्य मूल रूप से अन्तर्निहित होगा।

उन्नीसवॉ सिद्धान्त कहता है कि मौलिक लोकतन्त्र नये स्वतन्त्र ससार के निर्माण के लिए कटिबद्ध आत्मिक रूप से स्वतन्त्र व्यक्तियो के सामूहिक प्रयास से स्थापित किया जायेगा। बीसवे मे नागरिको की शिक्षा पर जोर दिया गया है और सार्वजनिक जीवन मे सत्तानिरपेक्ष व्यक्तियो की अहमियत दर्शायी गई है। इक्कीसवे मे यह दावा किया गया है कि मौलिकवाद विज्ञान और सामाजिक सगठन—अमीर व्यक्ति तथा समष्टि के जीवन मे सुसम्बद्धता लाता है।

बाईसवे सिद्धान्त की मान्यता है कि मौलिकवाद, प्रोटागोरस के उस सिद्धान्त को आधारभूत मानता है जिसमे कहा गया है कि मानव सभी बातो

का मापदण्ड है अथवा मानव-जाति का मूल (मार्क्स) है वह स्वतन्त्र व्यक्तियो के भाईचारे के आधार पर और नैतिक रूप और आध्यात्मिक रूप से मुक्त मानवो के सामूहिक प्रयास के आधार पर ससार मे नया समाज बनाना चाहता है।

इन उपर्युक्त बाईस सूत्रो के सारतत्त्व पर एक दृष्टि डाली जाए तो कहा जा सकता है कि इनमे गॉधीवाद और मार्क्सवाद का निषेध करके फिर दोनो का अपने तरीके से अर्थ निकाला गया है और फिर उनका रासायनिक विधि से मिश्रण करके नवमानववादी (रायवादी) दर्शन खडा किया गया है। एम एन राय न तो विज्ञान' 'तर्क , क्रान्ति , उत्पादन-वितरण और मानव' से छुटकारा पा सकते हैं और न ही गॉधी की सत्तानिरपेक्षता' से। उनका अपनापन 'जन-समितियो के माध्यम से नवजागरण की पुनर्स्थापना और व्यक्ति-स्वातन्त्र्य-प्रधान स्वतन्त्र समाजवादी भारत के निर्माण मे है।

अपनी अस्वस्थता के कारण सन् 1945 से जे बगरहट्टा स्थायी रूप से बीकानेर मे ही रह रहे थे और राय के उपर्युक्त बाईस सिद्धान्त जो सन् 1946 के दिसम्बर मे मुम्बई मे आयोजित रेडिकल डैमोक्रैटिक पार्टी के अखिल भारतीय सम्मेलन मे स्वीकृत किए गए थे उनको व्यापकता प्रदान करने लगे थे।

जे बगरहट्टा सन् 1920 से लेकर आखिर तक एम एन राय के न केवल सम्पर्क मे रहे अपितु उनके विचारो से प्रभावित और विमर्श से सहमत भी रहे। मार्क्सवादी एम एन राय के साथ जे बगरहट्टा मार्क्सवादी। राय ताशकन्द की भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सस्थापक थे तो जे बगरहट्टा कानपुर मे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सस्थापक सचिव। एक ओर जे बगरहट्टा सन् 1927 मे पार्टी से त्याग पत्र देते है तो सन् 1929 मे राय इण्टरनेशनल से निकाल दिए जाते है। सन् 1929 मे बगरहट्टा के रेवाडी आवास पर पुलिस की छापामारी होती है। जब एम एन राय मार्क्सवाद-कम्युनिज्म विरोधी होते हैं तो जे बगरहट्टा भी नवमानववादी (रायवादी)।

किन्तु जब सन् 1948 मे राय अपनी पार्टी को भग कर दलरहित विचारक मात्र रह गए तो जे बगरहट्टा उसी साल अर्थात् 1948 मे राजस्थान की समाजवादी पार्टी के प्रान्तीय मन्त्री के रूप मे सक्रिय थे। लेकिन जे बगरहट्टा साथियो से बहस करने मे जन-सभाओ के भाषणो मे तथा अपनी पत्रकारिता मे राय के विचारो को ही अभिव्यक्त करते थे।

राजस्थान के विषय मे जे बगरहट्टा की अपनी मौलिक धारणाएँ थी। वे भाषा-वैविध्य की दृष्टि से राजस्थान के पुनरेकीकरण के पक्षधर थे। वे प्रदेश के उत्तरी क्षेत्र को गगानगर, चूरू और झुझनू जिलो मे बीकानेर और जोधपुर को मारवाड क्षेत्र मे जयपुर और शेखावाटी को ढूँढार क्षेत्र मे, कोटा बूँदी और झालावाड़ को हाडौती क्षेत्र मे, मेवाड़ और मेवात को अपने-अपने क्षेत्र मे विभाजित करने के पक्ष मे थे क्योकि इनमे बोली जाने वाली भाषाओ की अपनी स्वायतत्ताएँ है।

यह भी एक अद्भुत सयोग था कि एम एन राय और जे बगरहट्टा ने लगभग दो वर्षो के अन्तर की आयु के बाद महाप्रयाण किया। एम एन राय (1887 से 1954) ने 67 साल का महत्त्वपूर्ण जीवन जीया, तो जे बगरहट्टा (1900 से 1965) ने 65 साल का। एक-से तेवर मत-सम्मत और पथान्तरण की चिरस्मरणीय इन दोनो मेधाओ के विषय मे जितने शोधकार्य किए जाते रहेगे उतने ही पर्दे उठते जायेगे। इससे और ज्यादा।

जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी

जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी समकालीन, समवयस्क और समस्थानीय थे। बगरहट्टा सन् 1900 मे जन्मे तो उस्मानी सन् 1901 मे। बगरहट्टा का जन्म बीकानेर के श्रीडूँगरगढ कस्बे मे हुआ तो उस्मानी का खास बीकानेर मे। मुजफ्फर अहमद के अनुसार जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी बीकानेर के एक शिक्षालय मे सहपाठी थे। उस समय बीकानेर रियासत मे महाराजा गगासिह का राज था।

महाराजा गगासिह ब्रिटिश साम्राज्य के प्रबल पोषक एव मानवीय व नागरिक अधिकारो के 'हन्ता।' थे (—स्वतन्त्रता सेनानी दाऊदयाल आचार्य)। दूसरे स्वतन्त्रता सेनानी सत्यनारायण सर्राफ ने प्रिसली इण्डिया व रियासत' पत्रिकाओ मे प्रकाशित अपने लेख मे महाराजा को 'बीकानेर का नीरो कहा। महाराजा के सास लेते ही घास जल जाती', उनकी रियासत जेल थी, हर फरियादी विद्रोही राजद्रोही और बागी था जिसके हिस्से मे जेल नजरबन्दी, लाठी गोली, लात–घूसो और डण्डो की मार का उपहार था। देश–निकाला आम बात थी और बाहर से किसी नेता या सन्दिग्ध व्यक्ति पर कानूनी प्रतिबन्ध था। यहाँ जोर से रोने–चिल्लाने पर पुलिस का थाना था।

शौकत उस्मानी की जीवनी मे इन्हीं पक्तियो के लेखक ने इस अवधि के बारे मे लिखा था— बीकानेर रियासत मे इस समय महाराजा गगासिह का राज था जो 'अग्रेजी हुकूमत के सबसे बड़े चरणसेवी राजभक्त भारत के स्वतन्त्रता सग्राम के नम्बर एक शत्रु और बीकानेर मे देश की आजादी के नामलेवाओ को रातोरात दमनचक्की मे पीसकर आतक बनाए रखने वाले सवेदनशून्य व्यक्ति थे। वे युद्ध मे अग्रेजी प्रशासन के आदेशानुसार उनकी मदद के लिए खुद अपनी फौज को लेकर जाते थे और वफादारी की एवज मे उपाधियाँ और तमगे हासिल करने का अपना मकसद पूरा करते थे। अपने फौजियो को मरवाकर उन्होने अग्रेजी वर्णमाला के अधिकाश वर्णो के पदक बटोर लिए थे। अग्रेजी गवर्नर वायसराय सम्राट् सम्राज्ञी और औपनिवेशिक यन्त्र का प्रत्येक पुर्जा यदि सबसे ज्यादा खुश था तो इस

बात से कि गगासिह छ सौ रियासतो के राज्यो मे आजादी के गले को दबाकर मार डालने वाले शासको मे सिरमौर नरेन्द्र शिरोमणि' या 'महाराजाधिराज' हैं। पुरातत्त्व का रेकार्ड और स्वतन्त्रता सग्राम मे रियासती राजाओ की भूमिका के दस्तावेज इसके जीते-जागते प्रमाण है।' (पृष्ठ 8-9)

ध्यान रहे कि सन् 1932 के रियासती काले-कानून के तहत किसी भी नेता को बीकानेर रियासत की सीमा मे बाहर से नही आने दिया जाता था।

जे बगहरट्टा और शौकत उस्मानी सहपाठी थे बहसबाज भी। देश-विदेश की घटनाओ पर चार-पॉच साथी टीका-टिप्पणियॉ करते रहते थे। बगरहट्टा और उस्मानी सज्जनालय के वाचनालय मे बोम्बे क्रॉनिकल' पढा करते थे (बाद मे बगरहट्टा इसी बी जी हॉर्नीमन द्वारा सम्पादित बोम्बे क्रॉनिकल' के सहसम्पादक भी बन गए थे)। दोनो किशोरो पर भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम की घटनाओ का प्रभाव बढ़ता जा रहा था।

सन् 1917 मे अक्टूबर क्रान्ति' की घटना ने दोनो के मन मे उल्लासमय प्रेरणा की लहर पैदा कर दी। करेगे हम भी ऐसी क्रान्ति । फिर 'होमरूल' के इन्डिपेण्डेट मे बालगगाधर तिलक के भाषणो ने जोश भर दिया तो आगे चलकर 1919 के जलियॉवाला बाग के सामूहिक हत्याकाण्ड ने दोनो को और ज्यादा उद्वेलित कर दिया।

इस समय तक बीकानेर मे तानाशाह महाराजा ने स्वतन्त्रता को अभिव्यक्ति देने की किसी भी सम्भावना को पैदा ही नहीं होने दिया था। जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी दोनो कुछ कर-गुजरने को आमादा थे। उन्होने यह तो सोच लिया था कि बीकानेर मे काम शुरू करते ही उनकी भ्रूणहत्या कर दी जायेगी क्योकि यहाँ न तो जनता को किसी घटना का ज्ञान है और न ही जन-जागरण की बीजारोपण करने का वातावरण। काम को शुरू करते ही उसे बेअसर कर दिया जायेगा यह उन्हे गवारा नहीं था।

उस्मानी रूस से हथियार लेकर भारत मे क्रान्ति करने के उद्देश्य से बीकानेर छोड़कर बीहड़ मार्ग पर चल दिए और जे बगरहट्टा जलियाँवाला बाग के हत्याकाण्ड वाले पजाब प्रदेश की ज्वलन्त राजनीति मे भाग लेने पहले अजमेर फिर रेवाड़ी और लाहौर पहुँच गए। व्यापक क्षेत्र की

हिस्सेदारी हेतु बीकानेर रियासत छोड दोनो ने अपनी-अपनी राहे पकड़ ली।

जे बगरहट्टा ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन के बहिष्कार के आह्वान पर अंग्रेजियत की शिक्षा का बहिष्कार किया और आधी-अधूरी पढ़ाई छोड स्वतन्त्रता सघर्ष मे कूद पड़े और यह परवाह नही की कि उनकी पारिवारिक आकाक्षाओ और आवश्यकताओ का क्या होगा और लगभग इसी आयु मे सशस्त्र क्रान्ति से अंग्रेजी साम्राज्यवाद को नेस्तनाबूद करने का आकाक्षी शौकत उस्मानी अंग्रेजियत की शिक्षा को आधी-अधूरी छोड़कर अफगानिस्तान के मौतभरे रास्ते से लहूलुहान होकर रूस पहुँच गया। उसने भी यह परवाह नही की कि परिवार पर क्या बीतेगी पत्नी और नवजात का क्या होगा? सन् 1927 से उसके लिए बीकानेर-प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया। सन् 1932 मे तो महाराजा ने वह काला-कानून लागू कर ही दिया था कि बाहर से कोई नेता बीकानेर मे प्रवेश नही कर सकता।

अत बीकानेर म पैदा हुए राष्ट्रीय स्तर के सेनानी बीकानेर के लिए पराए और प्रवासी बनकर अज्ञात और अज्ञेय हो गए।

जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी, दोनो का घनिष्ठ सम्बन्ध था एम एन राय और अर्जुनलाल सेठी से। जयपुर हो या अजमेर, बगरहट्टा और उस्मानी सेठीजी के यहाँ ठहरते थे अथवा सेठीजी ही उनको पुलिस से छिपाकर रखते थे। *अर्जुनलाल सेठी और गणेशशकर विद्यार्थी*, दोनो स्वय को खतरे मे डालकर भी क्रान्तिकारियो और स्वतन्त्रता सेनानियो को पनाह दिया करते थे। जे बगरहट्टा न तो सेठीजी की अध्यक्षता मे काग्रेस के मन्त्री के रूप मे काफी अरसे तक काम किया था। राजस्थान मे स्टेट पीपुल्स कान्फ्रेस मे अर्जुनलाल सेठी अध्यक्ष थे और बगरहट्टा प्रधानमन्त्री। वैसे भी सेठीजी का बीकानेर से गहरा सम्बन्ध था क्योकि उनकी सुपुत्री सुदर्शनाकुमारी *की शादी (अन्तर्जातीय विवाह) ब्राह्मणवशीय तारानाथ* रावल से हुई थी। सुदर्शनाकुमारी बीकानेर के कोचरो के मौहल्ले मे स्थित भैरवरत्न मातृम उच्च माध्यमिक विद्यालय मे वर्षों तक प्रधानाध्यापिका रहीं। उनके पुत्र का अर्थात् सेठीजी के दोहिते योगेन्द्रनाथ रावल का आज से दो साल पूर्व देहान्त हुआ।

श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीयजी ने सेठीजी का पुण्यस्मरण करते हुए एक घटना का उल्लेख करते हुए कहा है—— सन् 28 मे दिल्ली आए तो मुझ अपने साथ शौकत उस्मानी के यहाँ ले गये। उस्मानी साहब उन

दिनो भारत सरकार से पोशीदा रहकर सदर बाजार के एक कमरे मे रह रहे थे। सैकड़ो राज की बाते सुनी। सेठीजी ने मुझे वहॉ कभी-कभी आते-जाते रहने को कह दिया था। 4-5 रोज के बाद जाकर देखता हूँ तो जीने के दरवाजे पर ताला लगा हुआ था। मै किसी से पूछूँ कि एक मुसलमान (जो शायद मकान मालिक का नौकर था) स्वय ही बोला— कहिये हजरत, किसकी तलाश मे है आप?

यहाँ एक साहब रहते हैं उन्ही से मिलना है।

यहॉ तो कोई साहब नहीं रहते मुद्दतो से ताला बन्द है। आप उनसे कब मिले थे?

मैं इसका जवाब न देकर जीने से उतर आया और समझ गया कि पुलिस को गन्ध मिल गई है, शायद इसलिए उड़न-छू हो गये और यह नौकर मुझे सी आई डी समझकर चकमा दे रहा है। फिर एक-दो माह बाद पत्रो मे पढ़ा कि देश मे भिन्न-भिन्न भागो से कम्युनिस्ट पकड़ कर मेरठ जेल मे रखे गए हैं और मेरठ षड्यन्त्र केस नाम से उन पर मुकदमा चल रहा है। उन्ही अभियुक्तो मे शौकत उस्मानी भी थे।'

कहने का अर्थ यह है कि अजमेर एक ऐसा क्षेत्र था जहाँ जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी श्री अर्जुनलाल सेठी के यहॉ कभी प्रकट कभी पोशीदा मिला करते थे। सेठीजी स्वय क्रान्तिकारी भी थे और काग्रेसी भी और एक समय बगरहट्टा और उस्मानी भी उग्रवादी काग्रेसी थे। बगरहट्टा और उस्मानी दोनो के वरिष्ठ साथी थे सेठीजी।

एक महत्त्वपूर्ण बात यह भी थी कि मौलाना हसरत मोहानी सेठीजी के मित्र भी थे, बगरहट्टा और उस्मानी दोनो के कॉमरेड। हसरत मोहानी वह साथी थे जिनके नेतृत्व मे वामपन्थी काग्रेस सदस्यो की एक तैयारी समिति बनी थी जिसे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के लिए कानपुर पार्टी सम्मेलन बुलाना था। यही वजह थी कि प्रथम सम्मेलन मे बगरहट्टा के साथ अर्जुनलाल सेठी भी कानपुर आए थे और प्रतिनिधि के रूप मे भाग लिया था। शौकत उस्मानी और डॉंगे जेल मे होने के कारण सम्मेलन मे नहीं आ सके थे।

इसी तरह जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी, दोनो एम एन राय और एस ए डॉंगे से जुड़े हुए थे। एम एन राय और उस्मानी रूस मे एक साथ थे फिर सन् 1920 मे ताशकन्द मे स्थापित भारत की कम्युनिस्ट पार्टी मे

एक साथ थे तथा राय के मास्को से बाहर जाने या उस्मानी के भारत मे आने पर पत्र–व्यवहार होता रहता था और खास बात यह थी कि राय और उस्मानी कानपुर षड्यन्त्र केस के सहअभियुक्त भी थे। राय–उस्मानी द्वारा भेजी गई भारत सम्बन्धी रिपोर्टों को 'वैनगार्ड' मे छापते थे। डॉगे भी दोनो के साथ कानपुर केस मे सहअभियुक्त थे।

जे बगरहट्टा एम एन राय के साथ उसी तरह सम्बन्धित थे जैसे उस्मानी। जे बगरहट्टा ने राय के द्वारा प्रकाशित 'अपील' को राष्ट्रवादियो के नाम अपील' बनाकर काग्रेस अधिवेशन मे वितरित किया था जिसने सनसनी पैदा कर दी थी। इस काम मे जे बगरहट्टा के साथ के एन जोगलेकर और सेठी भी थे और उस्मानी ने इसकी सराहना की थी।

फिर जे बगरहट्टा ने एम एन राय के नाम कम्युनिस्ट पार्टी बनाने के लिए एक सुझावात्मक 'खुला पत्र' लिखा था जिसे डॉगे द्वारा सम्पादित सोशलिस्ट' ने छापा फिर एम एन राय ने वैनगार्ड' मे छापा और उस पर भारत और प्रवासी भारत के कम्युनिस्टो मे व्यापक बहस छिड गई थी और इसका परिणाण यह निकला कि 26 दिसम्बर, सन् 1925 को कानपुर मे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी' की स्थापना की गई और उसमे जे पी बगरहट्टा और एस बी घाटे, दोनो को पार्टी का जनरल सैक्रेटरी चुना गया। कानपुर बोल्शेविक षड्यन्त्र केस' के सिलसिले मे गिरफ्तार एस ए डॉगे और शौकत उस्मानी को इसकी सूचना मिली तो उन्होने इस पर अपनी प्रसन्नता प्रकट की। इस चीज को दोहराना अनुचित नही होगा कि बगरहट्टा और उस्मानी एम एन राय के विचारो से काफी हद तक प्रभावित थे।

जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी, दोनो ट्रेड यूनियन नेता थे। बगरहट्टा ने रेवाड़ी मे Sweepers and Scavangers Union की स्थापना की थी हरिजनो की माँगो के लिए सघर्ष भी किया था। जब हड़ताल हुई तो बगरहट्टा ने इसका नेतृत्व किया जिसके परिणामस्वरूप उन्हे गिरफ्तार किया गया और 6 माह की जेल–यात्रा भी भोगनी पड़ी। उन्होने AITUC के सम्मेलन मे भी प्रतिनिधित्व किया था। बाद मे अकाल राहत के लिए गिरफ्तार हुए और बीकानेर मे अनाज निकासी आन्दोलन मे तीसरी बार गिरफ्तार किए गए। सबसे पहले एटक सम्मेलन मे ही उनका सम्पर्क लाला लाजपत राय से हुआ था जिन्होने उस सम्मेलन की अध्यक्षता की। डॉगे से भी वहीं साक्षात्कार हुआ था।

इसी तरह अजमेर मे एक मीटिग के सिलसिले मे जवाहरलाल नेहरू आए और कुछ मजदूर नेताओ ने उनसे अजमेर मे ट्रेड यूनियन आन्दोलन शुरू करने का अनुरोध किया तो नेहरूजी ने तत्काल कहा— तुम उस्मानी से क्यो नहीं कहते वह सब कर लेगा।' बाद मे उस्मानी ने अजमेर मे रेलवे वर्कशॉप यूनियन का पुनर्गठन किया। उन्होने गोरे अफसरो द्वारा फैलाए गए आतक का मुकाबला किया। रेलवे वर्कर्स ने उस्मानी को बी बी एण्ड सी आई रेलवे मेन्स यूनियन का अध्यक्ष घोषित कर दिया। इसके कुछ अरसे बाद उस्मानी को यूनियन का जनरल सैक्रेटरी बनाकर मुम्बई के मुख्य कार्यालय मे भेज दिया गया। कॉ झाबवाला अध्यक्ष के रूप मे काम कर रहे थे।

जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी दोनो एम एन राय के माध्यम से इण्टरनेशनल के दुनिया–भर के ट्रेड यूनियन नेताओ के सम्पर्क मे आते रहते थे। ब्रैडले और स्प्रैट का नाम तो सुपरिचित है ही जो मेरठ केस मे उस्मानी के सहअभियुक्त थे। इधर जे बगरहट्टा का भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के जनरल सैक्रेटरी के रूप मे भी सम्पर्क बनाए रखना स्वाभाविक ही था।

यो तो किसी भी औपनिवेशिक देश मे कम्युनिस्ट पार्टी का निर्माण आसानी से नही हुआ करता। उसकी पृष्ठभूमि मे भूमिगत क्रान्तिकारियो की साम्राज्यवाद विरोधी कार्यवाहियॉ किसानो के लम्बे आन्दोलन मजदूरो की जुझारू हड़ताले आम–लोगो के आक्रोश जन–सगठनो की गतिविधियॉ और द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद और ऐतिहासिक वर्ग–विश्लेषण के सघर्षशील विचारो की सक्रियताएँ एक साथ जुड़ती है किन्तु इस सबमे सर्वहारा वर्ग के पक्षधर व्यक्तियो की जो महत्त्वपूर्ण पहल पर हिस्सेदारी होती है उसकी अनदेखी नही की जा सकती। इसीलिए यहॉ अन्यो के अलावा राजस्थान के चन्द व्यक्तियो के प्रयासो की ओर सकेत किया जा रहा है जिनमे से एक जे बगरहट्टा हैं।

भरतपुर के सत्यभक्त, बीकानेर के जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की सस्थापना मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वालो मे से थे। सन् 19[illegible] उस्मानी मास्को से लौटने के बाद बनारस मे एक [illegible] किया जो भागीदार बना और उस्मानी 'कानपुर बोल[illegible] मे डॉगे नलिनी और मुजफ्फर अहमद के साथ जेल की

सत्यभक्त और बगरहट्टा ने लाहौर के ग्रुप मुजफ्फर अहमद के कोलकाता ग्रुप, डॉगे के महाराष्ट्र ग्रुप, मद्रास के चेट्टियार ग्रुप आदि सभी स्थानो के ग्रुपो और व्यक्तिगत कम्युनिस्टो को कानपुर मे एकत्रित करने और राष्ट्र स्तरीय पार्टी की स्थापना का सम्मेलन आयोजित करने की पहल की।

इधर जे बगरहट्टा ने सन् 1924 मे एम एन राय को An Open Letter to M N Roy' लिखा जिसमे कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के लिए आवश्यक सुझाव दिए गए थे और डॉगे द्वारा सम्पादित 'सोशलिस्ट' और एम एन राय के 'वैनगार्ड' मे प्रकाशित तो किया ही गया था, साथ ही कई बिन्दुओ मे उस 'खुले पत्र' की सहमति मे अपने विचार जोड़कर एक अच्छी-खासी भूमिका भी तैयार कर दी थी। एम एन राय ने तो इसे लेकर अलग से एक लम्बा विश्लेषणात्मक लेख भी लिख दिया था। इस पर भी अच्छी-खासी बहस हुई।

इस पृष्ठभूमि मे 26 दिसम्बर, 1925 को भारत की धरती पर कानपुर मे राष्ट्रीय स्तर की भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी' की स्थापना का अधिवेशन तीन दिन तक अर्थात् 28 दिसम्बर तक चला जिसमे जे पी बगरहट्टा के साथ राजस्थान के महान क्रान्तिकारी और कांग्रेस मे तिलक के अनुयायी अर्जुनलाल सेठी भी थे। ये वही सेठीजी थ जो शौकत उस्मानी को अपने यहाँ भूमिगत रखते थे, तो काकोरी केस के शहीद अशफाकुल्ला को भी छिपा कर रखते थे।

चाहे इसे मामूली बात ही समझी जाए किन्तु हकीकत यही है कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के निर्माण मे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से राजस्थान के चार व्यक्ति थे—सत्यभक्त (भरतपुर), अर्जुनलाल सेठी (अजमेर) और बाकी दो का जन्म इसी बीकानेर मे हुआ था। इन दोनो मे एक (शौकत उस्मानी) कानपुर कम्युनिस्ट षड्यन्त्र केस' मे जेल मे थे और दूसरे जे पी बगरहट्टा, जिन्हे एस बी घाटे के साथ भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी' का प्रथम महासचिव निर्वाचित किया गया था।

जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी ने जिन विश्वप्रसिद्ध घटनाओ को अपने मानसपटल पर अकित किया था उनमे सर्वाधिक प्रभावोत्पादक घटना थी सन् 1914 से सन् 1918 का प्रथम विश्वयुद्ध, जिसके अन्तराल मे सन् 1917 मे सारी दुनिया को रोमाचित करने वाली घटना थी—रूस की महान अक्टूबर क्रान्ति की घटना। इस विश्वयुद्ध और इस विश्वक्रान्ति ने दुनिया के हर क्षेत्र को प्रभावित किया किन्तु इससे सबसे

इसी तरह अजमेर मे एक मीटिग के सिलसिले मे जवाहरलाल नेहरू आए और कुछ मजदूर नेताओ ने उनसे अजमेर मे ट्रेड यूनियन आन्दोलन शुरू करने का अनुरोध किया तो नेहरूजी ने तत्काल कहा— तुम उस्मानी से क्यो नही कहते वह सब कर लेगा।' बाद मे उस्मानी ने अजमेर मे रेलवे वर्कशॉप यूनियन का पुनर्गठन किया। उन्होने गोरे अफसरो द्वारा फैलाए गए आतक का मुकाबला किया। रेलवे वर्कर्स ने उस्मानी को बी बी एण्ड सी आई रेलवे मैन्स यूनियन का अध्यक्ष घोषित कर दिया। इसके कुछ अरसे बाद उस्मानी को यूनियन का जनरल सैक्रेटरी बनाकर मुम्बई के मुख्य कार्यालय मे भेज दिया गया। कॉ झाबवाला अध्यक्ष के रूप मे काम कर रहे थे।

जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी दोनो एम एन राय के माध्यम से इण्टरनेशनल के दुनिया-भर के ट्रेड यूनियन नेताओ के सम्पर्क मे आते रहते थे। ब्रैडले और स्प्रैट का नाम तो सुपरिचित है ही जो मेरठ केस मे उस्मानी के सहअभियुक्त थे। इधर जे बगरहट्टा का भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के जनरल सैक्रेटरी के रूप मे भी सम्पर्क बनाए रखना स्वाभाविक ही था।

यो तो किसी भी औपनिवेशिक देश मे कम्युनिस्ट पार्टी का निर्माण आसानी से नही हुआ करता। उसकी पृष्ठभूमि मे भूमिगत क्रान्तिकारियो की साम्राज्यवाद विरोधी कार्यवाहियॉ किसानो के लम्बे आन्दोलन मजदूरो की जुझारू हड़ताल आम-लोगो के आक्रोश, जन-सगठनो की गतिविधियॉ और द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद और ऐतिहासिक वर्ग-विश्लेषण के सघर्षशील विचारो की सक्रियताएँ एक साथ जुड़ती हैं, किन्तु इस सबमे सर्वहारा वर्ग के पक्षधर व्यक्तियो की जो महत्त्वपूर्ण पहल पर हिस्सेदारी होती है उसकी अनदेखी नही की जा सकती। इसीलिए यहाँ अन्यो के अलावा राजस्थान के चन्द व्यक्तियो के प्रयासो की ओर सकेत किया जा रहा है जिनमे से एक जे बगरहट्टा हैं।

भरतपुर के सत्यभक्त बीकानेर के जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की सस्थापना मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वालो मे से थे। सन् 1922 मे शौकत उस्मानी ने मास्को से लौटने के बाद बनारस मे एक कम्युनिस्ट सैल स्थापित किया था जो भागीदार बना और उस्मानी कानपुर बोल्शेविक षड्यन्त्र केस' मे डॉगे नलिनी और मुजफ्फर अहमद के साथ जेल की सजा काटने लगे।

सत्यभक्त और बगरहट्टा ने लाहौर के ग्रुप, मुजफ्फर अहमद के कोलकाता ग्रुप, डॉगे के महाराष्ट्र ग्रुप मद्रास के चेट्टियार ग्रुप आदि सभी स्थानो के ग्रुपो और व्यक्तिगत कम्युनिस्टो को कानपुर मे एकत्रित करने और राष्ट्र स्तरीय पार्टी की स्थापना का सम्मेलन आयोजित करने की पहल की।

इधर जे बगरहट्टा ने सन् 1924 मे एम एन राय को An Open Letter to M N Roy लिखा जिसमे कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के लिए आवश्यक सुझाव दिए गए थे और डॉगे द्वारा सम्पादित सोशलिस्ट' और एम एन राय के 'वैनगार्ड' मे प्रकाशित तो किया ही गया था साथ ही कई बिन्दुओ मे उस खुले पत्र' की सहमति मे अपने विचार जोड़कर एक अच्छी-खासी भूमिका भी तैयार कर दी थी। एम एन राय ने तो इसे लेकर अलग से एक लम्बा विश्लेषणात्मक लेख भी लिख दिया था। इस पर भी अच्छी-खासी बहस हुई।

इस पृष्ठभूमि मे 26 दिसम्बर, 1925 को भारत की धरती पर कानपुर मे राष्ट्रीय स्तर की 'भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी' की स्थापना का अधिवेशन तीन दिन तक अर्थात् 28 दिसम्बर तक चला जिसमे जे पी बगरहट्टा के साथ राजस्थान के महान क्रान्तिकारी और काग्रेस मे तिलक के अनुयायी अर्जुनलाल सेठी भी थे। ये वही सेठीजी थे जो शौकत उस्मानी को अपने यहाँ भूमिगत रखते थे तो काकोरी केस के शहीद अशफाकुल्ला को भी छिपा कर रखते थे।

चाहे इसे मामूली बात ही समझी जाए किन्तु हकीकत यही है कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के निर्माण मे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से राजस्थान के चार व्यक्ति थे—सत्यभक्त (भरतपुर) अर्जुनलाल सेठी (अजमेर) और बाकी दो का जन्म इसी बीकानेर मे हुआ था। इन दोनो मे एक (शौकत उस्मानी) कानपुर कम्युनिस्ट षड्यन्त्र केस' मे जेल मे थे और दूसरे जे पी बगरहट्टा जिन्हे एस बी घाटे के साथ भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का प्रथम महासचिव निर्वाचित किया गया था।

जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी ने जिन विश्वप्रसिद्ध घटनाओ को अपने मानसपटल पर अकित किया था उनमे सर्वाधिक प्रभावोत्पादक घटना थी सन् 1914 से सन् 1918 का प्रथम विश्वयुद्ध जिसके अन्तराल मे सन् 1917 मे सारी दुनिया को रोमाचित करने वाली घटना थी—रूस की महान अक्टूबर क्रान्ति की घटना। इस विश्वयुद्ध और इस विश्वक्रान्ति ने दुनिया के हर क्षेत्र को प्रभावित किया किन्तु इससे सबसे

ज्यादा उद्वेलित हुए वे नौजवान जिन्हे कुछ कर-गुजरने के लिए नई लालिमा का आभास हुआ था। यही बगरहट्टा और उस्मानी की जिन्दगी का पहला निर्णायक मोड था।

प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त हुआ ही था कि सन् 1919 मे जलियाँवाला बाग की सभा मे किए गए हजारो निहत्थे लोगो के निर्मम सामूहिक हत्याकाण्ड ने हमारे इन दोनो नौजवानो के दिलो मे स्वाधीनता सग्राम मे कूद पड़ने के आवेग को और प्रबल कर दिया।

यह आग मन्थर होती किन्तु जब महात्मा गाँधी ने सविनय अवज्ञा के सत्याग्रह कार्यक्रम के अन्तर्गत क्लाइव मार्का अग्रेजियत की शिक्षा' के बहिष्कार का आह्वान किया तो जे बगरहट्टा उस शिक्षा का बहिष्कार करके रेवाड़ी (पजाब) की राजनीति मे सक्रिय हो गए और उस्मानी इससे कुछ पहले भारत की आजादी के लिए हथियार लेने रूस चले गए। यहॉ उल्लेखनीय बात यह है कि दोनो प्रतिभाशाली होते हुए भी मैट्रिक से आगे नहीं जा सके यद्यपि दोनो मे डिग्रियाँ हासिल करने और अच्छी नौकरियाँ हासिल करने की भरपूर क्षमता थी। दोनो का हिन्दी और अग्रेजी दोनो भाषाओ पर कमाल का अधिकार था।

जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी ने काग्रेस मे भाग लिया तो तिलक और लाला लाजपतराय की लाइन मे खड़े होकर जो गॉधीवाद से मेल नही खाती थी। यहाँ राजस्थान मे वे अर्जुनलाल सेठी के क्रान्तिकारी विचारो के साथ थे। गाँधीवादियो से उनकी नहीं पटी जिन्होने झूठे मेम्बर बनाकर सेठीजी को हरा दिया था।

कम्युनिस्टो ने जब काग्रेस से अलग हटकर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना का निर्णय लिया तो जे बगरहट्टा AICC की सदस्यता से आकर कम्युनिस्ट पार्टी के सस्थापको मे शामिल हो गए और एस बी घाटे के साथ राष्ट्रीय स्तर की पार्टी के महासचिव हो गए। इधर शौकत उस्मानी कानपुर बोल्शेविक षड्यन्त्र केस मे कॉ एस ए डॉगे के साथ जेल की सजा भोग ही रहे थे।

राजनीतिक परिस्थितियो ने जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी दोनो को बीकानेर की क्षेत्रीयता से प्रतिबधित कर तत्कालीन स्वाधीनता सग्राम के व्यापक क्षेत्र मे उछाल दिया। अत दोनो बीकानेर के लिए अज्ञात और अपरिचित-से रह गये या रख दिए गए।

जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी, दोनो ने पत्रकारिता की। बगरहट्टा द्वारा सम्पादित गणराज्य' मे तत्कालीन राजनीति पर तीखे व्यग्य तो होते ही थे, साथ ही राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय समस्याओ पर वे गम्भीरता और निर्भयता से अपना विश्लेषण प्रस्तुत करते थे। जयपुर से निकलने वाले The New Leader के सम्पादक के रूप मे राजस्थान की राजनीति मे तहलका मचा दिया था। इनकी पत्रकारिता पर आगे और लिखा जायेगा।

शौकत उस्मानी भी लेखक और पत्रकार थे। अलफतह' 'इजिप्शियन गजट' फ्री प्रेस जर्नल', रेडियन्स' कम्पास और पयाम-ए-मजदूर' आदि पत्र-पत्रिकाओ मे सम्पादन सहसम्पादन राजनीतिक विश्लेषण टिप्पणी लेखन स्वतन्त्र लेखन, सवाद प्रेषण जैसी अनेक विधाओ मे उन्होने अपने नाम से या छद्म-नाम से इतना गहरा और इतना अधिक मात्रा मे लिखा कि उनका सकलन करना और उनका अध्ययन प्रस्तुत करना अपने-आप मे एक बडी समस्या है।

बगरहट्टा और उस्मानी ने तीन-तीन बार जेल-यातनाएँ झेली। जे बगरहट्टा ने सफाई कर्मचारियो की हडताल के सिलसिले मे अकाल राहत आन्दोलन मे और अनाजनिकासी विरोधी आन्दोलन के सिलसिले मे जबकि शौकत उस्मानी ने कानपुर वोल्शेविक षड्यन्त्र' मेरठ षड्यन्त्र केस' और भारत सुरक्षा अधिनियम' के अन्तर्गत लम्बी जेल-यातनाएँ भोगीं।

दोनो ने लम्बे अरसे तक किसी एक पार्टी मे जमकर काम नही किया। जे बगरहट्टा अजमेर काग्रेस मे रहे मतभेद देखकर छोड दिया रेवाडी काग्रेस और ए आई सी सी के सदस्य फिर कम्युनिस्ट पार्टी मे जाकर महासचिव बन गए मतभेद और आशका होने पर वहाँ से त्याग पत्र देकर रेडिकल फिर पुन काग्रेसी और समाजवादी बने तथा आखिर उसे भी छोड़ दिया। उनके उग्र स्वभाव और स्पष्टवादिता ने उन्हे स्थायी तौर पर कही टिकने नही दिया। यही हाल उस्मानी का था। ताशकन्द की पार्टी से बनारस मे कम्युनिस्ट दल बनाया, जेल जाते रहे काग्रेस मे भी रहे। काहिरा और पाकिस्तान गए, पत्रकार और लेखक बने। लेकिन वे काग्रेस मे थे तो भी कम्युनिस्ट थे और कम्युनिस्ट थे तो भी उग्र कम्युनिस्ट। उस्मानी सरकारी दस्तावेजो साथियो और अखबारो मे कम्युनिस्ट ही रहे। लेकिन स्थायी स्थान नही बना सके।

जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी ने अपनी जिन्दगी मे पहले और दूसरे विश्वयुद्ध को अर्थात् दो विश्वयुद्धो की विभीषिकाओ को अनुभूत किया था। उनकी समझ और आकाक्षा के अनुरूप दूसरे विश्वयुद्ध मे मित्र राष्ट्रो की विजय और खासतौर पर सोवियत सघ की लाल फौजो के सामने हिटलर की फौजो की पराजय और फासिस्ट इरादो के ध्वस्त होने से जहाँ एक ओर प्रसन्नता हुई, वहाँ यह जानकर दु ख का एहसास भी हुआ कि द्वितीय युद्ध मे आरम्भ से अन्त तक पराजित और विजेता देशो के लगभग पाँच करोड़ लोगो की जाने गईं उनके परिवार बर्बाद हुए और सैकडो खरब डालर का साजोसामान नष्ट हो गया तथा हासिल किसी को कुछ नही हुआ।

उनके जीवनकाल मे इससे भी भयकर घटना यह हुई कि युद्ध की समाप्ति के बाद अपनी धौसपट्टी व आतक फैलाने के लिए अमरीकी सत्ता ने हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम गिराकर उन्हे चन्द मिनटो मे ही राख के ढेर मे बदल दिया। जे बगरहट्टा ने जहाँ तीव्र आक्रोशभरे वक्तव्य दिए वहाँ शौकत उस्मानी ने एनीमल कान्फ्रेस शीर्षक से एक व्यग्यपूर्ण पुस्तिका प्रकाशित की।

स्वभाव से बगरहट्टा और उस्मानी तीखे और राजनीति मे गर्मागर्म थे। स्वाभिमान उन दोनो की रग-रग मे भरा था। वे हठी और अकडू भी एक-से ही थे। आसानी से झुकना उनकी आदत नही थी। कोई भी दल उन पर अनुशासन का डण्डा चलाकर उन्हे नही हॉक सकता था। यही कारण था कि वे दोनो अधिक समय तक कही टिके रहकर राजनीति नही चला सके न ही अपना स्थायित्व कायम रख सके। मुजफ्फर अहमद दोनो से नाराज थे, डाह भी रखते थे।

जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी का प्रत्यक्षत मिल-बैठना नही के बराबर था। एक ही बीकानेर रियासत मे पैदा होने पर भी बगरहट्टा का बचपन श्रीडूँगरगढ मे बीता तो उस्मानी का बीकानेर मे। हो सकता है कि किशोरावस्था मे कुछ अरसे तक बीकानेर मे सहपाठी रहे हो जैसा कि मुजफ्फर अहमद ने कहा है। किन्तु 16 साल की उम्र मे बगरहट्टा रेवाड़ी चले गए तो 19 की उम्र मे उस्मानी रूस की ओर। फिर बगरहट्टा पजाब की राजनीति से मुम्बई पहुँच गए और उस्मानी रूस से भारत आकर कानपुर बोल्शेविक षड्यन्त्र केस' और मेरठ षड्यन्त्र केस' और फिर डी आई आर मे जगह-जगह की जेलो मे सजाएँ काटते रहे। सन् 1945 से

बगरहट्टा अस्वस्थता के कारण बीकानेर मे रहे जहाँ सन् 1965 मे उनका निधन हो गया। शौकत उस्मानी सन् 1975 से पहले बीकानेर न आ सके न लाए जा सके।

पूछा जाता है कि इतना सब करने के बाद भी जे बगरहट्टा और शौकत उस्मानी किनारे पर खड़े क्यो दिखाई देते रहे और कही-कही उपेक्षित और अवमानित तक क्यो होते रहे? इसका जवाब मिलेगा सदियो से पराधीन भारत की आम-जनता मे जडे जमा चुकी गुलामी की मानसिकता मे जिसमे एकाएक क्रान्तिकारी जागृति लाने हेतु दोनो द्वारा उग्र वामपन्थी सक्रियता को अपनाकर महत्त्वाकाक्षी परिणाम प्राप्त करने की आतुरता। भारत की राजनीति मे अ भा काग्रेस पार्टी की अहम भूमिका रही। इसमे लाल-बाल-पाल का त्रिक एक तरफ था तो गॉधीवाद दूसरी तरफ। सुभाष एक तरफ तो गॉधी दूसरी तरफ। कम्युनिस्ट काग्रेसी एक तरफ तो गॉधीवादी दूसरी तरफ। गरम दल एक तरफ तो नरम दल दूसरी तरफ। जनता कभी उग्र कभी हताश तो कभी बीच के दोराहे पर खडी। असली टकराव वाम और दक्षिण मे। मध्यमार्गियो (नेहरू-लोहिया आदि) का एक चेहरा वाम की ओर तो दूसरा दक्षिण की ओर। मौटे तौर पर यह अन्दरूनी टकराहट (अन्तर्विरोध या अन्तर्द्वन्द्व) क्रान्तिकारी प्रक्रिया और समझौतावाद-अवसरवाद की प्रक्रिया मे निहित थी।

तत्कालीन भारत का समाज सामन्तवाद-पूँजीवाद से त्रस्त था। वह राहतपसन्द था मौके पर जो मिल जाए उसी से सन्तुष्ट। इसलिए अवसरवादी समझौतो के आह्वान की ओर झुकाव बढता गया। गॉधीवादियो को अधिक से अधिक सस्ती लोकप्रियता हासिल होती गई। मालिको के प्रचारतन्त्र ने उनके कार्यक्रमो को खूब उछाला। उदारवादी हार कर भी जीत गए तो अनुदारवादी जीतकर भी किनारे कर दिए गए। इसी सन्दर्भ मे बगरहट्टा और उस्मानी की किनाराकशी को समझना होगा। आजादी के आन्दोलन के दौरान जो दिग्गज उन्हे हाथ मे हाथ लिए साथ लेकर चलते थे स्वतन्त्र भारत मे उनके लिए वे अजनबी हो गए। राजस्थान मे क्रान्तिकारी अर्जुनलाल सेठी और विजयसिह पथिक को मात देने वाले उदारवादी ही तो थे जो झूठे सदस्य फार्म भरवाकर येन-केन प्रकार से जीत जाते थे और तिलक-लाला-मार्गियो को दर-किनार करते थे। इतिहास मे ऐसे बहुत-से उदाहरण मिल जायेगे।

किन्तु इतिहास यहॉ समाप्त नही होता। स्पार्टाकसो का हार-जीत

का लम्बा सघर्ष दास–मालिको की मिल्कियत को ध्वस्त कर देता है किसानो के सुदीर्घ एव जुझारू सघर्ष सामन्तो और महाराजाओ की निरकुशता को धूल चटा सकते हैं तो मजदूरो मजलूमो, किसानो और अन्यान्य शोषितो के अनवरत क्रान्तिकारी सघर्ष उदार–अनुदार धनबली साम्राज्यवाद को औंधेमुँह पछाड़ सकते हैं। बगरहट्टा, उस्मानी सेठी पथिक और सबसे बढकर भगतसिह व आम लड़ाकू इनसान जग जीतनेवाली मानवशृखला की महत्त्वपूर्ण कड़ियाँ है। मौकासाज समझौतो का समाहार व्यवस्था के बदलाव के साथ हो जाता है।

अन्तर्विरोध

यह ब्रह्माण्ड प्रकृति प्राणी समाज प्रत्येक व्यक्ति और उसका व्यक्तित्व अन्तर्विरोध अथवा अन्तर्द्वन्द्व का सयोजन है। इस नाते किसी के जीवन मे अन्तर्विरोध का दिखाई देना या देख पाना एक अनिवार्य स्वाभाविक प्रक्रिया है।

जे बगरहट्टा का स्वय का व्यक्तिगत जीवन उनकी विविध राजनीतिक पार्टियो का प्रत्येक प्रकरण और उनका दलगत व्यक्तित्व अनेक प्रकार की अन्तर्विरोधी भगिमाओ का समुच्चय है।

यहाँ दिक्कत यह है कि उनके जीवन को समग्रता से, तटस्थता से और गहराई से टकित अकित और आकलित करने के लिए जितने स्रोत अपेक्षित है उनका अधिकतम अश अनुपलब्ध है या यो कहे कि वे न्यूनतम (लगभग नही के बराबर) उपलब्ध हैं। कारण स्पष्ट है कि उन्होने खुद ने अपने बारे मे न तो कुछ लिखा, न किसी को कुछ बताया और न ही अन्तरगता कायम की। कुछ यदि था या हो सकता था तो उसे पुलिस ने छापा मार कर जब्त कर लिया। फिर गरम दल के व तेज स्वभाव के कारण उन्हे बहुत सयम से काम लेना पडा। परिवार मे उनकी राजनीति का सरोकार था नही, अत किसी ने उनके भीतर झॉकने की जुर्रत नही की। अत वहाँ भी कोई प्रामाणिक स्रोत नही मिला। पत्रकार वे खुद रहे अत किसी अन्य को साक्षात्कार देने का सवाल ही नही था फिर तब तक सूचनातन्त्र भी इतना विकसित नही था। आए दिन इधर से उधर स्थान बदलते रहने की वजह से अभिलेख कहॉ मिलते। पुलिस ने जो, जहॉ से जिस रूप मे लिया, उसे बिगाडकर एक विकृतरूप दे दिया। आवासीय और राजनीतिक अस्थिरताओ ने इतिहासकार को मौका ही नही दिया। इसलिए इतिहास चुप रह गया। यह स्रोत भी गया।

अब जो कुछ मिला वह इतिहास के उस प्रसग मे जहॉ सन् 1925 मे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना का उल्लेख है जहाँ वे महासचिव चुने गए थे और इससे पहले एम एन राय से उनका पत्राचार हुआ था। इसके अलावा साप्ताहिक सेनानी के 1 अप्रैल 1970 के अक मे प्रकाशित

बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति मे सस्था के स्वरूप' शीर्षक निबन्ध (चित्र के नीचे अकित— श्री जे बगरहट्टा') एव एक पत्र मे प्रकाशित श्री उपध्यानचन्द कोचर का बहुमुखी प्रतिभा के धनी जानकीप्रसाद बगरहट्टा शीर्षक लेख तथा जे बगरहट्टा के सबसे बड़े सुपुत्र श्री हरप्रसाद बगरहट्टा के हाथ से लिखा हुआ डेढ़-पृष्ठीय परिचय पत्र— स्व श्री जानकीप्रसादजी बगरहट्टा प्राप्त हुआ। साथ ही जे बगरहट्टा द्वारा सम्पादित The New Leader पत्र के छ अक भी मिले।

सन् 1914 मे जब प्रथम विश्वयुद्ध शुरू हुआ तो उसने चारो दिशाओ को अनुगुजित कर दिया। सारे देशो को बाहर और भीतर से झकझोर दिया। जे बगरहट्टा इस समय चौदह साल की उस खतरनाक व परिपक्वोन्मुखी किशोरावस्था को पार कर रहे थे जो तात्कालिक प्रतिबिम्बो से उद्वेलित होती रहती है। वातावरण मे औपनिवेशिक पराधीनता की चुनौती थी तो सामन्तशाही की वह घुटन भी थी जो बीकानेर के नीरो के दमनचक्र की देन कही जाती थी।

1915 मे गाँधीजी दक्षिणी अफ्रीका से भारत आए और उन्होने देश की राजनीति मे एक नई लहर पैदा कर दी। शिक्षा सत्र के समाप्त होते ही जे बगरहट्टा बीकानेर को छोड़ कर रेवाड़ी चले गए। फिर वहाँ से दिल्ली और लाहौर मे पढ़ने चले गए।

लाहौर मे एक ओर पढ़ाई तो उसी दौर म पजाब मे लाला लाजपतराय द्वारा प्रदत्त राजनीतिक आन्दोलन की ऊर्जा का एहसास।

यो करते एक ओर विश्वयुद्ध अपने उफान पर चल ही रहा था कि रूस युद्ध से अलग हट गया और उसने लेनिन के नेतृत्व म 1917 मे अक्टूबर क्रान्ति करके एक अभूतपूर्व अनुगूँज पैदा कर दी। बगरहट्टा जैसा के दिला म खलबली बढ़ने लगी।

सन् 1919 म युद्ध तो समाप्त हो गया किन्तु पजाब की ज्वाला बजाय कम होने के और बढ़ती गई जिसने 1919 के जलियाँवाला नरसहार के बाद तो इतना रौद्ररूप धारण कर लिया कि विवश होकर सन् 1920 म गाँधीजी को सविनय अवज्ञा कार्यक्रम के तहत 'बहिष्कार' का आह्वान करना पड़ा।

जब बहिष्कार आन्दोलन धारा और फैलने लगा तो जे बगरहट्टा अपनी शिक्षा का बहिष्कार कर अजमेर आ गए और अर्जुनलाल सेठी के

सम्पर्क मे आकर काग्रेस के सदस्य हो गए। श्री उपध्यानचन्द कोचर के अनुसार— अजमेर मे प्रान्तीय काग्रेस मे कार्य प्रारम्भ किया। काग्रेस का अजमेरी स्वरूप उन्हे रास नही आया। तत्कालीन नेताओ के परस्पर वैमनस्य उनकी स्वार्थपरता और उनके अहम् से तग आकर वह रेवाडी चले गए।' (— बहुमुखी प्रतिभा के धनी जानकीप्रसाद बगरहट्टा से साभार)

श्री भवानीशकर व्यास के अनुसार— दिखावे की राजनीति से उन्हे घृणा थी। वे किसी दल मे तो रह सकते थे पर दलदल मे रहना उन्हे स्वीकार्य नही था। दल मे भी अनुशासन के नाम पर व्यक्ति की इयत्ता अथवा गरिमा से वे सौदा नही कर सकते थे। भारतीय समाजवादी दल के सक्रिय सदस्य के रूप मे उन्होने विरोधी पक्ष की भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वाह किया। (— बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति मे सस्था के स्वरूप से साभार)

अजमेर काग्रेस मे तत्कालीन नेताओ के वैमनस्य की बात परिचय पत्र' मे भी कही गई है।

रेवाड़ी मे जाकर जे बगरहट्टा ने स्वीपर्स एण्ड स्कैवेजर्स यूनियन' का गठन कर एक ही पत्थर से दो शिकार करने का काम किया—एक ओर ट्रेड यूनियन फ्रण्ट मे अपनी सगठन क्षमता को प्रमाणित करना तो दूसरी ओर इसके साथ ही गाँधीजी के हरिजन उद्धार के सामाजिक कार्य का निर्वहन करना।

उन्होने सफाई कर्मचारियो की यूनियन के माध्यम से उनकी बुनियादी मॉगो को उठाया। उन्होने इसके लिए उन्हे सघर्ष मे उतारा और उनके सघर्ष को कुशल नेतृत्व प्रदान किया। जब उनका आन्दोलन कामयाबी की मजिल तक पहुँचा तो उन्हे आशातीत लोकप्रियता प्राप्त हो गई। इसी लोकप्रियता की वजह से रेवाडी नगरपालिका के चुनाव मे उन्हे अध्यक्ष के रूप मे निर्वाचित किया गया।

उन्होने अध्यक्ष के पद पर दो साल तक काम किया। इस अरसे मे रेवाड़ी की नगरपालिका ने अभूतपूर्व कार्य किए। बगरहट्टा की मशहूरी दूर-दूर तक फैल गई। पजाब प्रान्तीय काग्रेस कमेटी के द्वारा उन्हे ए आई सी सी का सदस्य बना दिया गया। वे लाला लाजपतराय की लाइन के पक्षधर होने के कारण उदारवादियो की ईर्ष्या के पात्र बने। अपनी

तर्कशक्ति और साफगोई से बड़े-बड़े गाँधीवादियो का मुँह बन्द कर देते थे। लाल-बाल-पाल के इन पक्षधरो और इनके आमने-सामने के उदारपन्थी पक्षधरो का अन्तर्विरोध उखाड़-पछाड़ करता रहता था। इसी दौर मे बगरहट्टा और एम एन राय का पत्राचार द्वारा सम्पर्क-सूत्र मजबूत होता जा रहा था। एम एन राय अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के नेता थे। वे लगातार इण्टरनेशनल की गतिविधियो के समाचार भेजते रहते थे। बगरहट्टा पर उनका विशेष प्रभाव था।

एम एन राय कानपुर बोल्शेविक षड्यन्त्र केस के अभियुक्त थे, जिन्हे भारत स बाहर यूरोप मे होने के कारण गिरफ्तार नही किया जा सका था। यह केस मार्च सन् 1924 मे शुरू हुआ था जिसमे एस ए डॉगे, शौकत उस्मानी, मुजफ्फर अहमद और नलिनी दास गुप्ता गिरफ्तार किए जा चुके थे। सिगारावेलु चेट्टियार भी अभियुक्त थे किन्तु बीमारी के कारण जमानत पर छूटे हुए थे रामचरणलाल शर्मा (पाण्डिचेरी मे शरणार्थी थे) और गुलाम हुसैन को मुखबिर होने के कारण क्षमादान दिया हुआ था। जे बगरहट्टा को इस केस की पूरी जानकारी थी और यह भी मालूम था कि एम एन राय इस कानपुर बोल्शेविक षड्यन्त्र केस म आरोपित हैं और अभियुक्त घोषित किए जा चुके है। उन्हे यह भी पता था कि बीकानेर के शौकत उस्मानी भी इसी केस मे गिरफ्तार किए जा चुके थे। उन्हे यह भी पता था कि एस ए डॉगे भी इसी मे गिरफ्तार हैं जिनके साथ उनका सम्पर्क हो चुका है। उन्हे यह भी मालूम था कि उनके मित्र के एन जोगलेकर डॉगे की गिरफ्तारी की वजह से उनके द्वारा सम्पादित सोशलिस्ट के कार्यकारी सम्पादक का काम कर रहे हैं।

ऐसी परिस्थिति मे दिनाक 8 सितम्बर, 1924 को जे बगरहट्टा ने अजमेर से एम एन राय को वह खुला पत्र' लिखा जिसने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी' की स्थापना के लिए बहस का मुद्दा खडा कर दिया। इस पत्र का उल्लेख पिछले पृष्ठो मे किया जा चुका है। यहाँ इस बात की ओर सकेत करना अनुपयुक्त नही होगा कि इस पत्र के सन्दर्भ मे उठी बहस मे भारतीय कम्युनिस्टो के व्यक्तिश वैचारिक अन्तर्विरोध उजागर होने लगे। केवल वैचारिक मतभेद ही नही, वैमनस्य भी दिखाई देने लगे। और वैमनस्य उभरने पर उसकी सीमाएँ भी फैलने लगती हैं कहाँ तक? नही कहा सकता।

दिसम्बर सन् 1924 के अन्तिम सप्ताह मे अ भा रा काग्रेस का

बेलगॉव महाधिवेशन' हुआ। इसमे 'राष्ट्रवादियो के नाम अपील' शीर्षक से एक पुस्तिका का वितरण किया गया, जो एम एन राय द्वारा दिनाक 15 दिसम्बर 1924 के वैनगार्ड' अक मे प्रकाशित अपील का किचित् सशोधित सस्करण था। इस पुनर्मुद्रित सस्करण के प्रकाशक थे AICC के सदस्य जानकीप्रसाद बगरहट्टा और अर्जुनलाल सेठी और मुद्रक के एन जोगलेकर जिन्होने इसे लेबर प्रेस मुम्बई-2 मे पुनर्मुद्रित करवाया था। जनवरी 1925 मे शुरू मे सरकार सोचने लगी थी कि जानकीप्रसाद बगरहट्टा अर्जुनलाल सेठी और के एन जोगलेकर को इस अपील के वितरण के लिए अभियुक्त बनाया जाय। कारण यह था कि गुप्तचर रिपार्ट मे जानकीप्रसाद बगरहट्टा का पत्राचार एम एन राय से था जो कानपुर षड्यन्त्र केस के अभियुक्त घोषित किए जा चुके थे, अर्जुनलाल सेठी खतरनाक क्रान्तिकारी' थे जिनका सम्बन्ध दिल्ली षड्यन्त्र केस' और 'आरहि मन्दिर हत्याकाण्ड' से था और के एन जोगलेकर सोशलिस्ट' पत्र के कार्यवाहक सम्पादक थे जो एस ए डॉगे के 'कानपुर षड्यन्त्र केस मे गिरफ्तार होने के कारण उनकी जगह सम्पादन का काम कर रहे थे।'

इसी अपील' को कानपुर षड्यन्त्र केस' की सुनवाई मे आधारभूत प्रमाण के रूप मे पेश किया गया था। इस अपील' के वैनगार्ड' मे प्रकाशित मूलपाठ मे सन्निहित कार्यक्रम के आरम्भ के बिन्दु मे कहा गया था—

National indendence Complate break from the empire
democratic republic based on universal suffrage
abolition of feudalism and landlordism etc

बाकी के बिन्दुओ मे राष्ट्रीयकरण कृषि का आधुनिकीकरण उद्योगो का विकास न्यूनतम वेतन, बाल-श्रम शोषण निषेध नि शुल्क अनिवार्य शिक्षा धार्मिक स्वतन्त्रता और अल्पसख्यको के अधिकार जैसे मुद्दे शामिल किए गए।

राष्ट्रवादियो से की गई अपील ने जहॉ बेलगॉव अधिवेशन मे एक प्रकार का उद्वेलन पैदा कर दिया वहॉ वामपन्थियो को नया सकेत भी दे दिया। यहाँ AICC का एक और अन्तर्विरोध उभर कर सामने आ गया।

इन शब्दो मे इस अपील का आह्वान था—

Brave patriots! Dont waste your energy in futile terrorism Your noble idealism and undaunted spirit demand a much wider

field of action The organism of a society subjugated and exploited for centuries, is surcharged with inflammable materials which once ignited by a revolutionary leadership, will shatter the chain of slavery The dynamic outburst of social forces is much more powerful than bombs The revolutionary action of the toiling masses will free India Let us organise and lead this action

बेलगॉव के काग्रेस–अधिवेशन के एक साल बाद कानपुर मे 28 दिसम्बर 1925 को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई। इसके त्रिदिवसीय अधिवेशन मे प्रस्तावो के प्रारूप को तैयार करने के लिए एक प्रस्ताव समिति' बनाई गई जिसमे एस बी घाटे जे बगरहट्टा, सत्यभक्त, के एन जोगलेकर एस हसन और कृष्णास्वामी सम्मिलित किए गए। दिनाक 28 दिसम्बर, 1925 को जो कार्यसमिति बनाई गई उसमे एम सिगार वेलु चेट्टियार को अध्यक्ष आजाद सोमानी को उपाध्यक्ष एस बी घाटे और जे बगरहट्टा को सयुक्त जनरल सैक्रेटरी कृष्णास्वामी अय्यगर को मद्रास से सत्यभक्त को कानपुर स मुजफ्फर अहमद को कोलकाता से और एस डी हसन को लाहौर से अपने–अपने प्रान्त के लिए सचिवो के रूप मे चुना गया। सत्यभक्त ने पार्टी के नामकरण पर आपत्ति की और चार दिन बाद राष्ट्रीय कम्युनिस्ट पार्टी' के निर्माण की घोषणा कर अलग हट गए। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का यह पहला अन्तर्विरोध था जो सतह पर दिखाई दे गया। लेकिन एक और अन्तर्विरोध भीतर ही भीतर बीजारोपण की प्रक्रिया मे था और वह था जे बगरहट्टा के केन्द्रीय कमेटी के सयुक्त जनरल सैक्रेटरी के रूप मे चुन लिए जाने पर किन्तु एकाएक सामने नहीं दिखाई दिया।

बाद मे कोलकाता मे सन् 1926 मे जे बगरहट्टा का उसी रूप मे चुना जाना प्रतिस्पर्द्धा के तीव्रतर होने का कारण बन गया।

अपने भीतर की ईर्ष्या के कारण एक कॉमरेड ने अपने–आप से कहा— कानपुर मे पहली बार दिखाई देने वाला केन्द्रीय जनरल सैक्रेटरी और हम सीनियर प्रान्तो मे धूल फॉके। करने होगे दो–दो हाथ।' औरो से मिलकर सोचा होगा—रास्ते के कॉटे को हटाने की तरकीब तो तलाशनी ही होगी।

जे बगरहट्टा पर सवाल खडा किया गया— वह कम्युनिस्ट कैसे और कब से बना? बेढगा और बेतुका था यह सवाल—खारिज कर दिया गया।

एम एन राय के आह्वान को काट–छॉट कर दुबारा अपने और सेठी के नाम से प्रकाशित करने और बेलगॉव अधिवेशन मे वितरित करने

का अधिकार किसने दिया?' अपील' के व्यापक असर ने इसे निषिद्ध कर दिया।

फिर नीचे लिखे सन्देहो को प्रचारित किया गया— उसका और एम एन राय का व्यक्तिगत पत्राचार क्यो होता है और उसने 'कानपुर वोल्शेविक षड्यन्त्र' के चलते एम एन राय को 'खुला पत्र' क्यों लिखा? और उसे सोशलिस्ट' मे छपाने के लिए एस ए डॉगे ने जोगलेकर को क्यो इजाजत दी?' इस पर कइयो ने ये प्रतिप्रश्न खड़े कर दिए— व्यक्तिगत पत्राचार' पर सवाल खड़ा करने का अधिकार आपको किसने दिया? पार्टी सैक्रेटरी की मार्फत सीधे तौर पर यह प्रश्न क्यो नही उठा सकती थी?' 'क्या उस पत्र मे कम्युनिस्ट पार्टी की सम्भावित स्थापना का विरोध था? साथियो ने इस प्रकार के फुसफुसी आक्षेपो को भी उपेक्षित कर दिया। कानपुर केस के बाकी अभियुक्त साथियो ने भी इनको दरकिनार कर दिया। यहॉ यह याद रखने योग्य बात है कि एस ए डॉगे, शौकत उस्मानी नलिनीदास गुप्ता इस केस मे गिरफ्तार थे वहॉ एम एन राय भी अभियुक्त थे और यूरोप मे थे, तो उपर्युक्त प्रश्न खड़े करने वाले कॉ मुजफ्फर अहमद भी इसी केस के अभियुक्त।

लेकिन दो शकाएँ गम्भीर थी। पहली कि काकोरी काण्ड के अमर शहीद अशफाकुल्ला जब अर्जुनलाल सेठी के यहॉ जिस जगह भूमिगत रूप से छिपे हुए थे उसका पता सेठी के साथ काम करने वाले दो-एक भरोसेमन्द साथियो को मालूम था, इनमे एक जे बगरहट्टा थे और इसी जानकारी के आधार पर जब वे वहॉ से कही जा रहे थे कि उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया और फिर उन्हे फाँसी दे दी गई। यहाँ इसका खुलासा करना निहायत जरूरी है।

अशफाकुल्ला के छिपने की जानकारी बगरहट्टा को नही थी क्योकि वे उस समय एक ओर घाटे के साथ मुम्बई मे व्यस्त थे और हसरत मोहानी के साथ कानपुर सम्मेलन की स्वागत समिति की तैयारी मे व्यस्त थे। तो फिर अशफाकुल्ला के बारे मे सूचना किसने दी?

अर्जुनलाल सेठी को बाहर से आने वाले क्रान्तिकारियो को छिपा कर सुरक्षित जगह पर पहुँचान का काम सौपा गया था। क्योकि वे स्वय तो क्रान्तिकारी थे ही वे और विजयसिह पथिक, दोनो क्रान्तिकारियो के मार्गदर्शक भी थे। अर्जुनलाल सेठी के दो विश्वासपात्र व्यक्ति थे एक उन्ही के द्वारा सन् 1907 मे स्थापित वर्द्धमान पाठशाला का पुराना शिष्य

शिवनारायण था जो आगे चलकर आस्तीन का सॉप निकला। पुलिस ने शिवनारायण की तलाशी ली तो उससे जो कागज बरामद हुए उनके आधार पर कइयो को गिरफ्तार किया गया और सेठी जिनको जयपुर की जेल मे नजरबन्द कर दिया गया वहॉ उन्हे 6 साल तक रखा गया। उनका एक और साथी था शम्भूनारायण, जो सेठीजी के दल मे मिलकर क्रान्तिकारी बन गया था।

अर्जुनलाल सेठी की जीवनी पर प्रकाश डालने वाले पृथ्वीसिह के अनुसार 'प्राणनाथ डोगरा को खासतौर पर क्रान्तिकारियो को पकडने के लिए पजाब से अजमेर का डी एस पी बनाकर भेजा गया था जो उसी ट्रेन से उतरा जिससे शम्भूनारायण उतरा था। गुप्तचर के इशारे पर प्राणनाथ का शम्भूनारायण पर सन्देह हुआ और पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया।'

'कहते है कि शम्भूनारायण को जेल मे यन्त्रणाएँ दी गईं इससे उसने क्रान्तिकारियो के कुछ भेद खोल दिए।' (स्वाधीनता सेनानी अर्जुनलाल सेठी पृ 26)।

शिवनारायण की मुखबरी, शम्भूनारायण द्वारा मार खाकर टूटने पर सेठीजी आदि के रहस्य बताने और डी एस पी प्राणनाथ की तत्परता के मेल के फलस्वरूप सेठीजी के यहॉ होने का अशफाकुल्ला का पता लग गया था। जब अशफाकुल्ला को सेठीजी ने वहाँ से रवाना कर सुरक्षित भेजना चाहा तो उनका पीछा करती हुई पुलिस ने उन्हे जयपुर रेलवे स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिया। यह 9 अगस्त सन् 1925 की बात है जब काकोरी रेल काण्ड मे गिरफ्तारियॉ हो रही थी। सेठीजी को इस बात से मर्मान्तक वेदना हुई कि उन्ही के किसी साथी की मुखबरी से अशफाकुल्ला को जयपुर के रेलवे स्टेशन पर पकड़ लिया था और बाद मे (सन् 1927 मे) उसे फॉसी हो गई थी।' (सेठी की जीवनी से)

बाद मे शिवनारायण की दुर्घटना मे मौत हो गई शम्भूनारायण ने आत्मग्लानि से त्रस्त होकर जेल मे आत्महत्या कर ली और डी एस पी प्राणनाथ की क्रान्तिकारियो ने हत्या कर दी। फिर मुजफ्फर अहमद का यह शक करना कि began to suspect because of the arrest of Ashafaqulla whose hiding was entrusted to Bagarhatta

No Bagarhatta was never entrusted to the hiding place of any of the revolutionaries अत मुजफ्फर अहमद का यह सस्पेक्ट

करना' (भ्रम पालना) बेबुनियाद और तथ्य को झुठलाना है। इसी तरह के छिछले सन्देह गृहविभाग के पुलिस अधिकारी डैविड पैट्री से यात्रा भाड़ा वसूलने की बात कहकर प्रकट किए गए, जबकि हकीकत यह है कि जरूरत पडने पर बगरहट्टा अपनी जेब से खर्च करते थे, अन्यथा आवश्यकतानुसार व्यय सेठीजी और लाला लाजपतराय से स्वय ही मिल जाते थे और कितना तुच्छ सन्देह पैदा किया जाता है—रेल किराए-भाड़े की कल्पना उड़ान से कि बस बिक गए और बन गए सरकारी स्रोत। अरे! एक बगला नहीं तो बीकानेर मे एक मामूली-सा मकान ही बनवा देते कि किराए के मकान मे जीना-मरना न होता!

बगरहट्टा के खिलाफ अफवाहो का जाल इस तरह फैलाया गया कि पार्टी के भीतर वैमनस्य की स्थिति पैदा हो गई और उन्हे भान होने लगा कि उनकी हर गतिविधि को पार्टी की स्वय की गुप्तचरी शक के दायरे मे देखेगी। ऐसे माहौल मे प्रत्येक सही काम का विकृतीकरण ही किया गया।

मुजफ्फर अहमद ने एक भरी मीटिग मे अपना शक प्रकट किया तो उन्हीं के कथनानुसार जानकीप्रसाद burst into tears and said you are suspecting यह burst into tears स्वय मे सिद्ध करता है कि आशकाओ से उत्पन्न बेबुनियाद अविश्वास ने कितना मर्मान्तक आघात लगाया। बगरहट्टा ने आहत होकर दिनाक 14 जुलाई 1927 को एस बी घाटे को अपना त्यागपत्र भेज दिया जिसमे उन्होने शिकायत की कि Lack of trust in him of commrades which makes his functioning difficult

यहाँ विचारणीय यह है कि न तो बगरहट्टा से कारण बताओ' कह कर *या लिखकर स्पष्टीकरण माँगा गया* और न ही उन पर *अनुशासन* आयोग ने विचार किया। बाद मे घाटे ने दिनाक 12 जनवरी सन् 1928 को बगरहट्टा को पत्र लिखा जिसमे कहा गया— दिनाक 29 दिसम्बर, 1927 को सी पी आई की केन्द्रीय समिति ने आपका त्यागपत्र स्वीकार कर लिया।' (पार्टी दस्तावेज 371)।

इस पर भी मुजफ्फर अहमद ने पीछा नही छोड़ा और सन् 1929 तक गुप्तचर विभाग द्वारा बगरहट्टा के रेवाड़ी के घर पर मारे गए छापो मे प्राप्त तथाकथित कागजो के आधार पर बनाए गए फर्जी बिल इधर-उधर से प्राप्त विवरण और एक अप्रमाणित व अहस्ताक्षरित पत्र को लेकर अपना शक्की अभियान जारी रखा। खेद है कि हमारा तत्कालीन दस्तावेज व्यक्ति-केन्द्रित बनकर रह *गया* और यह स्वाभाविक *भी था* जिसके बारे

मे कॉ अधिकारी ने दस्तावेज' के खण्ड 1 की भूमिका के पृष्ठ सख्या VII दिनाक 14 सितम्बर 1971 को लिखा था—The documents journals booklets leaflets etc produced legally and illegally by the Communist Party in the period before independence which has been seized by the police or the C I D are not available even today 24 years after the independence in the National Archives of India or in the various state archives

G Adhikari

From Preface VIII (14th Sept 1971)

तो फिर सन् 1929 के गुप्तचर विभाग द्वारा स्वयमेव विकृत कागजातो के आधार पर भ्रामकता को पुनर्जीवित करने का आशय जबकि दो साल पहले ही वह आपको आपकी रजामन्दी से छोड चला। यहाँ ध्यान रहे, उन्होने मर्जी से त्यागपत्र दिया है जिसके ये प्रमाण है— 25 दिसम्बर 1927 को त्यागपत्र स्वीकार (दस्तावेज 371)

'इस बैठक मे पार्टी ने जे पी बगरहट्टा के त्यागपत्र को स्वीकृत किया।' (भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास की रूपरेखा पृ 19)

'मॉस्को से प्रकाशित भारत के इतिहास मे भी इसका उल्लेख है।'

यदि वास्तव मे कोई सन्देह प्रमाणित' होता तो उन्हे निलम्बित या निष्कासित' कर दिया जाता जैसी कि कम्युनिस्ट पार्टियो की सहज प्रक्रिया है वहॉ त्यागपत्र लेने-देने और स्वीकार करने का तरीका आमतौर पर नही अपनाया जाता।

किन्तु जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है सन् 1927 मे इण्टरनेशनल कम्युनिस्ट आन्दोलन मे सोवियत व्यवस्था को सुदृढ़ और सुरक्षित करने के मकसद से प्रतिक्रान्तिकारियो को और उनके समविचारको को जड से उखाड़ फेकने का लक्ष्य तय हो चुका था और स्टालिन ने कइयो को निकाल भी दिया था। एम एन राय इसके खिलाफ थे और वे भी निष्कासित' किए जाने वालो की सूची मे आ गए थे। इस प्रवृत्ति की सूचना बगरहट्टा को मिली तो उन्होने इस सन्देहपूर्ण वातावरण का उपयोग किया त्यागपत्र देकर अपनी दिशा बदली। इससे पहले उन्होने अजमेरी काग्रेसियो' द्वारा पैदा किए वैमनस्य को देखकर वहाँ की राजनीति छोड़ दी थी। यहाँ उनका त्यागपत्र देने का मेल सन् 1929 की उस घटना से सही बैठता है जब एम एन राय को इण्टरनेशनल' से निकाल दिया गया। राय सन् 1930 मे भारत आए।

पुराने केस मे पकड़कर जेल भेज दिए गए। अब वे कम्युनिस्ट विरोधी भी थे। सन् 1936 मे छूटे। अपने समर्थको सहित काग्रेस मे गए। बगरहट्टा सन् 28-29 मे ही काग्रेस मे चले गए थे।

मुजफ्फर अहमद को फिर भी चैन नही मिला। उनकी अनुपस्थिति मे आरोप-दर-आरोप तलाशते रहे, छेद-दर-छेद की खोज करते रहे। फिर घाटे का हवाला देते हैं और सन् 27 के पत्र को 29 मे प्रमाणित करवाने की कोशिश करते हैं। मुजफ्फर अहमद को शायद यह पता नही था कि सन् 1927 मे त्यागपत्र देकर रेकार्ड को मुम्बई (जे बगरहट्टा ने) के कार्यालय मे बाकायदा सौंप दिया था। 2 साल तक रेवाड़ी के घर मे पार्टी के पोशीदा रेकार्ड रखने और पुलिस द्वारा छापा मारकर उनका मेरठ षड्यन्त्र केस' मे दस्तावेज के रूप मे पेश करने का प्रश्न ही नही था। क्या बगरहट्टा इतने भोले थे कि दो साल तक फाइल को घर मे रखते। आखिर इसमे उनका उद्देश्य क्या था? और फिर पार्टी ने भी दो साल तक चार्ज नहीं लिया या उन्होने जानबूझकर नही दिया और आपने उनका त्यागपत्र स्वीकार कर लिया—बिना फाइल और कागज बरामद किए?

दस्तावेज मे आगे कहा गया—As for the subsequent history of Bagerhatta he disappeared from the political movement altogether Mazaffar Ahmed records that Bagerhatta came to meet him in 1938 and told him that he was writing scenarios for films Janki Prasad is now no more

समझ मे नही आता, इसे दस्तावेज' मे शामिल करने की क्या जरूरत आन पडी और मुजफ्फर अहमद द्वारा यह दर्ज करने की भी? वैसे तो बगरहट्टा चलाकर अपनी ओर से उनके पास गए ही नहीं होगे, और मान ले कि उन्होने फिल्मी सिनेरिया' लिखने की बात किसी लहजे मे कह भी दी हो तो निश्चय ही उन्होने उसे व्यग्य मे कहा होगा जैसी कि उनकी आदत थी। मुजफ्फर अहमद को व्यग्य के मर्म को समझना था। और फिर disappeared from the politics तो और भी विचित्र बात है। क्योकि बगरहट्टा का सम्पूर्ण जीवन राजनीतिमय ही था जैसे—

1 सन् 1920-21, बहिष्कार आन्दोलन' मे कॉलेज शिक्षण छोड़ अजमेर काग्रेस मे शामिल।

2 सन् 1920-21 रेवाड़ी मे ट्रेड यूनियन का काम सफाई कर्मचारियो की हड़ताल मे गिरफ्तारी।

3 दो साल रेवाड़ी नगरपालिका अध्यक्ष, काग्रेस के मन्त्री।

4 1923–24, पजाब काग्रेस कमेटी और AICC के सदस्य।

5 1925–27 कानपुर सी पी आई के सस्थापको मे सयुक्त जनरल सैक्रेटरी।

6 1928–34 अर्जुनलाल सेठी के साथ काग्रेस मे।

7 1938–44 रेडिकल ह्यूमेनिस्ट।

8 1945 अस्वस्थ—बीकानेर आगमन

9 1948, समाजवादी पार्टी के प्रान्तीय सचिव।

10 अकाल और अनाज निकासी आन्दोलनो मे दो बार गिरफ्तार।

11 1950–55 'गणराज्य' और The New Leader का सम्पादन।

विशेष राइटर और पी टी आई के सवाददाता बोम्बे क्रॉनिकल और हिन्दुस्तान टाइम्स के सहसम्पादक भी रहे।

*1965 मे निधन

इतना जो कहा गया है वह सन्दर्भ–विशेष को लेकर ही है जिसका आशय कॉ मुजफ्फर अहमद की अवमानना करना कतई नही है। कॉ मुजफ्फर अहमद भारत के प्रथम श्रेणी के कम्युनिस्टो मे से एक थे। उन्होने ही कोलकाता मे वह पहला कम्युनिस्ट ग्रुप स्थापित किया था जिसने अन्य ग्रुपो के साथ मिलकर केन्द्रीय पार्टी की स्थापना की थी जिसकी केन्द्रीय समिति मे प्रदेश सचिव के रूप मे चुने गए थे। उन्होने ही बगला भाषा मे गणशक्ति नामक पत्र निकाला था। कानपुर बोल्शेविक षड्यन्त्र केस (1924) और मेरठ षड्यन्त्र केस' मे उन्ही को गिरफ्तार किया गया था और उन्होने जेल–यन्त्रणाएँ भोगी थी। उन्होने अनेक जन–आन्दोलनो मे महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई थी। भारतीय कम्युनिस्ट इतिहास मे उनका गरिमामय स्थान है और रहेगा।

फिर भी व्यक्ति चाहे जितना महत्त्वपूर्ण क्यो न हो उसमे सहजात प्रवृत्तियाँ भी होती हैं जो उसके चाहे–अनचाहे कार्यों का सचालन करती रहती हैं। मुजफ्फर अहमद मे जब किसी के प्रति ईर्ष्या का उद्वेलन हो उठता था तो फिर उसकी कोई सीमा नहीं रहती थी। कानपुर और मेरठ केसो मे साथ गिरफ्तार होने और जेल–सजाएँ काटने के बावजूद उन्होने शौकत उस्मानी की शोहरत को सहन नहीं किया और उस्मानी के खिलाफ ऊलजलूल प्रचार अभियान छेड़ दिया जिसका कुछ उल्लेख उस्मानी की

आत्मकथा और डाह' (कहानी) मे साकेतिक रूप मे किया गया है। इसके लिए पैट्री' जैसो का उपयोग ही क्यो न करना पडे जैसे कि उनके द्वारा बगरहट्टा के खिलाफ मे किया गया।

पार्टी के 1964 के विभाजन के बाद मुजफ्फर अहमद ने अपनी पुस्तक मे कहा है कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना 1925 मे *कानपुर मे नही हुई बल्कि इसकी स्थापना 1920 मे मुहाजिरो के एक दल ने ताशकन्द मे की थी।'* (भा क पा के इतिहास की रूपरेखा', पृष्ठ 15)।

कहने का अर्थ है कि पार्टी के अन्तर्विरोध परिस्थितिजन्य होते है और तीव्रतर होने पर एक नही, अपितु टूटन-दर-टूटन की स्थितियॉ पैदा कर देते है। तब रूपाकार तो बदलते ही हैं सम्बन्ध भी दुश्मनीपूर्ण हो सकते है (दशाब्दियो बाद फिर नजदीकी भी हो सकते है) शब्द बदल जाते हैं (सज्ञाएँ क्रियाएँ और विशेषण भी) और परिभाषाएँ और सिद्धान्त तक नये सॉचो मे ढाल दिए जाते है। व्यक्तियो और नेताओ के भौतिक और मानसिक सम्बन्धो मे भी जोड और तोड की *प्रक्रिया* चल पडती है। यहॉ केवल कम्युनिस्ट पार्टी और कम्युनिस्टो के सन्दर्भ तक ही बात को सीमित करके देखा जा रहा है। अन्य पार्टियो और नेताओ की बाते तो और अधिक *विकट* विषम और *प्रकीर्णक* है।

ताशकन्द की हिन्दुस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (कानपुर मे स्थापित) राष्ट्रवादी सी पी आई सी पी आई (एम), सी पी (एम एल) एम सी पी नक्सलवादी क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट पार्टी अ भा कम्युनिस्ट पार्टी (डॉगेवादी), कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) आदि कम्युनिस्टो के पार्टीगत अन्तर्विरोध ही तो है। हरेक दल स्वय को ही वास्तविक क्रान्तिकारी समझता है। बाकी के विशेषण है जो अन्यो के साथ लगाए जाते रहे हैं—सशोधनवादी सुधारवादी सकीर्णतावादी उग्रवादी लोकतन्त्रवादी सोवियत साम्राज्यवादी चीनी माओवादी, ससदीय लोकतन्त्रवादी वामपन्थी सकीर्णतावादी, समझौतावादी जनतन्त्रवादी आदि। मार्क्स और लेनिन से कोई इनकार नही करता किन्तु उनके विचारो की टुकडो मे बॉटकर खुद के अनुकूल व्याख्याएँ की गई है। रास्ते कार्यक्रम और नीतियाँ अपनी-अपनी। समाजवाद अपना कम्युनिज्म अपना-अपना।

जनवादी केन्द्रीयता' के *तहत* हमने बहुमत से एक *फैसला लिया*—अल्पमत को मानना चाहिए जब तक वह बहुमत न बना सके उसे फैसले

का पालन करना चाहिए, अन्दरूनी सघर्ष करते रहना चाहिए। नही, अल्पमत तत्काल नाम बदल कर नई पार्टी की घोषणा कर देता है। विभाजक की भूमिका अदा करते हुए विभाजन कर बैठता है। वह अल्पमती पार्टी फिर बहुमत से फैसले लेती है तो अल्पमती पार्टी का अल्पमत अल्पमती पार्टी के बहुमत को टुकडे–टुकडे कर एक और विभाजन कर बैठता है। विभाजन जन–आन्दोलनो की सघनता को प्रभावित करता रहता है।

सन् 1947 मे राहुल साकृत्यायन को हिन्दी साहित्य सम्मेलन मे अपने बेबाक अध्यक्षीय भाषण की बदौलत पार्टी से अलग होना पड़ा, योगेन्द्र शर्मा को इन्दिरा गॉधी का दूत करार देने पर जाना पडा और श्रीपाद् अमृत डॉगे को हटाते समय श्रीपत्' और श्रीपाद् तक का सशय बवण्डर' खडा किया गया और गुप्तचरी फाइल देखकर हॉ हम पहचानते है, ये उन्ही के हस्ताक्षर है तक एक झूठा प्रचार भी किया गया। डाँगे गए मोहित सेन गए––दो मार्क्सवादी चिन्तक गए। डॉगेवादी रणदिवेवादी हो गए रणदिवेवादी परिस्थितिवश ज्यादा डॉगेवादी (काग्रेसवादी) और अवसरवादी हो गए।

जब तक जनसमूह मे बदलाव की स्थितियॉ परिपक्व नही होगी या की जा सकेगी जब तक जन–साधारण मे आधारभूत क्रान्ति के लिए आग नही पैदा होगी तब तक दलगत अन्तर्विरोध पारस्परिक वैमनस्यो मे उलझाते चले जाएँगे।

पत्रकार

जे बगरहट्टा ने हिन्दी और अग्रेजी दोनो मे पत्रकारिता की। वे सवाददाता रहे, सहसम्पादक सम्पादक रिपोर्टर-टिप्पणीकार और शीर्ष निबन्धकार भी रहे।

काफी अरसे तक वे पी टी आई और राइटर के अत्यन्त कुशल सवाददाता रहे। इनके द्वारा प्रेषित समाचारो की तत्परता और विश्वसनीयता दूसरो के लिए उदाहरण प्रस्तुत करती थी।

बगरहट्टा ने बी जी हॉर्नीमन द्वारा सम्पादित Bombay Chronical और Hindustan Times (दैनिक) के सहसम्पादक के रूप मे अपनी अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया। अग्रेजी भाषा पर उनका उल्लेखनीय अधिकार था। के एम पन्निकर को उनकी शैली बहुत अच्छी लगी थी। इसी शैली की बदौलत उन्होने अपने साथियो और समर्थको मे अपनी अच्छी-खासी पैठ बना ली थी। वे बहुत-से राजनेताओ और पत्रकारो के जाने-माने सलाहकार बन चुके थे। उनका अधिकाश समय बहसबाजी और सलाह-मशविरो मे ही बीता करता था। ज्यादातर चर्चाएँ काफी रात बीतने तक चलती रहती थी। अपनी आदत से लाचार उन्होने एक जगह बॅधकर कभी काम नही किया। इसीलिए एक प्रतिबद्ध व्यक्ति के रूप मे उन्हे नही पहचाना जा सका। किसी ने कम्युनिस्ट माना तो किसी ने उग्र काग्रेसी किसी ने रायवादी तो किसी ने समाजवादी। पत्रकारिता मे वे आज यहॉ तो कल वहॉ। यह अवश्य है कि उन्होने अपनी कलम से किसी प्रकार की सौदेबाजी नही की।

सन् 1952-53 मे बगरहट्टा ने हिन्दी के साप्ताहिक पत्र गणराज्य' का सम्पादन किया। यह बारह पेज का पत्र बीकानेर से ही प्रकाशित किया जाता था। इसका एक पक्ष था वस्तुगत दृष्टि से यथार्थ स्थितियो का चित्रण व आकलन करना तो दूसरा पक्ष होता था विश्लेषणात्मक विवेचन का। दूसरे पक्ष मे सम्पादकीय ओज की झलक स्वय अपना परिचय देती थी। श्री भवानीशकर व्यास के अनुसार—(गणराज्य के) प्रत्येक अक मे विभिन्न क्षेत्रो की गतिविधियो का समावेश रहता था एव विचारप्रधान

सामग्री से ओतप्रोत हर अक पठनीय था। कुछ स्थायी स्तम्भो (महिला जगत) खेलकूद राजधानी का गत सप्ताह समालोचना—सक्रिय व सूक्ष्म दृष्टिकोण (बीकानेर दिन–प्रतिदिन) के अतिरिक्त हर अक मे दो–तीन विचारमूलक लेख एव सुलझे हुए सम्पादकीय विचार होते थे। 12 पृष्ठो का नियमित अक चित्रादि से सज्जित एव अत्यन्त अधिकृत सामग्री से युक्त रहता था।'

(बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति मे सस्था के स्वरूप' से साभार)

भाषाधारित प्रदेश सरचना' के सिद्धान्त के आधार पर राजस्थान के पुनर्गठन के सम्बन्ध मे जे बगरहट्टा की चिन्तनधारा पर प्रकाश डालते हुए श्री उपध्यानचन्द कोचर ने गणराज्य' के 22 जून 1953 के अक का हवाला देते हुए लिखा है कि— भाषा के आधार पर आज भी राजस्थान के छ भाग किए जा सकते है—

1 उत्तरी राजस्थान—जिसमे चूरू गगानगर और झुझुनूँ के जिले कहे जा सकते हैं और जहाँ बृजभाषा का अपभृश जाटी या हरियाणवी भाषा बोली जाती है।

2 मारवाड—जिसमे प्रस्तुत जोधपुर और बीकानेर डिविजनो का एक भाग है जो मारवाडी बोलता है।

3 ढूँढार—जिसमे जयपुर और शेखावाटी का कुछ भाग जहाँ ढूँढाड़ी या मालवी भाषा की अपभ्रश बोली जाती है।

4 हाडौती मे कोटा बूँदी और झालावाड जहाँ मालवी भाषा प्रचलित है।

5 मेवाड मे गुजराती भाषा का अपभृश मेवाडी बोली जाती है।

6 मास या मेवात जहाँ भाषाआ की रानी शुद्ध बृजभाषा बोली जाती है।

सम्भवत बगरहट्टा की इस प्रस्तावना ने एक नई बहस छेड दी थी। पक्ष–प्रतिपक्ष की राय समाचारपत्रो का अच्छा–खासा मुद्दा बन गया था। स्तम्भ लेखको पाठको और लेखको ने अपने–अपने दृष्टिकोण से टिप्पणियाँ और समीक्षाएँ प्रस्तुत की।

15 जनवरी, 1955 को जयपुर से The New Leader अग्रेजी पत्र का प्रकाशन शुरू हुआ जिसके सम्पादक थे—जे बगरहट्टा। यह राजनीतिप्रधान पत्र बगरहट्टा के लिए ही मनोहरलाल गोयल गोयल एण्ड को द्वारा प्रकाशित और दी मनोरजन प्रेस जौहरी बाजार जयपुर सिटी द्वारा मुद्रित किया जाता था। यह 8 पेज का साप्ताहिक था जो पाँच कॉलम घेरता था।

प्रथम वर्ष के प्रथम अक की प्रथम सुर्खी देखिए और अनुमान मे डूबते जाइए—Sukhadia Cabinet Falls Back INTO SAD MINORITY जब बगरहट्टा से पूछा गया कि आपने इसे 'अग्रेजी' भाषा मे क्यो निकाला हिन्दी मे क्यो नही, तो उन्होने अपने पहले सम्पादकीय मे, जिसको उन्होने शीर्षक दिया था— We और भाषा सम्बन्धी प्रश्न का उत्तर देते हुए लिखा—The New Leader appears in English because it believes that the present problem in Rajasthan is to educate the educated

इस पत्र मे सम्पादकीय स्तम्भ के अलावा Comments जयपुर और बीकानेर के पत्र और समाचार Woman s diary Filmland देश-विदेश के विशेष समाचार साहित्यिक-सास्कृतिक गतिविधियाँ और Sports जैसे स्तम्भ एव विचार-बिन्दु समाहित होते थे। किन्तु 24 जुलाई 1955 के प्रथम वर्ष के अक 6 के बाद यह अनुपलब्ध हो गया। पता नहीं क्यो ?

The New Leader न तो साप्ताहिक था, न ही पाक्षिक बल्कि वह अनियमित अग्रेजी पत्र बनकर रह गया। प्रथम और अन्तिम सात माह के प्रकाशन की तारीखे इसकी अनियमितता को ही प्रमाणित करती है—

Vol 1 No 1	15th January 1955	
	(बाकी पृष्ठो पर अकित 19th Jan '55)	
Vol 1 No 2	26th January 1955	(After 11 days)
Vol 1 No 3	19th February 1955	(After 24 days)
Vol 1 No 4	9th March 1955	(After 18 days)
Vol 1 No 5	23rd March 1955	(After 14 days)
Vol 1 No 6	24th July 1955	(After 4 Month)

इस अनियमितता का कारण अज्ञात है अलबत्ता उपलब्ध अक 6 के अन्तिम पृष्ठ मे यह अवश्य विज्ञापित किया गया है कि आपको इस पत्र का ग्राहक क्यो बनना चाहिए—

- क्योकि राजस्थान-भर मे यही एकमात्र पत्रिका है जो निर्दलीय निष्पक्ष और बिना सनसनीखेज है फिर भी वह समालोचक और पूर्णतया प्रगतिशील है।
- क्योकि इसके सिवा और कोई दूसरी पत्रिका नही है जिसमे राजस्थान की समस्याओ पर विचार व्यक्त करने वाले सुप्रसिद्ध लेखको का समुदाय हो।

- क्योकि राजस्थान मे इसके अलावा और कोई ऐसी पत्रिका नहीं है जिसके पास प्रदेश के इतने-सारे जिलो के समाचार देने वाले सवाददाता हो।
- क्योकि इसके अतिरिक्त अन्य कोई पत्रिका नहीं है जिसकी सम्पादकीय टिप्पणी मे बेलाग, बेलौस और विवेकपूर्ण समीक्षा की गई हो, जिसमे विशेष विषयो के विशेषज्ञो की रचनाएँ हो, जिसमे पुस्तक-समीक्षाएँ हो, फिल्मी जाँच-परख, वैज्ञानिक, कलात्मक और शैक्षिक व्याख्याएँ तथा दस्तावेजो का प्रकाशन इत्यादि ऐसे सभी विषय हो जो आपकी बौद्धिक जिज्ञासाओ का समाधान कर सके।

The New Leader के निम्नाकित दो 'नियम' इस प्रकार थे—

1 शुल्क (देश मे) वार्षिक 10 रु अर्द्धवार्षिक 6 रु और एक प्रति चार आने
2 शुल्क राशि अग्रिम जमा करानी पड़ेगी जो अन्तिम भुगतान तिथि से एक सप्ताह पहले तक पहुँचानी होगी।

प्रत्येक ग्राहक एक प्रपत्र भर कर भेजेगा, जिसमे उपर्युक्त नियमो के अनुसार शुल्क भुगतान का हवाला होगा।

यह था द न्यू लीडर' का भौतिक कलेवर। इसके पहले तीन अको पर रजिस्टर्ड नम्बर नदारद अक 4 5 और 6 पर रजिस्टर्ड नम्बर जे-24 अकित है। लगता है तीन अको क बाद रजिस्ट्रेशन नम्बर प्राप्त हुए।

दूसरे अक के सम्पादकीय मे ए आई सी सी के आवड़ी अधिवेशन मे पारित उस प्रस्ताव पर टिप्पणी की गई है जिसम काग्रेस की शुचिता बरकरार रखने और सगठन को और सुदृढ बनाने के सकल्प पर बल दिया गया है। सम्पादक ने राजस्थान मे सद्यजात ग्राम पचायत के चुनाव मे काग्रेसी मन्त्रियो द्वारा जातिवादी और साम्प्रदायिक हथकण्डे अपनाने का हवाला देते हुए आशका व्यक्त की है कि आवड़ी सकल्प की क्रियान्विति कैसे सम्भव होगी और कौन रखेगे पार्टी की शुचिता और उसे सुदृढता प्रदान करने का खयाल?

इसी प्रकार इसके अगले अक के सम्पादकीय को शीर्षक दिया गया है— Caste Politics in Rajasthan और इसमे माँग की गई है कि राजस्थान के जिन बडे-बड़े नेताओ ने ग्राम पचायतो के चुनाव मे जातिवाद का नगा नाच दिखाया है उसकी पूरी जाँच की जानी चाहिए ताकि सिद्धान्तो की अवहेलना करने वाले दिग्गज काग्रेसी नेताओ के कारनामो की असलियत सामने आ सके।

'द न्यू लीडर' के चौथे अक मे एक महत्त्वपूर्ण सुझाव दिया गया है कि यदि राजस्थान की पुरानी रियासतो का विकास करना आवश्यक है जैसा कि अनिवार्यत है, तो उनके लिए योजनाबद्ध औद्योगिक विकास का कार्यक्रम तैयार करना होगा। इसके लिए स्थानीय तौर पर उपलब्ध ससाधनो की खोज के लिए सर्वेक्षण कमेटियो को गठित करके उनसे मुकम्मल रिपोर्ट लेनी होगी और यह सुनिश्चित करना होगा कि केन्द्रीय सरकार द्वारा आवटित राशि को राज्य के औद्योगिक विकास मे कैसे खर्च किया जाए। एकमात्र यही तरीका है कि प्रदेश मे उत्पादकता को बढाया जा सकता है बेरोजगारी को घटाया जा सकता है और पुरानी रियासतो की राजधानियो की खूबसूरती को आगे के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है।

सम्पादकीय स्तम्भ हो टिप्पणियो के कॉलम या अन्य कोई प्रकोष्ठ जे बगरहट्टा राजस्थान की मूल समस्याओ को न केवल सबके सामने धड़ल्ले से प्रस्तुत करते है, बल्कि उनकी तह तक पहुँचकर उनके समाधान भी प्रस्तुत करते हैं। उलझनभरी शब्दावली या शास्त्रीय अभिव्यक्ति की बोझिलता से उन्हे परहेज था। वे विभागो के बिखराव को भी उपयोगी नही मानते थे।

बगरहट्टा राजस्थान की विधानसभा की कार्रवाइयो पर पूरी नजर रखते थे। वहॉ की उठा-पटक पर बिना लिहाज पोल खोलते थे। जैसे कि नीचे के पत्र मे दर्शाया गया है—(अक सख्या 5 से साभार)

[A photostat copy of a letter from Mr Mathuradass Mathur to the Director of Education produced by Mr H K Vyas M L A in the Legislative Assembly on 14th instant

TEXT OF THE LETTER

My dear Director Sahib,

Kindly keep in view Book No. 31 (Hindi Premier) for class Ist published by Frontier Publications.

Mathuradas

10-1-55

पत्रिका के उपलब्ध अन्तिम अक सख्या 6 मे जे बगरहट्टा का एक प्रमुख लेख है जिसका शीर्षक है—A Historical Background of a Feudal Culture यह सीरियल मे प्रकाशित करने की योजना थी जिसका यह पहला क्रम था। यह Reflections on Rajasthan I था। लेखक के अनुसार इस विषय की रचनाओ के इस सिरीज मे राजस्थान के सामन्तवाद-केन्द्रित इतिहास की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है और इस बात पर जोर दिया गया है कि यह सामन्तवादी इतिहास लोकतान्त्रिक समस्याओ के समाधान के लिए अवरोधक का काम करता है। अत इसे नए सिरे से रचने की आवश्यकता है। अन्यथा राजस्थान की नई पीढी को आधुनिक परिस्थितियो और बीते समय के सामान्य जन-समुदाय की भागीदारी का असली ज्ञान प्राप्त नही होगा। इतिहासकारो ने अब तक जो मिथ पैदा किए हैं उन पर से पर्दा उठना ही चाहिए।

प्रदेश और देश के समाचारो और उनकी विविध समस्याओ तक ही बगरहट्टा की पत्रकारिता सीमित नही थी। उसका अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र भी काफी फैला हुआ था। सोवियत सघ और पश्चिमी देशो मे पत्रकारिता और अभिव्यक्ति मे विरोधाभास, 'ईडन की दक्षिण-पूर्वी एशिया की यात्रा फॉर्मोसा क मामलो पर युद्ध-निषेध' कुमारी मोनिका नाम की भारतीय युवती लन्दन म मार्केट रिसर्च ऑफिसर के रूप मे प्रयासरत', लन्दन मे प्रेस स्वतन्त्रता के सौ वर्ष फ्रास के राजनीतिक सकट पर ध्यान न दे और 'कन्फ्यूसियस का राजनीतिक दर्शन' पर उन्होने युक्तायुक्त टिप्पणियाँ दी।

पत्रकारिता के अलावा जे बगरहट्टा ने अपने विचारो को पुस्तकाकार रूप मे भी प्रकट किया है। श्री भवानीशकर व्यास ने अपने बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति मे सस्था के स्वरूप' मे उनकी पुस्तक Bikaneries alone can be the sole arbiters of their destiny (जो अब अनुपलब्ध हो चुकी है) का हवाला देते हुए कुछ अग्रेजी अशो को हिन्दी भाषान्तर के साथ उद्धृत किया है। यहाँ साभार उनके हिन्दी रूपो को ही पुन उद्धृत किया जा रहा है—

(अ) सविधान—(मेरी धारणा मे सर्वोत्तम सविधान वह है जो पीढ़ियो की भावना के साथ विकसित होता हो क्योकि जिसे हम राजनीति की भावना कहते है वह मनुष्यो की पीढ़ी के परिवर्तन के साथ निश्चित रूप से परिवर्तित हो जाती है—किसी और परिवर्तन का इतना अधिक प्रभाव नही होता।)

(आ) **नेता**— (जो एक बार नेता बन जाए वह हमेशा ही नेता बना रहे यह आवश्यक नही है। एक विकासमान समुदाय मे नेतृत्व समय एव परिस्थितियो के परिवर्तन के साथ बदल जाता है। यह किसी व्यक्ति के विगत (कार्यो) पर निर्भर नही करता। सार्वजनिक जीवन मे उसकी विचारधारा का अधिक प्रभाव पडता है।)'

(इ) **अधिक राजनीतिक दल**— (मै पूछता हूँ कि इन राजनीतिक दलो के पृथक् अस्तित्व का आधार क्या है? यदि कोई व्यक्ति उन दलो की उनके सिद्धान्तो अथवा उद्देश्यो के आधार पर जॉच करे तो उनमे से अधिकाश मे तर्क एव विचारधारा का कोई आधारभूत अन्तर दिखाई नही देता।)

(ई) **राजनीतिक अस्थिरता (दलबदल)**— (राजनीतिक दु साहस के दिन अब समाप्त हो गए हैं और अब हमे लोगो तक निश्चित कार्यपद्धति एव स्पष्ट कार्यक्रम के साथ पहुॅचना होता है।)

(उ) **शान्तिपूर्ण समाधान**— (राजनीतिक अथवा आर्थिक समस्याएॅ एक दिन मे नही सुलझती। वे हमेशा समय लेती हे तथा प्रभावित पक्षो की सफलता हमेशा शान्ति विवेकमय चिन्तन एव आवेगहीन विचारो पर निर्भर करती है न कि क्रुद्ध एव पागलपन की अभिव्यक्तियो पर।)

ये उनके राजनीतिक जीवन के आनुभविक प्रतिबिम्ब हैं।

Rajasthan as such has been described as a land of virtues many and various and has thus remained wrapped in a shroud of mystery Its external reputation has been so powerful that it has never allowed one to probe into realities behind the mist of glamour and grotesque Even the historians were satisfied to seek inspiration from the well satisfied bards of the Rajput Courts or the biased chroniclers of the Moghul invaders Hence a contradiction in history itself has created a number of confusions in our social and political beliefs and makebelieves The very idea of a superior breed race worship and hatred Paralysing critical faculties and Lynching affinities of clans totems and descent are only a logical outcome of the contradictions and confusions counsciotiously or unconsciously created by the historians of Rajasthan And whatever the reasons for this may have been the common and constant superstition of race seems to have served the blatant apostle of racialism of an ever latent zest as a powerful political weapon in the past and it cannot be denied that even at present with all the advance of time the myth of a race still looms large in the mind of a traditional Rajasthani which one could add with confidence has been the main cause of his cultural backwardness

द न्यू लीडर के 24 जुलाई 1955 के अक मे प्रकाशित जे बगरहट्टा के लेख ए हिस्टोरिकल बैक ग्राउन्ड ऑफ ए फ्यूडल कल्चर का एक अश।
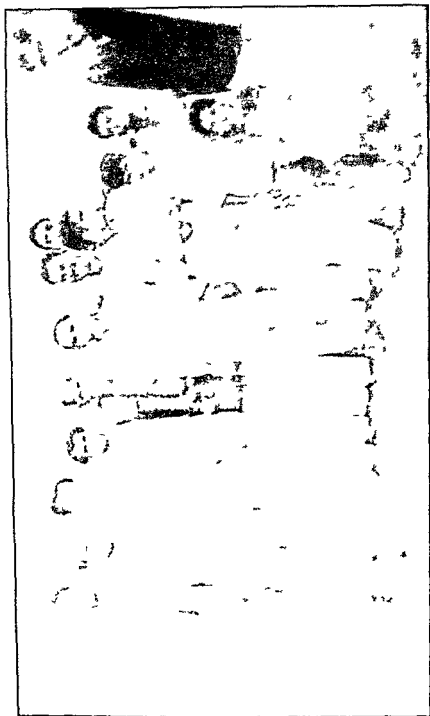
बीकानेर के पत्रकारो के साथ जे बगरहट्टा (टोपी मे)

परिवेश

क्षेत्र मरुभूमि बीकानेर से उदय फिर शेष भारत

काल सन् 1900–1965

प्रकृति रेगिस्तान सुनहरे टीलो का घेरा, काली–पीली ऑधियॉ अकाल, सावन बीकानेर

परिवार पितामह—श्री शिवसहाय—राजवैद्य
पिता—श्री जगदीश सहाय वकील
माता—श्रीमती नानकीदेवी
भाई—1 श्री दीनदयाल शर्मा
स्वय—2 श्री जानकीप्रसाद बगरहट्टा, नेता पत्रकार (1900–1965)
भाई—3 श्री रामचन्द्र शर्मा
भाई—4 श्री हरिशकर शर्मा
पत्नी—श्रीमती राजकुमारी (मिडिल पास)

सन्तान 1 श्री हरप्रसाद बगरहट्टा अध्यापक
2 श्री याज्ञवल्क्य शर्मा अध्यापक
3 श्री प्यारेमोहन बगरहट्टा
4 श्री चन्द्रमोहन बगरहट्टा डॉक्टर

सम्पर्क–मण्डल श्रीपाद अमृत डॉगे श्री जयप्रकाशनारायण डॉ राममनोहर लोहिया श्री एस एन द्विवेदी श्री मधु लिमये, श्री प्रेम भसीन श्री जयनारायण व्यास श्री छगन मोहता, श्री शौकत उस्मानी श्री मुजफ्फर अहमद, श्री के एन जोगलेकर श्री एस वी घाटे हार्नीमन पन्निकर श्री अशोक मेहता श्रीमती अरुणा आसफअली श्री सुभाषचन्द्र बोस देशबन्धु चितरजनदास सर छोटूराम फिरोजखॉ नून और एच के व्यास आदि।

व्यक्तित्व

सुनहले टीलो का घेराव, काली-पीली ऑधियो का बार-बार का दौर ऑखो मे रेत फेफडो को परेशान करती रेत घर-ऑगन मे रेत ही रेत—सुबह साफ करो दोपहर को फिर रेत दोपहर को साफ करो शाम को फिर रेत। धोरो की रेत पर उछल-कूद करो खेल-धूम मचाओ या रेत के बिस्तर पर सोकर थकान मिटाओ या ऑख मूँद काल्पनिक मस्ती लो। यहॉ पानी की जगह मृगतृष्णा मिलेगी। बरसात की उडीक किसान की ऑखे पथरा देगी। यहॉ न पहाड है, न नदी और न ही मुम्बई की समुद्री किनारे वाली चौपाटी। यहॉं न मेडो की हरियाली है और न ही छलकते-इतराते झरने। यह है उस समय का रूखा-सूखा अकाल से उदास-हताश इलाका डूँगरगढ का बीकानेर का जहॉ जे बगरहट्टा जन्मे और उन्होने नीरस बचपन को जीया और आत्मसात् किया प्रकृति का रूखापन उसकी कठोरता और ॲधेरियो के खिलाफ डटे रहने का माद्दा। बगरहट्टा के चेहरे से रुक्षता दिखाई देती रही जन्मभर स्वभाव मे समझौतारहित कठोरता कायम रही जिन्दगी-भर और आँधी की ॲधेरी और धोरो की स्थितिजन्य अस्थिरता ने दे दी राजनीतिक यायावरी।

उसके बाद चाहे वे अजमेर गए हो रेवाडी लाहौर दिल्ली बम्बई कलकत्ता गए हो रहे हो काम करते रहे हो उन्होने पहाड नदियाँ झरने झीले बगीचो के फूल खेतो की हरियाली मौसमी बहारे और मानवीय सुन्दरताएँ देखी-भोगी हो फिर भी रूमानियत उनके भीतर घर नही कर सकी। वे अपनी लेखनी मे प्राकृतिक सौन्दर्य और मानवीय रसिकता को कही पर भी रेखाकित करते नही दिखाई देते। यहॉ तक कि राजनीति की कोमल और उदार प्रवृत्ति को उन्होने कभी प्रश्रय नही दिया।

उन्होने अपने जीवन के अन्तिम बीस वर्ष (सन् 1945-1965) बीकानेर मे रह कर ही बिताए। यदि वे चाहते तो पजाब की हरियाली मे रह सकते थे उत्तरप्रदेश दिल्ली या बम्बई अथवा और कहीं रहकर राजनीतिक जीवन जी सकते थे किन्तु उनके स्वभाव का निर्माण जिस भौतिक परिवेश मे हुआ उससे अलग रहना उनको गवारा नही हुआ।

को तर्क के तारो मे यन्त्रित करते है। यह तार्किकता पिता की जिन्दगी का अहम हिस्सा बन चुकी थी। छुट्टीवाले दिन वकीलो की मण्डली घर मे आ धमकती तो तर्को की गूँज चारदीवारी को लॉघकर सुनाई देती रहती थी। जे बगरहट्टा के मानस–परिवेश मे तार्किकता की पैठ इसी आनुवशिकता की देन थी जो आगे चलकर और अधिक विकसित हो गई।

बडे भाई श्री दीनदयालजी शर्मा से स्नेह' और क्षमा' के गुण प्राप्त किए जिनको उन्होने अपने अनुजद्वय श्री रामचन्द्रजी और श्री हरिशकरजी शर्मा मे बॉट दिया और उनको उनकी सन्तानो सर्वश्री हरप्रसाद बगरहट्टा याज्ञवल्क्य प्यारेमोहन और चन्द्रमोहन ने पिता और चाचाओ की मार्फत विरासत के रूप मे प्राप्त किया।

किन्तु जब जवानी शुरू होने को थी तो जे बगरहट्टा ने अपने पितामह की वैद्यगिरी और पिता की वकालत की ओर झॉका तक नही। उन्होने गाँधीजी के बहिष्कार आन्दोलन के आह्वान पर महाविद्यालय की शिक्षा का बहिष्कार किया वैसे ही कैरियरिज्म' (नौकरीपेशावाद) को भी तिलाजलि दे दी। यदि वे चाहते तो अपने बाप–दादा की शोहरत का फायदा उठाकर राज की अच्छी नौकरी पा सकते थे।

जे बगरहट्टा को कैरियरिज्म से मुक्त होने और बच्चो के लालन–पालन आदि के दायित्व से मुक्त करने के जिस महान दायित्व को निभाया वह थी सहनशीलता की प्रतिमूर्ति श्रीमती राजकुमारीजी, बगरहट्टा की सहधर्मिणी।

कालखण्ड के लिहाज से देखे तो जे बगरहट्टा के राजनीतिक जीवन के 35 वर्षो का अपना विशेष महत्त्व है। वह है सन् 1920 से 1955 तक का समय। अपनी राजनीतिक यात्रा आरम्भ करने से पहले प्रथम विश्वयुद्ध (1914–18) सन् 1917 की रूस की अक्टूबर क्रान्ति सन् 1929 की जलियॉवाला बाग के नरसहार की झकझोरने वाली घटनाएँ घटित हो चुकी थीं जिन्होने बगरहट्टा के मन पर गहरा प्रभाव डाला था। फिर जब गाँधीजी ने बहिष्कार आन्दोलन का आह्वान किया तो बगरहट्टा स्वाधीनता सग्राम मे कूद पड़े। यहाँ से जानकीप्रसाद नाम का व्यक्ति सतह' से ऊपर उठता हुआ दिखाई देता है।

यह सतह थी सफाई कर्मचारियो की ट्रेड यूनियन बनाकर उनको सघर्ष मे उतारना सघर्ष का नेतृत्व करना और उसे सफलता तक पहुँचना। फिर रेवाड़ी के नगरपालिका के अध्यक्ष बन सर्जनात्मक सक्रियता का

परिचय देना। वहाँ से ऊपर उठकर पजाब की प्रदेश काग्रेस की आग मे तपकर ए आई सी सी मे छलॉग लगाकर राष्ट्रीय राजनीति की मजिल मे प्रवेश करना और सन् 1925 मे केवल पच्चीस साल की आयु मे बम्बई मे एस वी घाटे के साथ मिलकर कानपुर मे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना मे अहम भूमिका निभाना और घाटे के साथ पार्टी के जनरल सैक्रेटरी के रूप मे निर्वाचित होकर पार्टी के सर्वोच्च दायित्व का वहन करना एक सबसे उत्तुग शिखर पर पहुॅचना था, इतनी कम उम्र का एक क्लाइमेक्स । कितने महत्त्वपूर्ण थे वे दो साल!

फिर अन्तर्विरोध तीव्र हुआ। यह था बगरहट्टा के राजनीतिक जीवन के एण्टीक्लाइमेक्स' का आरम्भ। कई कारणो मे एक कारण था एम एन राय के इण्टरनेशनल' से निकाले जाने की पृष्ठभूमि। कुछ भी हो बगरहट्टा स्वय त्यागपत्र देकर शिखर से नीचे उतर आए। तब तक सतह से ऊपर उठकर शिखर तक पहुॅचने वाला वह व्यक्ति जन्नत' की हकीकत को अच्छी तरह जान-पहचान चुका था अत छोड-छाड कर वापिस सतह पर खड़े-पडे एव गर्द फॉकते आम आदमी के बीच आ खडा हुआ। किस्सा कुर्सी का' ऐसा होता है कि चढने के बाद मुश्किल उतरना होता है चाहे मरना भले ही पडे। बगरहट्टा की तरह त्यागकर वापिस बाईस साल तक बुनियादी समस्याओ से जूझते रहना किसी के लिए भी आसान नही होता।

इसी दौर मे बगरहट्टा ने दूसरे युद्ध मे फासिज्म की पराजय देखी। अमरीका द्वारा हिरोशिमा और नागासाकी पर एटम बम छोडे जाने पर हुए महाविनाश का मसान देखा और देखा रूस-चीन विवाद चीन का भारत पर हमला और जिस भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के अन्तर्विरोध के कारण वे त्यागपत्र देकर आए थे, वह अन्तर्विरोध इतना तीव्रतर हो गया कि सन् 1964 मे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का विभाजन हो गया। इसके अगले साल सन् 1965 मे बगरहट्टा विदा हो गए।

बगरहट्टा आत्मश्लाघा से हमेशा दूर रहे। उन्होने न तो आत्मकथा लिखी और न ही अपने या अपने परिवार के बारे मे ही किसी से चर्चा की। इस समय उनके परिवार के पास उनके हाथ का लिखा हुआ कोई पत्र उपलब्ध नही है। दूसरो मे यह हिम्मत नही थी कि वे उनकी प्रखर प्रतिभा का वस्तुगत मूल्याकन कर सके। अत वे अकथ ही बने रह गए। किन्तु इसका अर्थ यह नही कि उनका किसी से कोई सरोकार ही नही था।

वे सबके प्रति साथीभाव रखते थे। उनमे आत्मप्रशसा तथा अह
का अभाव चाहे रहा हो—आत्मगौरव कूट-कूट कर भरा था। वे छल-
से रहित खरी-खरी बात कहते थे जिससे कइयो का हुलिया बिगड र
करता था।

मौटे तौर पर उनका जितना सम्पर्क काग्रेस के दिग्गज नेताओ से
उतना ही कम्युनिस्ट पार्टी और समाजवादी पार्टी के सुप्रसिद्ध नेताओ
साथ। रायवादियो मे वे जाने-माने रायवादी थे तो कई निर्दलीय भी उ
सलाह-मशविरा किया करते थे। हॉ, किसी साम्प्रदायिक दल का ;
उनके पास आने की हिम्मत नही करता था। आलोचक के रूप मे वे
काग्रेस को बख्शते थे, न कम्युनिस्टो को और न ही समाजवादियो व
इसीलिए वे वैमनस्य का शिकार भी होते थे।

उनकी सन्दर्भ-सापेक्षता मे दो व्यक्तियो का सर्वाधिक महत्त्व
स्थान है—श्री अर्जुनलाल सेठी और श्री एम एन रॉय (मानवेन्द्रन
राय)। दोनो स्वाधीनता सेनानी और क्रान्तिकारी थे। जे बगरहट्टा
अर्जुनलाल सेठी के साथ लम्बे अरसे तक राजनीतिक कार्य किया काग्रेस
भी और मौके-बे-मौके कम्युनिस्ट पार्टी मे भी। सेठी की बात बगरह
मानते थे और बगरहट्टा की बात सेठीजी। सेठीजी अध्यक्ष होते थे त
बगरहट्टा उनके मन्त्री। ए आई सी सी मे उनका साझा प्रतिनिधित्व हुअ
करता था। बेलगॉव अधिवेशन मे राय द्वारा प्रारूपित राष्ट्रवादियो के ना
अपील को किचित् परिवर्तित कर दोनो ने ही वितरित किया था। इस
के एन जोगलेकर का भी साथ था।

एम एन राय तो बगरहट्टा के साथी भी थे प्रेरक भी और दिशा-
निर्देशक भी। वे उनके प्रति आस्थावान थे। देखा जाए तो बगरहट्टा एम एन
राय के अनुयायी ही थे। राय कम्युनिस्ट थे तो बगरहट्टा कम्युनिस्ट रा
इण्टरनेशनलिस्ट थे तो वे भी इण्टरनेशनलिस्ट राय ने कौमिण्टर्न औ
कम्युनिस्ट पार्टी छोड़ दी तो बगरहट्टा ने भी कम्युनिस्ट पार्टी छोड़ दी औ
राय काग्रेस मे चले आए तो बगरहट्टा भी काग्रेस मे लौट आए। सन् 194
के बाद राय बाईस सूत्र देकर दलविहीन राजनीति करने लगे तो बगरहट्ट
लगभग उसी अरसे के बाद से रायवादी दलविहीन राजनीति मे रुचि
लेते रहे। राय की तरह बगरहट्टा ने भी पत्रकारिता के क्षेत्र मे काम किया।
दोनो मे पत्राचार का सिलसिला था ही। बगरहट्टा ने रायवादी ग्रुप को
सगठित करने मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। जो अस्थायित्व एम एन राय

की जिन्दगी मे दिखाई देता है वह जे बगरहट्टा की जिन्दगी मे भी दिखाई देता है।

जे बगरहट्टा का व्यक्तित्व एकोन्मुखी है—सम्पूर्णतया राजनीति का वे न तो कभी कैरियरिस्ट रहे न कलाकार अथवा अन्य कुछ। उनकी रग-रग मे राजनीति समायी हुई थी। उनके सारे क्रियाकलाप राजनीतिपरक थे। काग्रेस कम्युनिस्ट फिर काग्रेस समाजवाद और रायवाद की दलविहीनता मे राजनीति ही एक प्रधान तत्त्व है जो जे बगरहट्टा का वास्तविक परिचायक है। वे तालुके की राजनीति से प्रस्थान करते है प्रादेशिक मे पहुँचते है और ए आई सी सी और केन्द्रीय कम्युनिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय स्तर की राजनीति के शिखर तक की उड़ान भरते है और साथ ही राय की अन्तरराष्ट्रीयता (कोमिण्टर्न—तृतीय इण्टरनेशनल) की फॉरेन ब्यूरो' के राजनीतिक प्रचारतन्त्र की गतिविधियो का सचालन करते है और वैश्विक राजनीति के क्षितिज पर खड़े दिखाई देते हैं। वहॉ से फिर नीचे उतरते हुए राजस्थान की समाजवादी पार्टी के प्रादेशिक मच पर दहाडते नजर आते है। वहॉ से उनका होम कमिग' (घर-वापसी) अर्थात् बीकानेर लौटना होता है और अन्तरतम से आवाज निकलती है—Bikaneries alone can be the sole arbiters of their destiny

बगरहट्टा बीकानेर मे हो कि बम्बई मे सोते हो कि जागते स्वस्थ हो कि अस्थमा से पीड़ित मच से सम्बोधित करते हो या लेखनी चलाते हो सगोष्ठी के सवाद मे हो कि एक अकेले एकान्त मे—सोचेगे तो राजनीति मे बोलेगे तो राजनीति मे और सलाह देगे तो राजनीति मे। कला साहित्य दर्शन इतिहास आदि अनेक विषयो और बोलियो-भाषाओ और सस्कृतियो पर उनकी पहुँच गहन है। पर सर्वोपरि और व्यक्तित्व के केन्द्र मे राजनीति है। राजनीतिक समस्याओ और राजनीतिक चिन्तन के परिवेश मे वे सभी सामाजिक वैचारिक और आवेगात्मक इकाइयो को समेट लेते हैं।

वैसे तो कोई भी राजनीति से बे-सरोकार नही हो सकता जब तक कि राजनीति केन्द्रीय और केन्द्रक बनी रहेगी। किन्तु ऐसे गिने-चुने लोग ही हैं जिनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व ही राजनीति से ओतप्रोत हो जैसा जे बगरहट्टा का रहा है।

An Open Letter to M N Roy

My dear Mr Roy

I am writing this letter to you in the teeth of the intelligence department which has always been careful to suppress our feelings however uncrushable they may be It has always tried to cut the connection between people at home and out But I hope that this will not be stopped there being nothing to conspire against the bureaucracy of India I have only to write to you some suggestions if they can meet your favourable consideration I learn from the vernacular press of India that you and your party have decided to propagate communism by illegal secret societies I have always maintained that secret parties can do no real good to the country and that communism cannot be preached without open propaganda It is purely an economical movement and we will bring success at our feet without pains By secret methods we can approach only a few educated men worth for nothing in any political or economical activity

The middle class or the educated people can produce a few workers only They cannot be expected to induct the revolutionary spirit in the country as it is very difficult for them to mix up with the proletariat The condition of the Indian labour and peasantry being quite different from that of the European one a peaceful and effective work only with a very large number of workers will raise them

They take no interest in the present noncooperation movement Khaddar and spinning is not new to them they have been using it even before the birth of Mr Gandhi They are too poor to send their children to the government educational institutions They go to the law courts against themselves They never even dream of the council seats Of course they look upon the noncooperators for help to get the forced labour and other high handedness of the government and landlords removed from among them There is a great fear of the police among these people their mentality is slavish Any educated man clad in European dress or a man who can easily mix with the officials can terrorise and make a tool of them A good deal has been done by the noncooperators

to remove this but not to complete success The thing is that these people also influence the villagers by the same methods The Congress worships aristocracy A Poor villager with a worn out garb cannot find an access to Mr Gandhi as easily as a rich merchant will Many of the members of the All India Congress Committee are rich men and live upon the blood of the poor i e on the house rents and the land rents As a matter of fact these people have played a great havoc in the Congress Gandhi himself wants to protect the aristocrats from labour troubles He has ridiculous remedies for serious diseases

The noncooperation movement inaugurated by him is no more a political movement, its remains are now only to be seen in the Sabarmati Ashram or in the charkha Most of the Congress offices are being closed for want of men and money The workers are growing faithles and divisions exist Young men are gradually severing their connection from the Congress A good many of them can be utilised for our work if the Communist Party in England or elsewhere may decide to preach communism openly The majority of Gandhi s followers are with him to win a name for themselves They are men of no principles and are the blind followers of the Mahatma There is a strong competition going on among them Everybody wants to become his fifth son The no changers have more such sheep than the pro changers The pro changers or the council advocates however misled and misguided they may be are men of principles and standing though there are men among them also who have joined them to get an easy path to the councils Some of them are political jugglers like Pandit Malaviva The have now adopted the dead constitutional methods of the dark ages It is foolish to expect anything from these people Their council agitation has restored the lost influence of the bureaucracy and the capitalists which had greatly been damaged by Mr Gandhi s boycott of the councils These councilwalas still expect much from the government and have thus left their boats on its mercy There is only one thing that these people can do and it is to establish a parallel government with the help of their electorate But they are too timid to do so They cannot muster courage to face the consequences of their deeds Let us see what they do I do not think it worth while to write more about these people and will finish it by saying that most of the foremost men in Congress are capitalists they live upon the blood of the poor they hate mixing up with the people upon whose work they live and enjoy all social esteem They are no less bureaucratic in their own offices than the brown bureaucrats They oppose the present government to enjoy offices at present enjoyed

by them They take no notice of a peasant who does not get sufficient to eat even after working for 24 hours in the hot sun and cold nights and under heavy showers of rain It is my sad experience that these people will prove to be no less tyrants to the people than the foreign rulers if providence places the government of the country in their hands At present they are in a position of a tyrant being crushed by a greater one So to say it is a fight between a snake and the mongoose

The Congress has no definite programme to place before the people and thus a golden opportunity has been given to the sectarian people whose bread and butter lies in exciting a community against the other Swami Shradhanand s suddi movement has given a death blow to the peace and unity among the masses The movements is no doubt nearing its own death But the mistrust among the people still exists There is a great mental perplexity owing to no work

Now to come to my suggestions about communist propaganda in India which is the main issue here I have to write the following

(1) Communist offices should be opened at every provincial centre to organise all sorts of labour and peasantry

(2) To distribute leaflets etc to spread communist ideas in namaz

(3) A strong party be formed in the congress and every nerve be exerted to capture the organisation

(4) All efforts should be made to abolish religious influence from the people Hindu Muslim unity cannot be successful unless everybody is well fed and religious bigotry is removed

Newspapers in vernacular i e in Hindi and Urdu will be of a great help If our Indian friends out of India will go on sending their articles to these papers the press will very soon become a self supporting one and will bring down the influence of the English press

If possible night schools should also be started to educate the labourers and their children

I am fully confident that such work will very soon bear fruits and the names of Marx and Lenin will at once become household names in India

Communism only can free India from the foreign bondage

and human slavery The poor will at once embrace it and India, the victim of fate and chance, will smile again

I am,

Your devoted commrade,

(J P Bagerhatta)

Member All India Congress Committee

PS I hear that communist party has been organised at Kanpur But so far I think no such party can live without the help of the Third International

Address Janaki Prasad Bagerhatta
C/o Congress, Beawar Rajputana

(*Socialist* Vol 2 No 38 24 September 1924)

2 Reflections

We print elsewhere an open letter to M N Roy The letter has been sent to us for publication by Mr Janaki Prasad Bagerhatta member All India Congress Committee of Ajmer The writer is responsible for the views he expresses under his signature We publish them here only to allow our readers to know and think about them The writer makes some important remarks and suggestions about organization work here

❑ ❑ ❑

From time to time we have expressed our views through these columns about socialist organisation work here Our readers are quite familiar with them But the Kanpur Case has become an instrument of creating an atmosphere of doubt We therefore take this opportunity to clearly express them again

❑ ❑ ❑

In expressions open and private Mr Dange has unmistakably made it clear that the source of our inspiration is from within and not from without We do not favour any secret and illegal organisations We hold no good can come out of such attempts in the present state of our society There is a vast ignorance about our movement all the country over and a serious attempt at the education of the intelligentsia will have to be made

before we can successfully bring about any organisation in the country People are not accustomed to see things historically interpreted They cannot have therefore any consciousness of the class element in the struggle And no organisation is possible unless there is this consciousness This historical perspective of things and incidents can only be given through a system of open propaganda and association Only through this means can we approach the masses

❑ ❑ ❑

Mr Bagerhatta counts too much upon the help of the Third International But we have to say that we differ from him considerably Let this however not be misunderstood We do not think that there is anything wrong in accepting any outside help for the propagation of socialism here It is immaterial to us whether the help comes from the Third International or the Communist party of Great Britain We owe allegiance to none excepting our own scheme of work and we look for guidance to none but ourselves Any help is therefore legally acceptable even if it were to come from the devil All help could be accepted only on our conditions which are quite clear from the outline of our scheme of action On these terms even if the government themselves were to come forth with an offer we shall not feel the least hesitation to accept it

As regards the Third International we have to point out that there in no special point in looking to it for help We do not authentically and authoritatively know anything about it and therefore there is no reason to be specially particular about it

(*Socialist* Vol 2 No 38 24 September 1924)

Probing at the root.

THE SOCIALIST

434 Thakurdwar
Bombay 2

[Edited by S. A. Dange.

Vol. I, No. 1 | SATURDAY AUGUST 5 1922. | [Weekly] Price 5 pice.

In the Indian Labour World.

Civil Disobedience is resumed in Calcutta by the Congress and Khilafat Volunteers. The Marvaris, remembering the last year's experience, are alarmed, lest a trade depression may follow. They have begun to sell cloth cheaper. Government has also resumed arresting pickets.

In a meeting of the Calcutta Corporation a motion to give franchise to women was adopted by 21 to 4 votes.

The Bombay Tramway Company is forbidding the Tramway Union men from collecting subscriptions from members on the Company's residential premises for the Tramway men.

The Union held a meeting of its members, a thousand in number to take ballot on strike action. Decision is pending.

The Pathans in the suburbs of Bombay are carrying on a systematic campaign of terrorism by nigh attacks on the houses of men whom they know, to be rich. They loot property and kill freely anyone who opposes them. The Police have arrested 157 of them.

The Workmen belonging to the Road Department of the Bombay Municipality are on strike.

On the day of the second anniversary of Lokamanya Tilak, the Bombay Millowners did not close the mills. The workers of the Textile mill on Prabhadevi Road refused to enter the mill and started visiting other mills. After some time, they succeeded in getting out all comrades and closing almost all the mills.

Socialism Abroad.

America :—

The persecution of the Industrial Workers of the world (I. W. W.) by capitalist hirelings, aided by state law is going on. The cases of Tom Mooney and Louis Davis two champions of the workers, have aroused the working classes.

Mexico had succeeded in establishing a socialist ministry in Government and nationalised the great industrial concerns. The

कॉ डाँगे द्वारा सपादित ऐतिहासिक पत्र दि सोशलिस्ट की फोटो कापी

Socialist' Vol 2 No 38 24 September 1924 मे जे बगरहट्टा का An open letter to M N Roy' पहली बार प्रकाशित हुआ।

3 M N Roy's Letter to Bagerhatta of 22 October, 1924

My dear comrade

It was indeed a great pleasure to receive your letter Let me assure you in the very beginning that I fully agree with your analysis of the situation remarks and suggestions It may be necessary to clear out some minor tactical differences that are likely to arise in course of work Since you wrote the letter as an Open Letter and since its contents are highly interesting I will take the liberty of publishing it in our paper over your signature [1] This will also go to prove that we are not partisans of secret organisation if the chance of open and legal activities is available We will expect to receive in future similar contributions from you and others

The 'vernacular' press from which you gather your information about the methods of our work must be badly informed We do not propose to organise our party as a secret society' You are quite right in your remark that a great political movement like ours cannot influence and conduct by means of secret societies If we have been forced to carry on our work illegally that is because we are denied the freedom of press speech and platform Besides we publish our literature quite openly and would be only glad to distribute them equally openly if the possibility of doing so exists This can be done as soon as a sufficiently large number of people to undertake this work is available because although we consider our activities fully legitimate and democratic the powers that be do not have the same view Unfortunately a considerable section of our nationalists at least on this question, agree with the government This being the case we will not be able to establish our right of propaganda of a perfectly legitimate programme without a fierce struggle We must conquer the right In other words it is

1 It was printed in *Vanguard* Vol 5 No 5 15 November 1924 G A.

necessary to legalise our propaganda You might be aware that in the course of the Kanpur communist trial both the government prosecutor and the judge admitted that a communist party or communism as such does not constitute a criminal offence There we have a starting point We must hoist them on their own petard Had the defence lawyers approached the issue from a broad angle of vision and had the accused themselves had more courage of *conviction the very Kampur Case could be turned into a historic* test case But that was not done The defence was a spineless judicial one while the issue was a broad political and constitutional There is still time to do what was left undone We must take up the challenge and propagate not simple communism but our right to be free and organise a mass revolutionary party on this foundation

Here I must point out one little error you seem to have fallen into You write, if the Communist Party of England or elsewhere may decide to preach , that it will be necessary to preach communism in India which should be done by Indians convinced of this necessity and not by any outside agency The latter may be helpful in many ways and since communist parties are international organisations there cannot be any question of foreign interference in accepting such help, but the initiative and foundation must be native It is the development of social forces that lead to communism The analysis in connection with which you made this remark is thoroughly correct As soon as a new channel for their political energy is marked out a considerable section of the followers of Gandhi on the one hand and of the Swaraj Party on the other will leave the present leadership

Our agreement in general leads us to determine what will be the minimum task I venture to suggest that propagation of communism is not an immediate necessity What is to be done is to give the demobilised and dismembered nationalist movement a revolutionary leadership which can be given alone by the communists Why? The nationalist movement is fundamentally a revolutionary struggle not only against foreign domination but ultimately against the backward economic conditions and reactionary social institutions which retard the progress of the Indian people and which have carefully been perpetuated by imperialism The forces that will free the Indian people from these economic and social impediments, therefore must begin by attacking the *foreign domination This fundamental significance of* the national struggle is not understood by the majority of our

nationalists Therefore a gigantic social upheaval is crammed into the suffocating limits of a movement for administrative reforms and at the most political makeshift Therein lies the weakness of our movement and so long as this cause of weakness is not removed British domination will remain solid and national regeneration consequently will be sought through such reactionary and romantic path as charkha Now who can cure this weakness of our nationalist movement? Presumably those who possess the ability to appreciate the social significance of national struggle Perhaps our nationalists will be shocked to hear that they are involuntarily engaged in a social revolution They have failed to push this revolution forward because they are involuntarily involved in it They must make room for those who will go into the matter voluntarily and consciously This will be the communists

It is necessary to look into the situation a little deeper to know why such an apparently incongruous confusion should be visualised Why and how should a nationalist movement which is essentially a bourgeois movement be led by the communists? Here comes the peculiarity of the Indian situation Our nationalists talk ad nauseam of the peculiarity of India but they only start from the wrong end The peculiarity of India does not lie in the imaginary spiritual character of its people but in their reactionary tendencies of its bourgeoisie Under normal conditions the bourgeoisie lead a national movement They did it because their economic interests demand the disruption of feudalism and the economic and political institutions that go with that social stage It is well known that the pivot of the British domination of India has been the landed aristocracy So the logical course to deliver an attack against foreign domination would be to pull down this pivot But clearly enough Indian nationalists are worshippers of landlordism In other words bourgeoisie have turned traitor to their historical heritage Why? Are they naturally depraved or is it an accident? This queer situation has been created by the retarded and abnormal way in which economic forces have developed in India under the British domination Both upper and lower strata of the Indian middle class are closely linked up with the land Although the present land system contributes indirectly to the poverty of the Indian people the middle class which is the social foundation of nationalism does not propose any radical change in the land propertyship In all the nationalist struggles in history the bourgeoisie rallied the peasantry on their side by (means) of a radical agrarian programme The failure of the Indian bourgeoisie to do the same leaves the 80 percent of the people susceptible to government influence The ability of the British to pose as the

protector of the peasantry has been the second pivot of their domination in India The nationalists ostensibly shun all questions of agrarian revolution, on the pretext of keeping in their camp both the landowning class and the peasantry This mistaken policy enables imperialism to stand totally on those two social elements

We cannot convince the national bourgeoisie of the blunder of their policy because the policy is dictated by material interest The present land system provides a source of unearned income however miserable to a large section of the lower middle class in all provinces where zamindari system prevails On the other hand not a few of the professional liberal and even capitalists have money invested in land The combination of these forces defeated the Bengal Tenancy Amendment Act while a similar legislation was passed under official auspices in Oudh and the other is going to be passed in Malabar The former killed the kisan sabha and eka movement but the latter will appease the agrarian troubles in Malabar The masses of peasantry will regain their faith in the sarkar

This being the juxtaposition of the social forces that are destined to enter into the composition to the nationalist rank the movement for national liberation will never succeed if left under the present leadership which is historically incapable of having the required revolutionary outlook Since the abnormal development of the last 200 years has deprived the bourgeoisie of their social revolutionary role they cannot lead the nationalist movement which makes for nothing less than a social revolution Consequently the leadership must evolve out of the ranks of the workers and peasants who under normal conditions would have followed the bourgeoisie in the national revolution A working-class leadership must be socialist for which we use the term communist to distinguish ourselves from those who have betrayed the working class in the name of socialism

The communists that is the conscious vanguard of the working class will be called upon to assume the leadership of this struggle against imperialism in the next stage of our movement but this does not alter the situation that the immediate object of the movement still remains the same namely national freedom Bourgeois revolution has its place in history We cannot jump over a long period of history All that we can do is to shorten it Bourgeois revolution must take place in India to overthrow foreign domination to wipe out the remnants of feudalism establish a democratic form of government to free the forces of production ensure the realisation of the social economic and political

advances which was denied to the Indian people by the foreign rule Since this great revolution cannot be organised and led by the bourgeoisie the vanguard of the working class must step forward The immediate task of the communists in India is not to preach communism but to organise the national revolution the role of the communist party of India is to be the heart and soul of the revolutionary nationalist party

The third point of your suggestion corresponds with this general view of ours A strong party to be formed in the Congress and all nerves to be exerted to capture the organisation ' Yes This is precisely the task before us Under separate cover a package of our literature is sent to you Therein you will find our propositions as to how this revolutionary wing should be organised inside the Congress with the objective of capturing it ultimately The work must naturally be started with the publication of the programme when the new party will be organised Since the Gaya congress we have kept before the country such a programme The Belgaum congress will find the nationalist forces much more decomposed so a small group can dominate the situation if they appear with a concrete programme to revive the movement I hope you will be able to organise this group This will be the proper procedure to liberate the rank and file from the Gandhi Swaraj leadership as you propose

We are in complete agreement with your proposition about the organisation of propaganda centres etc The development of the vernacular press is also very important We will certainly be prepared to contribute and are even prepared to find some financial aid when necessary We must start with a few selected papers Can you make some concrete suggestions? Meanwhile I can send some articles to you

Of course everything will depend upon your ability to bring into existence an organised political party The fight for our programme in Belgaum may mark the birth of this party The group can immediately after the Congress call a conference of all the elements holding the same view and prepared to subscribe to our programme which will not be a communist but a revolutionary national democratic programme This conference will declare the inauguration of the party which can be called the people s party or the republic party There is absolutely no conspiracy in this plan We are out for a comprehensive political fight There is no room for futile secret society Nor do we have any patience for the romantic ideas and schemes they indulge in The press of a political party

will of course be open unless the government deprives us of the right to free speech In that case we must have an illegal press and means of propaganda while fighting to establish the right of free speech

As soon as means will be found to print our literature inside the country we will be spared the great inconvenience of bringing them in from outside Meanwhile, however the current practice has to be continued Therefore I will request you to make some provision to receive our literature from outside No Propaganda can be made without literature If you will send us from time to time some addresses we can keep you supplied with all the necessary literature

I think I have covered all the ground at least for the present Hoping that you will agree with the contents of this letter and be prepared to work with us on these lines

I remain

Yours fraternally

M N Roy

NB It is not necessary to address my letters to Moscow They can be addressed to the Zurich office of the *Vanguard* or to Librairie du Travail 96 Quai Jemanapes Paris 10

4 M N Roy's Letter to Bagerhatta of 6 November 1924

Dear comrade

Possibly you have already received my letter written last week I am expecting a reply at your earliest opportunity After I had mailed my letter, a copy of the Socialist with your Open Letter' came to my notice Enclosed herewith is a copy of the communication I am sending to the *Socialist* by this mail I am sending you a copy because you may give it to the vernacular press The matter is of public importance and should be given the widest publicity

Yours fraternally

M N Roy

Should The Communist Party Be A Secret Society?

openly that failure has had ample reason Nor has our desire to avail ourselves of all means for carrying on the propaganda and the preliminary work been mistaken This does not however remove the necessity of legalising communist propaganda in India and to make the communist party an important political factor We never lost sight of this necessity and prepared ourselves for the first available opportunity to take up the fight because the first stage of the communist party is bound to be marked by a bitter struggle for the right to a legal existence The moment has arrived to begin this struggle

When we talk of a communist party what we have in mind is a political party reflecting essentially the interests of the working class in which category the masses of the poor peasantry are included Therefore our party will be a party representing the overwhelming majority of the nation There is no constitutional pretext on which such a party can be denied the right to a legal existence But precisely for this reason that we propose not to organise study circles or a small sect preaching fanatically a novel socioeconomic philosophy but to mobilise the masses of the people under the banner of our party for a gigantic political struggle we have been subjected to determined persecution from the very beginning In the Kanpur Case the judge as well as the prosecution counsel declared that communism or a communist party *as such did not constitute a criminal offence* The infant communist party of India incurred the towering wrath of the British goliath because we adapted our programme to the timely needs of India Had we been inclined to economist and wedded to the abstract theories of social justice we would not only be left alone but even possibly receive furtive encouragement from the powers that be The government do not object to communism as such What does it mean? It means that the government would not consider us dangerous if we lived in the height of theoretical isolation, but applied communism is not tolerable It is no longer dead theory It invigorates the present political struggle by stimulating the consciousness and energy of the revolutionary social forces The very fact that the mightiest government is so zealous to root us out when we are apparently such a negligible quantity proves the historic necessity of the task we have initiated proves that a working class party under communist leadership is destined to play a great role in the actual political life of India

We must struggle for legal existence The findings of the Kanpur court provide the startingpoint A communist party is not

revolutionary lead to the nationalist struggle if they fight shy of the burning question of the nationalist movement? The economics of communism demand that the communist party of India should be in the foremost ranks in the struggle for national liberation Bourgeois nationalism can be satisfied with a compromise with imperialism but no appreciable improvement in the economic condition of the working masses and of the considerable section of the lower middle class can be realised, without a complete break with the political and economic domination of a foreign power Since the communist party is the political spokesman of this overwhelming majority of the nation it will never play its historic role unless it is prepared to challenge the programme of bourgeois nationalism, and demand that the nationalist struggle should be conducted according to the interests of the majority of the nation All these paramount issues were involved in the Kanpur Case They were not met but avoided

The prerequisite of the legalisation of the communist party will be to settle these issues Let me hope that the next opportunity will not be lost I affirm once more that the communist party stands upon too broad a political platform to fit into the narrow limits of secret societies But it will be suicidal to buy legality at the sacrifice of the cardinal points of the communist programme as applied to the present situation in India

M N Roy

(Meerut Conspiracy Case Exhibit P 1138)

सलग्नक-3

Appeal to The Nationalists

Fellow Countrymen

This year the National Congress meets in an atmosphere of depression and decomposition There remains nothing but a memory of the gigantic movement that swept the country in the years immediately following the imperialist war The process of disintegration has touched the bottom In fact the period has lasted much longer than was expected The scene at Coconada was sad indeed but Belgaum promises a worse spectacle

The nationalist movement is confronted with immense and intricate problems which are not approached from the right angle of vision In India, as in every other subject country nationalism is a revolutionary force it must therefore pursue a revolutionary course Otherwise it is bound to degenerate either into political reformism on the one hand or social reaction on the other This has unfortunately been the case in India Except during the short period of militant noncooperation the Indian nationalist movement has never proceeded along a revolutionary path Since direct mass action, envisaged in the original programme of noncooperation was repudiated at Bardoli the nationalist movement as represented and guided by the Congress has been switched off the revolutionary road The consequence has been a great confusion in the nationalist ranks Demoralisation followed confusion A Process of decomposition set in The mighty Congress organisation was torn by internal conflicts and killed by the want of exhilarating action A continued state of depression and inaction drove one section of the nationalists back towards the old and dicredited constitutionalism, the more restless elements reverted to futile terrorism which they had temporarily deserted in quest of a broader field of political activity deprived of political significance the orthodox noncooperators sank into social reaction while the masses began to lose enthusiasm for the nationalist movement

The nation is as far away from swaraj as it stood five years ago only the hopes and illusions that inspired it then are gone

APPEAL TO THE NATIONALISTS

Facsimile of the first page of Appeal as printed in the supplement to Vanguard 15 December 1924

today The situation was no better a year ago but the Coconada Congress signally failed to repair it The Belgaum Congress meets in the same gloomy atmosphere but under no better leadership, with no clearer vision actuated by no revolutionary zeal It obviously has but one purpose to draw a curtain over the revolutionary events of the postwar years to bring the nationalist movement back on the safe and sane road of constitutional agitation Of course there will be no lack of bombastic speeches meant only to cover the retreat

A recapitulation of the trend of the principal events of the past twelve months will show that the mythical goddess of unity whom the Belgaum Congress will enshrine, signifies only a great political reaction

1 The Congress split ended in a complete victory of the pro change elements The Swaraj Party became the predominating political factor All projects of direct action were disowned by the responsible spokesmen of all political tendencies

2 The first act of the swarajists upon entering the councils was to seek alliance with the independent nationalists that is the left wing of the liberals This alliance could be had only at the sacrifice of the cardinal points of the swarajist programme

3 The famous national demands were put away

4 Even the immediate grant of dominion status was not made the sine qua non of the nationalist programme

5 There is not one political party in the country which will not be satisfied with such measures of reform as provincial autonomy Indianisation of the services and partial responsibility of the central government Even the swarajist leaders have clearly committed themselves to this beggarly programme of liberalism

6 The swarajist tactics of parliamentary obstruction have reached the end of their rope The sponsors of these tactics who spoke so heroically when engaged in the fight against the no-changers have failed to carry their policy of resistance outside the council-chambers In the parliamentary bout the government held its autocratic position throwing challenge after challenge insolently to the nationalists At last the swarajists were forced to make their choice between revolutionary direct action and reversion to impotent constitutionalism They have decided in favour of latter as we

predicted at their birth and are seeking the alliance of the liberal cooperators and loyal ministerialists

7 The no change wing of the Congress on the other hand has lost all political significance Their only stock in trade was civil disobedience which however they could not put into practice because of the reactionary cult of nonviolence Their political impotency can no longer be hidden behind the cry of pure Gandhism when the prophet himself throws overboard his programme of triple boycott to welcome Mrs Besant and her followers back into the Congress fold *The fate of the* Belgaum Congress will be predetermined in the caucus conference of Bombay which under the guidance of such a devoted imperialist as Mrs Besant will eliminate the line of demarcation between cooperation and noncooperation

8 Hindu Moslem unity which was made a cornerstone of the noncooperation movement and to the realisation of which unity India s fitness for swaraj was mistakenly attributed by the nationalist leaders themselves has been revealed to have been a superficial makeshift The disastrous effects of hinging *a great political movement of an essentially revolutionary* character on religious fanaticism and extraterritorial patriotism are manifest today in the communal riots which spread all over the country and assume ever uglier forms, despite the frantic efforts of the leaders to check them The nationalist leaders of both the communities have miserably failed to grasp the problem much less to solve it

9 The Decomposed state of the movement coupled with the thinly veiled anxiety of the leaders for a compromise made the government so sure of its position that it decided to deal *the last crusing blow It was aimed at those nationalists who* were suspected of the least revolutionary tendency The nationalist movement as a whole was staggered by this unexpected blow and proved unwilling and incapable of retaliating On the contrary the governmental terrorism in Bengal stampeded the swarajists into an unholy alliance with the moderates Some of the best elements of the nationalist ranks are locked up in jail by a despostic ukase without provoking any determined resistance on the part of the Congress This speaks for the character of the leadership and the lamentable impotency into which the nationalist movement has sunk in consequence of its nonrevolutionary orientation and reformist policy

This brief review of the situation shows which way the wind is blowing The progress has been positively retrograde The preparations of the last year have brought the Congress on the eve of resuming the old programme of evolutionary nationalism from *which under the pressure of popular revolt* it broke away in 1920 At this juncture it is the duty of the revolutionary nationalists to mark out a new way which will lead to the goal of freedom

The present deplorable state of the nationalist movement is due to a wrong conception of nationalism Our leaders are no less afraid of and hostile to a revolutionary movement than the British government although they stand at the head of a movement essentially revolutionary Taking their cue from the government not a few of the nationalist leaders energetically denounce what they call revolutionary crime It is a current topic in the nationalist press that the government should concede the constitutional demands of the nationalists if the country is to be saved from a violent revolution This all goes to show that nationalism is considered to be antirevolutionary and this narrow conception of nationalism is the root-cause of the weakness of the nationalist movement

Revolution is not an unconstitutional affair In fact practically all the modern constitutional states owe their origin to some sort of a revolution India has no constitutional government When one *talks of constitution in India* one has in view the British constitution This latter has for its foundation the Magna Charta which was not secured without the application of force that is which was the product of a revolution Then every successive *period* in the evolution of the British constitution is equally marked by events of a revolutionary nature The same process can be read in the history of any other modern nation

What is a revolution? A very wrong notion about it obtains in Indian nationalist circles Revolution is generally associated with bombs revolvers *and secret societies Hence arises the* expression revolutionary crime so current in Indian political terminology Revolution, however is a much greater affair An important historical event which marks the close of a given historical period and opens up a new one is called a revolution Since the social factors economic classes and political institutions that used to be benefited by the state of affairs obtaining in the closing period would not permit a change which spells the end of their domination often their total annihilation without a fierce resistance, political violence and social convulsion

are usually the features of the historical phenomenon which is called 'revolution' The forces that go into the making of the new epoch are originally conceived and go on gathering strength within the framework of the old which eventually must burst if the germs of the new contained therein are to fully fructify This process is to be noticed throughout all the physical existence Revolution therefore is in the very nature of things it is quite constitutional

Once we have this correct conception of revolution it becomes clear that nationalism, in a given period of history is revolutionary force whose manifestations are not criminal This force operates through a series of historical events, which will separate the India of tomorrow from the India of yesterday This process cannot take place within the framework of a superimposed constitution which by its very nature is meant to prevent this epoch making break Indian nationalism cannot therefore be constitutional Its object is to establish a constitutional government of the people, for the people, by the people of India

The goal of nationalism can never be realised in the way indicated by those who in unison with the British government are positively hostile to revolution The struggle for freedom of a subject people can never be separated from revolution Freedom will never come as a gift from those who deprived us of it The people of India must conquer freedom and the idea of conquest cannot be separated from the necessity of breaking down the resistance of the opponent The nationalists, who prescribe safe and sane constitutional methods are quite conscious of the resistance that has to be met They are even doubtful if that resistance can ever be broken by the means advocated by them Nevertheless they recoil from visualising the operation of those forces that alone can break down this resistance Presumably they are not particularly in love with imperialism but they are not prepared to countenance the social convulsion which will inevitably occur if those forces are let loose This nonrevolutionary nationalism leads to compromise because it lacks the power to go further

No less futile is sporadic terrorism carried on by secret societies Those who resort to the futility of this extremism possess an equally wrong conception of revolution Violence is not per se an essential attribute of revolution Under the present state of society political and social revolutions can hardly be expected to be bloodless and nonviolent but everything bloody and violent is

not revolutionary A particular *social system or political institution* can never be overthrown by assassinating individuals upholding them It is no more possible to win national independence by killing a number of officials than by a series of reforms acts passed by the British parliament One method is as impotent as the other, because none of them strikes at the root of the evil Both are political blunders, but it is preposterous to call the *terrorists revolutionary criminals'* As the *constitutionalists'* are positively nonrevolutionary and will become counterrevolutionaries as soon as the fateful movement comes

These considerations are necessary to find a way out of the present depression to insure that the unity' to be realised at Belgaum causes a reaction among the revolutionary nationalists The forces that make for militant nationalism having for its object *not a mere administrative readjustment but the introduction of a* new historical epoch through a great socio political convulsion, cannot find adequate expression in the programme of reformism on which narrow basis the reunited' Congress will take its stand Nor can the political potentiality of those forces be asserted through secret terrorist organisation They must find their expression through an organised political party, the appearance of which will break the deadlock and begin a new phase in the nationalist struggle

What are these forces? They are the rebellious masses which in the aftermath of the war asserted themselves so overwhelmingly upon the political situation that the Congress was forced to break away from its traditional nonrevolutionary moorings When we recollect the Amritsar Congress it becomes evident that the reluctant adoption of the programme of perfunctory noncooperation at Calcutta by no means signified a radical change in the political orientation of the Congress leadership In his letter to the viceroy in June 1920 Gandhi wrote that he still believed in the superiority of the British constitution *and therefore* advised disobedience obviously until the justice of that constitution should cease to be denied to India How far remote from the revolutionary social forces that made the noncooperation campaign possible, was the leadership *that was actuated by such sentiments! The* collapse of the campaign was predestined and the retrograde process subsequent to the collapse is but logical But the period between Amritsar and Belgaum cannot be eliminated It has had its role and the experience gained during that period will aid the development of the movement of the future The lesson of that

conditions namely a political party commanding the confidence of the masses and a revolutionary outlook on the part of the nationalists Neither of these conditions unfortunately exists at this moment These conditions must be created before the nationalist movement can be carried further ahead

That party alone can command the lasting confidence of the masses which not in word but in deed *reflects the grievances* and demands of the masses Here again realism should be the guiding principle The everyday material needs, immediate economic demands and general earthly wellbeing should be the determining factors Metaphysical prejudices should be set aside Then the nationalists, who will gather under the banner of such a party must be inspired with a revolutionary[2] outlook because mass *energy once aroused and applied to a political struggle will not* subside as soon as the foreign government is overthrown It is bound to go to the extent of effecting a radical transformation of the present socio economic system The choice has to be made between this revolutionary readjustment of social relations and continued imperialist domination brutally naked or eventually camouflaged[3] as partnership in the empire [3]

The programme of a *revolutionary*[4] *nationalist party*, which will stand on the solid foundation of mass energy consciously asserting itself for the realisation of a concerete goal must have for its cardinal points the following

1 National independence [5]complete break from the empire[5] democratic republic based on universal suffrage
2 abolition of feudalism and landlordism
3 nationalisation of land none but the cultivator will have the right of landholding
4 modernisation of agriculture by state aid,
5 nationalisation of mines and public utilities
6 development of modern industries
7 protection *for the workers minimum wage eight hour day* abolition of child labour insurance and other advanced social legislation
8 free and compulsory primary education
9 freedom of religion and worship,
10 right of minorites

A movement for the realisation of these concrete objects will be a really national movement The time is gone when the people could be inspired by a vague promise of swaraj The depression of the nationalist movement has been caused by the temporary cooling of mass energy Had the latter been in the same high tide as in 1920 the Congress would have been pushed in a revolutionary path against its will The only way of cutting its projected[6] retreat will be to rekindle the fire which by no means is dead A vigorous agitation on the basis of the above programme which by the way is perfectly constitutional will infuse new life in the movement

Revolutionary nationalists Your days have come Don't let the faith in the sincerity And wisdom of the leaders misled you any longer There is no reason to question the sincerity of the leaders, but the wisdom of the last years politics is certainly open to doubt What sort of wisdom is that which counsels a retreat after having sabotaged the movement? What happened to those gigantic forces that brought the mightiest government on its knees ? They were dissipated misled abused and finally betrayed The Congress leadership is to be held responsible for this calamity This leadership has thoroughly discredited itself Its nonrevolutionary proclivities make it constitutionally unfit for the great role thrust upon it The movement cries for a new leadership with a bolder spirit and broader vision You revolutionary nationalists are called upon by history to give this leadership Arise awake and stop not till the goal is reached!

Brave patriots! Don t waste your energy in futile terrorism Your noble idealism and undaunted spirit demand a much wider field of action[7] The organism of a society subjugated and exploited for centuries, is surcharged with inflammable materials which once ignited by a revolutionary leadership will shatter the chain of slavery[7] The dynamic outburst of social forces is much more powerful than bombs The revolutionary action of the toiling masses will free India Let us organise and lead this action

The struggle of the Indian people for freedom is an integral part of the struggle of the international proletariat against capitalist domination, in that its success will break down one of the strongholds of world capitalism The revolutionary nationalists of India should therefore not only join hands with the Indian workers and peasants but should establish close relations with the

advanced proletariat of the world In this age of monopolist imperialism the subject peoples in their struggle for freedom must have the cooperation of the international organisation of the revolutionary proletariat The communists will fight side by side with the revolutionary nationalists and will be found always in the front ranks

* The Communist Party of India
  (Supplement to Vanguard 15 December 1924)

* *Replaced by—Fraternally yours* *M N Roy*

---

1 Nationalists of India! In the Indian reprint See introduction to this section

2 broader'

3 3 deleted

4 deleted

5-5 deleted

6 approach of'

7 7 Sentence deleted

सलग्नक-4

Mr Bagerhatta s letter to the (then) Editor (Mr K N Joglekar) Socialist dated December 27 1924

I write this to greet you as you run your last issue of your second year I have been a constant reader of the Socialist for the last year It is certainly the only friend of the Indian proletariat in the whole of India It is always fearless in its chastened criticism and sociallist interpretation on all the burning problems of the day There being only a handfull of men in our country who have a true knowledge of socialism Your weakly will prove to be rare and valuable education source for the people I with it could reach every home in India and popularise Marxian principles and philsophy in this country where slavery and poverty exist in their worst form